वृन्दावन परिक्रमा

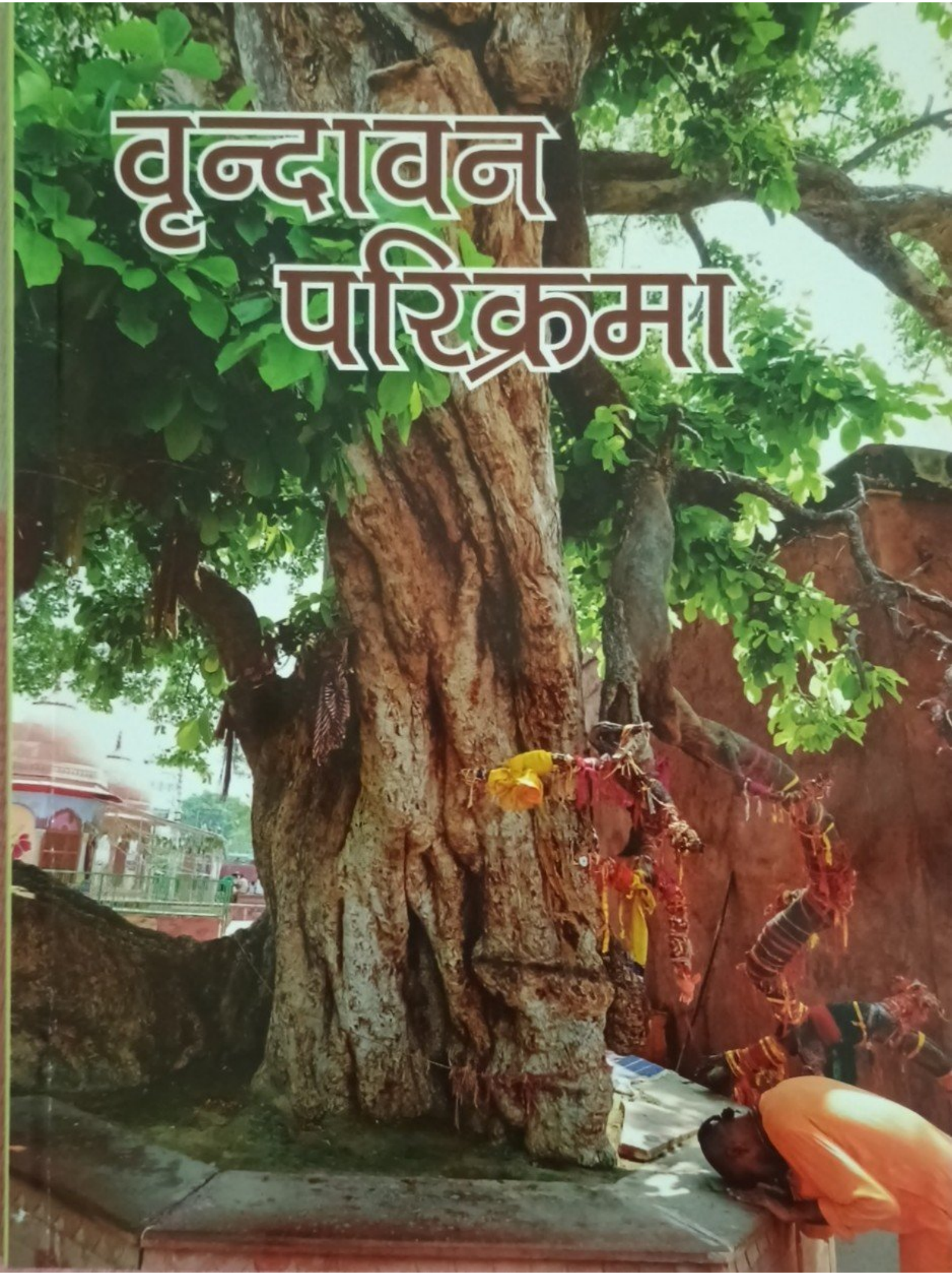

वृन्दावन परिक्रमा

अन्तर्राष्ट्रीय श्रीकृष्णभावनामृत संघ
संस्थापकाचार्य- कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए.सी. भक्तिवेदान्त
स्वामी प्रभुपाद

अन्तर्राष्ट्रीय श्रीकृष्णभावनामृत संघ

संस्थापकाचार्य : कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद

श्रीकृष्ण-बलराम मंदिर, भक्तिवेदान्त स्वामी मार्ग
रमणरेती, वृन्दावन 281121 उ.प्र. (भारत)

पुस्तक की विषयवस्तु में रुचि लेने वाले पाठक निम्नलिखित पतों पर सम्पर्क कर सकते हैं-

Website: iskconvrindavan.com; E-mail: ils@pamho.net

विशेष आभार

'वृन्दावन परिक्रमा' पुस्तक के प्रकाशन हेतु उदार दानराशि हेतु तुलसीपूजा देवी दासी एवं अशोक कुमार दास को,

ठाकुर शारंग दास, उद्धवबन्धु दास एवं आदिकेशव दास को फोटोग्राफी के लिए, मुखपृष्ठ चित्र, पृष्ठ 5 एवं 13 के चित्रों के लिए भक्तिवेदान्त आर्काइव्स् को, पंचगौड़ दास, शारंग ठाकुर दास, धर्मात्मा दास (GKG), ध्रुव दास एवं राधाप्रिया देवी दासी को सहायता के लिए, तथा परिशिष्ट मानचित्रों के लिए जड़भरत दास को जिनकी अनुमति से इन मानचित्रों को उनकी पुस्तक 'वृन्दावन एण्ड ब्रजमण्डल' से लिया गया। अनुवादक- वंशी विहारी दास

© 2017 The Bhaktivedanta Book Trust International, Inc.

सर्वाधिकार सुरक्षित। अनुमति द्वारा प्रयुक्त

www.krsna.com

प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में प्रकाशित नहीं किया जा सकता है। इस नियम की अवहेलना किये जाने पर उचित कानूनी कार्यवाही की जायेगी।

मुद्रक: **सम्राट आफसेट प्रा. लि.**

बी-88, ओखला इंडस्ट्रीयल क्षेत्र, फेस-II, नई दिल्ली 20

फोन : 46483000-99 **www.samratoffset.com**

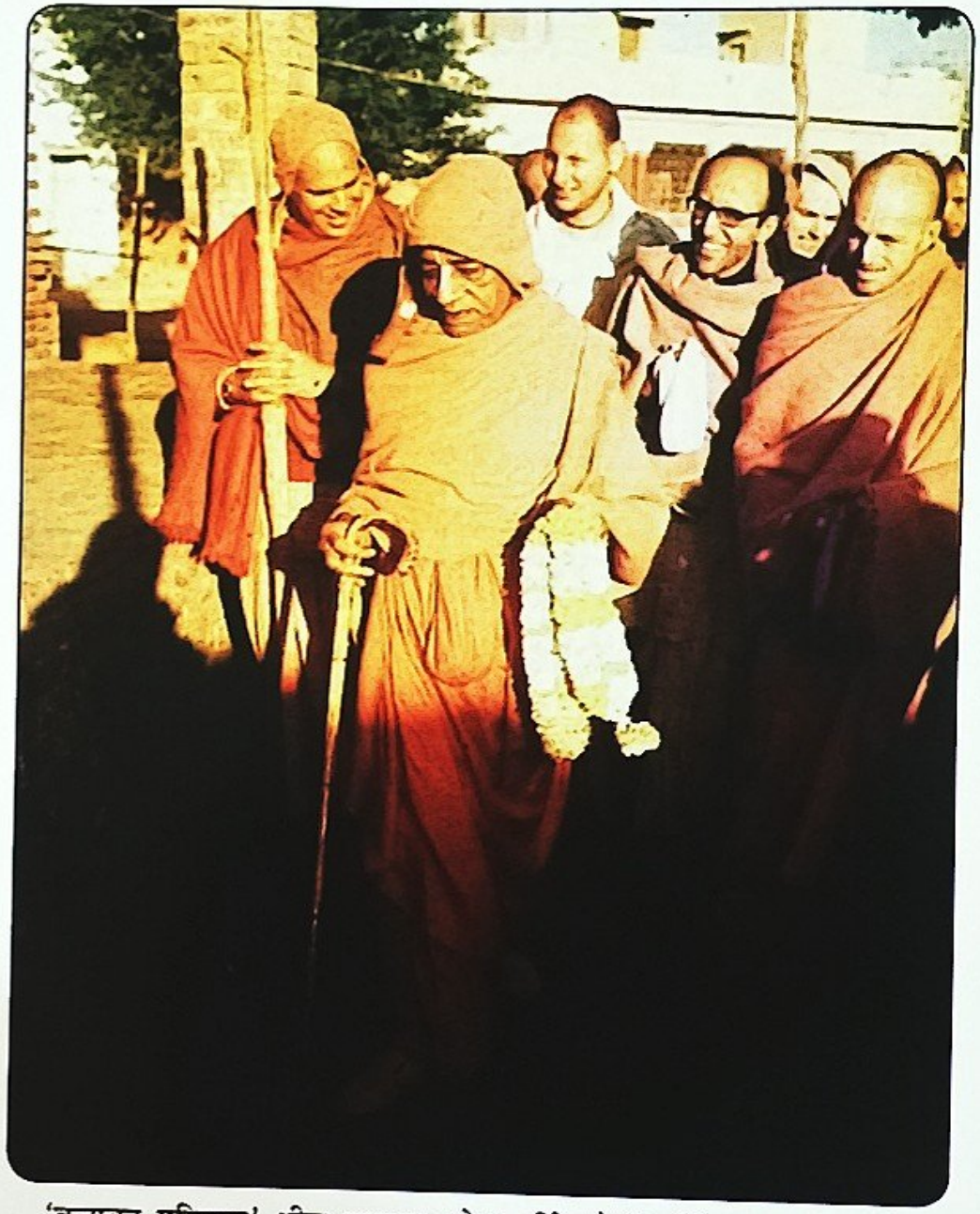

'वृन्दावन परिक्रमा' श्रील प्रभुपाद को समर्पित है जिन्होंने समग्र विश्व के सम्मुख पवित्र वृन्दावन धाम को उजागर किया।

विषयवस्तु

प्रस्तावना ११
भूमिका १४
वृन्दावन के यमुना घाट ३०

वृन्दावन के पवित्र स्थल

१. कृष्ण-बलराम मंदिर २१
२. रमणरेती २८
३. कृष्ण-बलराम वृक्ष २८
४. भक्तिवेदान्त हॉसपीस २९
५. वराह घाट ३१
६. वराह मंदिर ३२
७. गौतम ऋषि आश्रम ३२
८. मदन टेर घाट ३२
९. गो घाट ३३
१०. भक्तिवेदान्त स्वामी गोशाला ३४
११. कालिय घाट ३४
१२. प्रबोधानन्द सरस्वती समाधि ३५
१३. गोपाल घाट ३६
१४. द्वादशादित्य तीर्थ ३६
१५. प्रस्कन्द घाट ३७
१६. सुराज घाट ३७
१७. मदनमोहन मंदिर ३७
१८. सनातन गोस्वामी भजन कुटीर ३८
१९. सनातन गोस्वामी समाधि ३८
२०. नव मदनमोहन मंदिर ३९
२१. अद्वैत वट ३९
२२. अष्टसखी मंदिर ३९

२३. बाँके बिहारी मंदिर ४०
२४. युगल घाट ४०
२५. राधा वल्लभ मंदिर ४१
२६. नृसिंह मंदिर ४१
२७. भट्टजी मंदिर ४२
२८. विहार घाट ४२
२९. भीम घाट ४२
३०. अन्ध घाट ४३
३१. इमली ताल घाट ४३
३२. शृंगार घाट ४५
३३. झरु मण्डल ४५
३४. गोविन्द घाट ४६
३५. राधा-दामोदर मंदिर ४८
३६. लोटन कुंज ४८
३७. सेवा कुंज ४९
३८. पौर्णमासी मंदिर ४९
३९. सीतानाथ मंदिर ४९
४०. राधा-श्यामसुन्दर मंदिर ४९
४१. श्यामानन्द समाधि और तिलक स्थान ५०
४२. शालग्राम मंदिर ५०
४३. मुरारि गुप्त के गौर-निताइ विग्रह ५०
४४. बनखण्डेश्वर महादेव मंदिर ५०
४५. किशोर वन ५१
४६. मीराबाई मंदिर ५१
४७. चीर घाट या छयन घाट ५१
४८. शाहजी मंदिर ५२
४९. षड्भुज महाप्रभु मंदिर ५२
५०. भ्रमर घाट ५३
५१. राधा-गोकुलानन्द मंदिर ५३

५२. राधारमण मंदिर ५४
५३. राधारमण प्राकट्य स्थली ५४
५४. गोपालभट्ट समाधि ५५
५५. निधि वन ५५
५६. श्रीजी मंदिर ५६
५७. सोना गौरांग मंदिर ५६
५८. गदाधर दन्त समाधि ५७
५९. वंशी गोपाल मंदिर ५७
६०. युगल किशोर मंदिर ५८
६१. केशी घाट ५८
६२. राधा-गोपीनाथ मंदिर ६०
६३. अमिय निमाइ गौर मंदिर ६०
६४. बिल्वमंगल ठाकुर समाधि ६१
६५. गोविन्द कुण्ड ६१
६६. राधा-गोविन्द मंदिर ६२
६७. नव राधा-गोविन्द मंदिर ६२
६८. रंगनाथजी मंदिर ६३
६९. चौंसठ समाधि उद्यान ६३
७०. लाल बाबू मंदिर ६४
७१. राधा-गोपाल मंदिर ६४
७२. गोपाल गुरु गोस्वामी का राधाकान्त मंदिर ६४
७३. श्रीनिवास आचार्य समाधि ६५
७४. राधा-श्यामराय मंदिर ६५
७५. युगल किशोर मंदिर - काँच मंदिर ६५
७६. ज्ञान गुदड़ी ६६
७७. राधा-व्रजमोहन मंदिर ६६
७८. टेकरी रानी मंदिर ६६
७९. टट्टीया स्थान ६७
८०. धीर समीर घाट ६७

८१. सुदामा कुटीर ६७
८२. तुलसी राम मंदिर ६७
८३. राधा बाग घाट ६८
८४. कात्यायनी देवी मंदिर ६८
८५. रंगजी उद्यान ६८
८६. पानी घाट ६८
८७. आदि बद्री घाट ६९
८८. राज घाट ६९
८९. जगन्नाथ घाट ६९
९०. रामबाग घाट ७०
९१. वंशी वट ७०
९२. गोपीश्वर महादेव ७१
९३. ब्रह्मकुण्ड ७१
९४. चैतन्य विश्राम स्थली ७१
९५. गौरा दाऊजी मंदिर ७२
९६. अटल वन ७२
९७. जयपुर मंदिर ७२
९८. दावानल कुण्ड ७२
९९. विश्राम कुण्ड ७३
१००. राधेश्याम कुआँ ७३
१०१. वृन्दावन शोध संस्थान ७३
१०२. भागवत निवास ७४
१०३. मोंगीर राजा मंदिर ७४
१०४. केयर फॉर काओस् ७४
१०५. तारस मंदिर ७५
१०६. भातरान बिहारी मंदिर ७५
१०७. अक्रूर घाट ७५
१०८. इस्कॉन जगन्नाथ मंदिर ७६
वृन्दावन परिक्रमा के परिशिष्ट मानचित्र ७७

वृन्दावन में श्री श्रीराधा-गोविन्द

प्रस्तावना

दिव्यद्वृन्दारण्य कल्पद्रुमाधः
श्रीमद्रत्नागार सिंहासनस्थौ।
श्रीमद्राधा श्रीलगोविन्ददेवौ
प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि।।

मैं श्री श्रीराधा-गोविन्ददेव का स्मरण करता हूँ, जो परम रमणीय श्रीवृंदावन धाम में स्थित एक कल्पवृक्ष के नीचे दिव्य रत्नजड़ित भवन में मणियों के सिंहासन पर विराजमान हैं तथा अपनी प्रिय सखियों द्वारा सेवित हैं।

यह श्लोक श्री श्रीराधा-कृष्ण एवं वृन्दावन का वर्णन करता है। वृन्दावन उस वन का नाम है जहाँ श्रीमती वृन्दादेवी (तुलसीदेवी) प्रचुर मात्रा में उगती है। वस्तुतः वृन्दावन कोई जंगल नहीं है, अत्यधिक हरियाली के कारण इसे वन कहा जाता है। इस प्रकार वृन्दावन में बारह वन हैं। कुछ यमुना के पश्चिमी तट पर हैं और कुछ पूर्वी तट पर। पूर्वी तट पर भद्रवन, बिल्ववन, लौहवन, भाण्डीरवन एवं महावन हैं। पश्चिमी तट पर मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बहुलावन, काम्यवन, खदीरवन एवं वृन्दावन हैं।

इन वनों में तुलसी के पौधे एवं अन्य वृक्ष भी पाये जाते हैं, परन्तु ये सब वृक्ष दिव्य एवं कल्पवृक्ष हैं। ये वृक्ष किसी भी प्रकार से श्रीकृष्ण की सेवा कर सकते हैं और ये स्वेच्छा से वृक्ष बने हैं। इन्हें वृक्ष बनने के लिए बाध्य नहीं किया गया। प्रत्येक जीव में एक विशिष्ट प्रकार से श्रीकृष्ण की सेवा करने की प्रवृत्ति होती है। वृन्दावन के पेड़-पौधे भी जीव हैं, परन्तु वे साधारण जीव नहीं हैं। उन्होंने श्रीकृष्ण को अपने फल-फूल देकर उनकी सेवा करने का निश्चय किया है। वे यही सेवा चाहते हैं।

वृन्दावन में प्रत्येक व्यक्ति में श्रीकृष्ण की सेवा की विशिष्ट प्रवृत्ति है। कोई धरती के रूप में वहाँ सेवा कर रहा है और कोई सिंहासन के रूप में। कोई फल-फूल प्रदान करके

सेवा कर रहा है और कोई भगवान् की अंतरंगा गोपी सेविका बनकर। वहाँ की गाएँ, बछड़े आदि सब भिन्न-भिन्न जीव हैं। उनके शरीर भौतिक तत्त्वों से नहीं बने हैं।

आनन्दचिन्मयरसप्रतिभाविताभिस्
ताभिर्य एव निजरूपतया कलाभिः।
गोलोक एव निवसत्यखिलात्मभूतो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।३७।।

मैं आदि पुरुष उन श्रीगोविन्द भगवान् का भजन करता हूँ जो प्राणीमात्र के आत्मस्वरूप होकर भी अथवा गोलोक-निवासी अन्य प्रियवर्गों के परमश्रेष्ठ होने के नाते, जीवात्मा की तरह, उनके निकट रहकर भी आनन्दचिन्मयरस, अर्थात् परमप्रेममय उज्ज्वल-नामक रस के द्वारा सराबोर स्वरूपवाली एवं निजस्वरूप होने के कारण, ह्लादिनी शक्ति स्वरूपा गोपियों के साथ गोलोक धाम में ही निवास करते हैं।

वृन्दावन के सारे निवासी भी श्रीकृष्ण की अह्लादिनी शक्ति के विस्तार हैं। एक दृष्टि से वे भी कृष्ण ही हैं। वे श्रीकृष्ण के अभिन्न हैं। *शक्ति-शक्तिमतो अभेद* - "शक्ति और शक्तिमान में कोई भेद नहीं होता। दोनों समान होते हैं।" सूर्य एवं सूर्यप्रकाश का उदाहरण लें। सूर्यलोक पर ऊष्मा एवं प्रकाश है और सूर्य की किरणों में भी ऊष्मा एवं प्रकाश है। इसलिए देखा जाये तो ऊष्मा एवं प्रकाश दोनों अभिन्न हैं। इसी प्रकार श्रीकृष्ण और श्रीकृष्ण और उनकी आनन्दचिन्मय शक्ति को अह्लादिनी कहा जाता है। *राधाकृष्ण प्रणयविकृतिर्ह्लादिनी शक्तिरस्मात्।* वृन्दावन में जो कुछ भी है वह श्रीकृष्ण की *अह्लादिनी* शक्ति का विस्तार है। दोनों अभिन्न हैं। इसलिए आरम्भ में ही कहा गया है *दिव्याद्*, अर्थात् "देदीप्यमान," या "दिव्य।"

हमें वृन्दावन को साधारण वन नहीं समझना चाहिए। इस धरती पर भी वृन्दावन स्थित है। वह भी साधारण वन नहीं है। वह बिल्कुल गोलोक वृन्दावन जैसा ही है। कोई भेद नहीं है। इसलिए नरोत्तमदास ठाकुर कहते हैं, *विषय छाडिया कबे, शुद्ध हबे मन, कबे हाम हेरबो श्रीवृन्दावन।* "कब मेरा मन पूरी तरह शुद्ध होकर भौतिक चिन्ताओं एवं इच्छाओं से मुक्त होगा? केवल तभी मैं वृन्दावन तथा राधा-कृष्ण के माधुर्य प्रेम को समझ पाऊँगा। तब मेरा आध्यात्मिक जीवन सफल हो जायेगा।"

इस समय हम सब रोगग्रस्त हैं। हमें इस भौतिक रोग से मुक्त होना होगा। भौतिक रोग का अर्थ है इन्द्रियभोग और उसमें भी सबसे अधिक भयंकर रोग है मैथुन। इसे भौतिक रोग कहा जाता है। हमें भोग-विषयों के दूषण से मुक्त होना होगा। नरोत्तमदास ठाकुर कहते हैं, "जब मेरा मन समस्त भौतिक इच्छाओं से मुक्त हो जायेगा तब मैं वृन्दावन के दर्शन कर सकूँगा।" भौतिक इच्छाओं के रहते वृन्दावन के दर्शन करना अत्यन्त कठिन है। भगवान् की भक्ति करने के लिए पहली योग्यता है समस्त भौतिक इच्छाओं से मुक्ति। केवल तभी हम वृन्दावन के दर्शन कर सकेंगे।

कृष्णकृपाश्रीमूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद

मायापुर, ९ अप्रैल १९७५

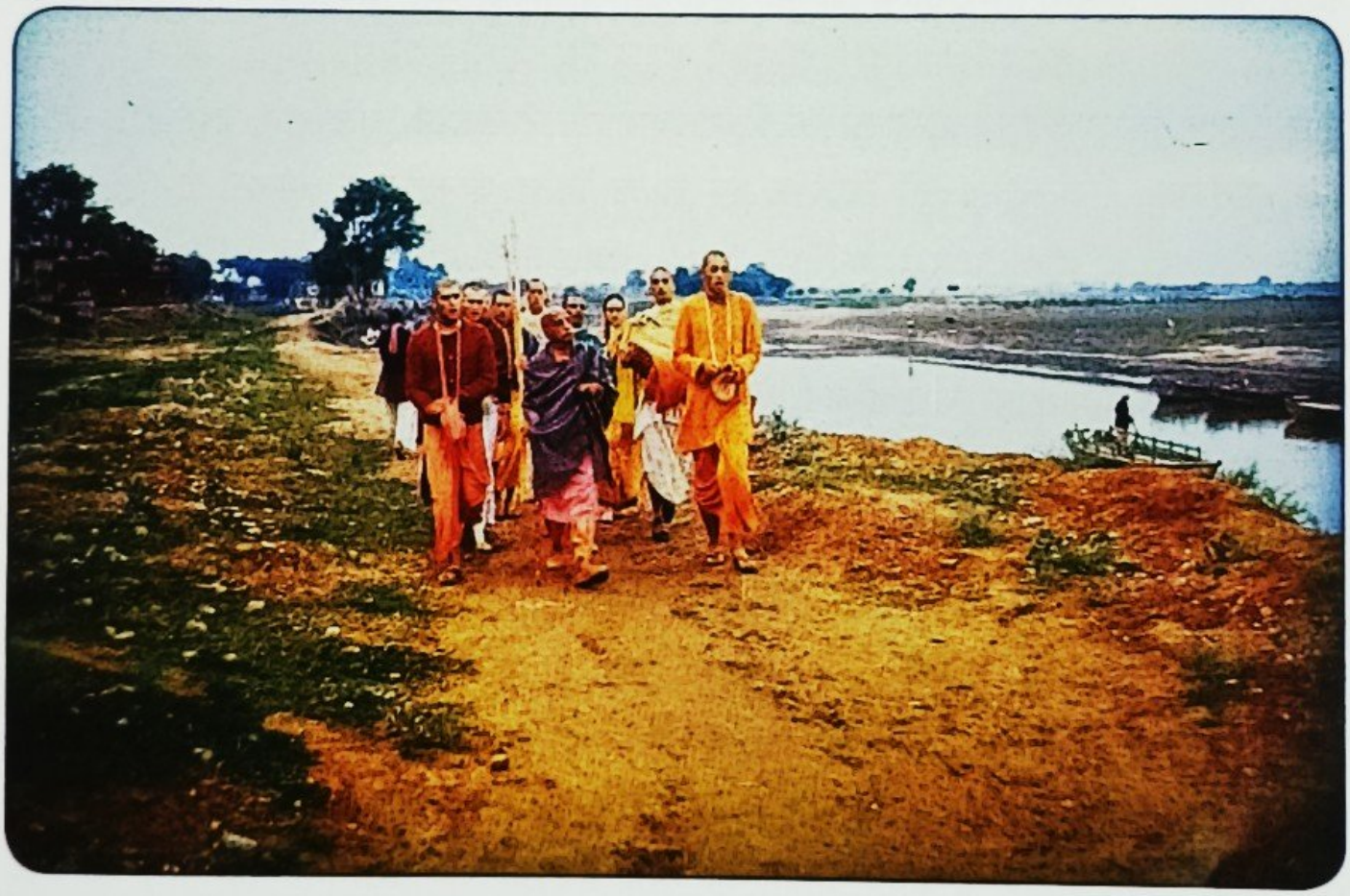

श्रील प्रभुपाद अपने शिष्यों के साथ वृन्दावन परिक्रमा पथ पर

भूमिका

वृन्दावन परिक्रमा आदि वराह पुराण में कहा गया है, "जो एक-एक करके वृन्दावन के बारह वनों का भ्रमण करते हैं वे आध्यात्मिक धाम प्राप्त करते हैं।" ये बारह वन लगभग चौरासी क्रोश में फैले हैं। एक क्रोश दो मील का होता है। इन बारह वनों में से वृन्दावन सबसे बड़ा है, जो वर्तमान वृन्दावन से लेकर नन्दग्राम और वर्षाणा तक फैला है। कुल मिलकर लगभग सोलह क्रोश (बत्तीस मील) क्षेत्र में। इसी क्षेत्र में पंचक्रोशी (पाँच क्रोश) का वृन्दावन भी स्थित है।

एक समय था जब यमुना के तट पर वृन्दावन क्षेत्र आम, कटहल, सेब, अमरूद, संतरे, अँगूर, जामून तथा अन्य अनेक सुगन्धित फूलों के पेड़-पौधों से भरा था। चूँकि ये वन यमुना के तट पर था वहाँ के वृक्षों पर तोते, मोर, बुलबुल, बगुले, कोयल आदि पक्षी विहार किया करते। वृन्दावन के दिव्य धाम में जन्म लेने वाले सारे वृक्ष, पशु-पक्षी सब पुण्यवान जीवात्मा थे जो भगवान् एवं उनके नित्य पार्षदों को आनन्द देने के लिए आये थे।

वेदों की महिमाएँ अनेक वैदिक ग्रंथों में पायी जाती है। आदि वराह पुराण में कहा गया है - "हे पृथिवी, ये बारहवाँ वन वृन्दावन समस्त दोषों को नष्ट करता है और वृन्दादेवी का संरक्षक है। निश्चित् रूप से यह मेरा प्रिय स्थान है। यहाँ मैं गोप-गोपियों के साथ रमणीय स्थलों पर ऐसी लीलाएँ करता हूँ जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ हैं।"

स्कन्द पुराण के मथुरा खण्ड में वृन्दावन का वर्णन मिलता है - "वृन्दावन पूरी तरह वृन्दादेवी की कृपा के आश्रय में है। श्रीहरि स्वयं इस उज्ज्वल अचिन्त्य स्थान में निवास करते हैं और ब्रह्मा-शिव आदि सब देवता इसकी पूजा करते हैं। विशाल क्षेत्र में फैला यह स्थान तुलसी वनों एवं संतों के आश्रमों से सुसज्जित है। भगवान् विष्णु को जितनी लक्ष्मीदेवी प्रिय हैं, श्रीगोविन्द को वृन्दावन उतना ही प्रिय है। अपने ग्वालमित्रों एवं गायों से घिरे श्रीमाधव वृन्दावन में श्रीबलराम के साथ क्रीड़ाएँ करते हैं। वृन्दावन कितना मनोहारी स्थान है जहाँ भगवान् विष्णु द्वारा निर्मित गोवर्धन पर्वत एवं अन्य पवित्र स्थल हैं।"

पद्म पुराण में कहा गया है - "वृन्दावन दिव्य आनन्द से भरा है। यह महानतम पाप एवं दुःखों को नष्ट करता है। केवल यहाँ रहने से व्यक्ति मुक्ति प्राप्त करता है।" वृन्दावन दूषित नहीं है। इसकी बजाए वृन्दावन हमारी सहायता करता है। चाहे कोई पापी अपराधी व्यक्ति भी वृन्दावन आये वह तुरन्त सहायता प्राप्त करता है। परन्तु यदि वृन्दावन में रहते हुए कोई व्यक्ति अपनी पापी-अपराधी मानसिकता बनाये रखता है तो उसे अगला जन्म लेकर इसका फल भुगतना होगा। उस जन्म के बाद वह पुनः प्रगति करेगा।

श्रीमद्भागवतम् (१०.११.२८) में भी वृन्दावन का वर्णन किया गया है - "नन्दीश्वर एवं महावन के बीच वृन्दावन नामक स्थान है। यह स्थान अत्यन्त उपयुक्त है क्योंकि यह हमारी गायों एवं अन्य पशुओं के लिए घास, पेड़-पौधों तथा लताओं से भरा-पूरा है। यहाँ सुन्दर उद्यान हैं और विशाल पर्वत हैं और यह सारे गोप-गोपियों एवं हमारे पशुओं को आनन्द देने के लिए सब सुविधाओं से युक्त है।"

गौतमीय तन्त्र में श्रीकृष्ण नारदमुनि से कहते हैं - "सुन्दर वृन्दावन का प्रत्येक भाग मेरा धाम है। इस स्थान में रहने वाला प्रत्येक प्राणी या देवता मृत्यु के पश्चात् गोलोक धाम प्राप्त करता है। मेरे धाम में रहने वाली गोपियाँ योगिनियाँ हैं। पाँच योजन का वृन्दावन मेरे शरीर के समान है और कालिन्दी (यमुना) इस शरीर में रीढ की हड्डी है जिसमें अमृतमय जल बहता है। (श्रील प्रभुपाद के अनुसार एक योजन तेरह किलोमीटर या आठ मील का होता है)। यहाँ देवता एवं अन्य दैवी प्राणी अदृश्य शरीरों में रहते हैं, और मैं प्रत्येक जीवन में निवास करता हुआ कभी इस स्थान को नहीं छोड़ता। प्रत्येक युग में मेरा प्राकट्य एवं अप्रकाट्य होता है। इस स्थान की दिव्य एवं यशस्वी कान्ति सांसारिक दृष्टि से परे है। वृन्दावन की महिमाएँ किसी भी व्यक्ति की गणना से परे है। लोग कहते हैं कि वृन्दावन सोलह क्रोश में है और शास्त्र कहते हैं कि वृन्दावन पाँच योजन में फैला है। जो भी वृन्दावन में गोविन्द के दर्शन करता है वह यमराज के घर नहीं जाता अपितु पुण्यात्माओं का धाम प्राप्त करता है।"

स्कन्द पुराण में नारदमुनि कहते हैं, "इस संसार में वृन्दावन भगवान् गोविन्द का वैकुण्ठ है। वृन्दावन एवं श्रीकृष्ण की अन्य सखियाँ भी यहाँ निवास करती हैं। हे महापाल, जो महात्मा वृन्दावन में गोविन्द के दर्शन करते हैं वे इस संसार के सबसे यशस्वी पुरुष हैं। केवल वृन्दावन में गोविन्द के दर्शन से व्यक्ति महान् पुण्य प्राप्त करता है।"

धाम सेवा

धाम के विषय में सुनना, धाम को स्मरण करना, धाम का गुणगान करना, धाम दर्शन की इच्छा करना, दूर से धाम को देखना, धाम की ओर चलना, धाम की परिक्रमा करना, धाम का स्पर्श करना, धाम का आश्रय लेना, धाम की मरम्मत करवाना या उसका सौन्दर्यकरण या सफाई करवाना, ये सब वृन्दावन धाम की सेवा के अन्तर्गत आता है। इन सब प्रकार की धाम सेवा में से श्रील रूप गोस्वामी के अनुसार मथुरा-मण्डल में निवास करना भक्ति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंगों में से एक है। अन्य चार अंग हैं - साधु संग, नाम कीर्तन, भागवत अध्ययन एवं श्रीविग्रह आराधन।

धाम सेवा के उद्धरण

श्रील प्रभुपाद श्रीकृष्ण पुस्तक के ३४वें अध्याय में लिखते हैं - "तीर्थयात्री स्नान करते हैं, विग्रहों की सेवा करते हैं और दान करते हैं। अनुशंसा की जाती है कि वे एक दिन का उपवास भी करें। भक्तों को चाहिए कि वे तीर्थस्थल पर जायें और कम-से-कम तीन दिन वहाँ निवास करें। पहले दिन उपवास करें और रात्रि समय थोड़ा जल लिया जा सकता है क्योंकि जल पीने से उपवास नहीं टूटता।"

चैतन्य-चरितामृत में श्रील प्रभुपाद लिखते हैं - "जिन्होंने श्रीकृष्ण के प्रति सहज प्रेम विकसित नहीं किया है उन्हें वृन्दावन में अधिक समय नहीं रहना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे वहाँ कुछ दिन ही बितायें।" (अन्त्य १३.३९, तात्पर्य)

जो भी व्यक्ति मंदिर आता है उसे चाहिए कि वह भगवान् के लिए कोई भेंट लाये। यही पद्धति है। यही प्रेम का पहला सोपान है। कुछ भेंट देना। यदि मैं आपसे प्रेम करता हूँ तो मैं अवश्य आपको कुछ दूँगा और मैं आपको जो कुछ भी दूँगा आप उसे स्वीकार करेंगे। इसलिए श्रीकृष्ण को कोई भेंट दो और उनसे शिक्षा प्राप्त करो। यदि लोग ऐसा करते हैं तो वे सहज ही भक्त बन जायेंगे। वे श्रीकृष्ण से प्रेम करने लगेंगे। यही जीवन की सफलता है। (श्रील प्रभुपाद द्वारा लिखा पत्र, १८ मार्च १९७६)

विशेष रूप से श्रील प्रभुपाद वृन्दावन के सात प्रमुख मंदिरों का भ्रमण करने के लिए कहते। इन मंदिरों की स्थापना श्रीचैतन्य महाप्रभु के प्रत्यक्ष अनुयायी छह गोस्वामियों अथवा उनके समकालिन भक्तों ने की थी।

ये निम्नलिखित हैं -

१. श्रीराधा-मदनमोहन मंदिर - श्रीसनातन गोस्वामी

२. श्रीराधा-गोविन्ददेव - श्रीरूप गोस्वामी

३. श्रीराधा-गोपीनाथजी - श्रीमधु पण्डित

४. श्रीराधा-दामोदर जी - श्रीजीव गोस्वामी

५. श्रीराधा-श्यामसुन्दर - श्रीश्यामानन्द पण्डित

६. श्रीराधा-रमण - श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी

७. श्रीराधा-गोकुलानन्द - श्रीलोकनाथ गोस्वामी

श्रीमद्भागवतम् में केवल भ्रमण के लिए की गयी तीर्थयात्रा की भर्त्सना की गयी है - "जो मनुष्य तीन तत्त्वों से बने शरीर को ही आत्मा मानता है, जो अपने शरीर से जुड़े लोगों को अपना सम्बन्धी मानता, जो अपनी जन्मभूमि को पूजनीय मानता है और जो महात्माओं से दिव्य ज्ञान प्राप्त करने हेतु नहीं अपितु केवल स्नान करने के लिए तीर्थयात्रा करता है ऐसा व्यक्ति गाय या गधा ही है।" (श्रीमद्भागवतम् १०.८४.१३)

श्रील प्रभुपाद श्रीमद्भागवतम् (२.३.२२) के तात्पर्य में लिखते हैं - "तीर्थस्थलों एवं मंदिरों में सैर-सपाटे के भावना से नहीं जाना चाहिए, अपितु व्यक्ति को चाहिए कि वह भगवान् की दिव्य लीलाओं से परम पवित्र हुए इन स्थानों एवं मंदिरों में जाये और वहाँ आध्यात्मिक ज्ञान से युक्त साधुओं से मार्गदर्शन प्राप्त करें। इसे अनुव्रज कहते हैं। अनु का अर्थ है अनुगमन करना। इसलिए सर्वोत्तम यही है कि व्यक्ति अपने गुरु के निर्देशों का पालन करते हुए मंदिरों और तीर्थस्थलों की यात्रा करे।"

धाम यात्रा पर जाते समय हमें स्मरण रखना होगा कि यात्रा भक्तिमय सेवा से छुट्टी नहीं है, अपितु धाम में की गयी भक्तिमय सेवा धाम से बाहर की गयी सेवा से एक हजार गुना अधिक लाभकारी होती है।

धाम को प्रणाम करना

धाम में प्रवेश करते ही प्रणाम करना चाहिए। श्रील प्रभुपाद श्रीकृष्ण पुस्तक के "अक्रूर का वृन्दावन में आगमन" अध्याय में लिखते हैं - "श्रीकृष्ण के चरणकमलों द्वारा

स्पर्श हुई धूल को देखकर अक्रूरजी भावविभोर हो उठे और मुँह के बल गिरते हुए भूमि में लोट-पोट होने लगे। अक्रूर की वृन्दावन यात्रा एक आदर्श है। जो व्यक्ति वृन्दावन जाने का इच्छुक है उसे चाहिए कि अक्रूरजी के चरणचिह्नों का अनुगमन करे और सतत् भगवान् की लीलाओं एवं कार्यों का स्मरण करें। जैसे ही व्यक्ति वृन्दावन की सीमा पर पहुँचे उसे अपने भौतिक पद या प्रतिष्ठा की परवाह किये बिना वृन्दावन की धूल पूरे शरीर पर लगानी चाहिए।"

धाम अपराध

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर धाम के प्रति होने वाले दस अपराधों की सूची देते हैं। हमें चाहिए कि धामवास या धामयात्रा का पूरा लाभ लेने के लिए इनसे बचें -

१. धाम उजागर करने वाले गुरु का अपमान करना।

२. धाम को अस्थायी मानना।

३. किसी भी धामवासी या धामयात्री के प्रति हिंसा करना अथवा उन्हें साधारण व्यक्ति मानना।

४. धाम में रहकर भौतिक कार्य करना।

५. धाम में श्रीविग्रहों की सेवा एवं संकीर्तन के द्वारा धन कमाना।

६. यह सोचना की धाम किसी भौतिक देश या क्षेत्र में आता है, जैसे बंगाल में; या भगवान् के धाम को किसी देवता के तीर्थस्थल के समान समझना, या धाम के क्षेत्र को नापने का प्रयास करना।

७. धाम निवास के दौरान पापकार्य करना।

८. वृन्दावन को नवद्वीप से भिन्न समझना।

९. धाम का गुणगान करने वाले शास्त्रों की निन्दा करना।

१०. अश्रद्धालु होकर धाम की महिमाओं को काल्पनिक समझना।

क्या वृन्दावन पर्यटकों के लिए है?

आजकल वृन्दावन में आने वाले लोग वृन्दावन को अस्वच्छ स्थान मानते हैं क्योंकि वहाँ अनेक बन्दर, सूअर एवं कुत्ते हैं और यमुनातट पर गन्दगी पड़ी रहती है। ऐसे लोग कभी नहीं समझ सकते कि भौम वृन्दावन भगवान् श्रीकृष्ण के मूल वृन्दावन धाम का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए वृन्दावन धाम श्रीकृष्ण के समान ही पूजनीय है। *"आराध्यो भगवान् व्रजेशतनयस्तद्धाम वृन्दावनम्।"* श्रीचैतन्य महाप्रभु के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण और उनका धाम वृन्दावन दोनों समान रूप से पूजनीय हैं। जिन लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है कई बार वे पर्यटक बनकर वृन्दावन आते हैं। जो व्यक्ति भौतिक दृष्टिकोण लेकर वृन्दावन आयेगा उसे कोई आध्यात्मिक लाभ प्राप्त नहीं होगा। ऐसे व्यक्ति को विश्वास नहीं है कि श्रीकृष्ण और वृन्दावन एक समान हैं। चूँकि वे दोनों समान हैं इसलिए वृन्दावन श्रीकृष्ण के ही समान पूजनीय है। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने कहा था *"मोर मन वृन्दावन"*, परन्तु भौतिकवादी लोगों की दृष्टि श्रीचैतन्य महाप्रभु की दृष्टि से भिन्न है। महाप्रभु सदैव श्रीकृष्ण का स्मरण करते थे। जहाँ कहीं श्रीकृष्ण होंगे वहाँ श्रीमती राधारानी, गोपियाँ, ग्वाले एवं वृन्दावन के अन्य निवासी भी होंगे। इस प्रकार जैसे ही व्यक्ति अपना मन श्रीकृष्ण पर केन्द्रित करता है उसका मन वृन्दावन बन जाता है। सामान्य दृष्टि में वृन्दावन एक साधारण गाँव दिखता है परन्तु उन्नत भक्तों की दृष्टि में वह आध्यात्मिक जगत् के मूल वृन्दावन से अभिन्न है।

श्रीवृन्दावन धाम को चारों ओर अपने जल से समेटे यमुना नदी

वृन्दावन रमण-रेती में श्री श्रीकृष्ण-बलराम इस्कॉन मन्दिर

इस्कॉन मन्दिर में श्री श्रीगौर-निताइ

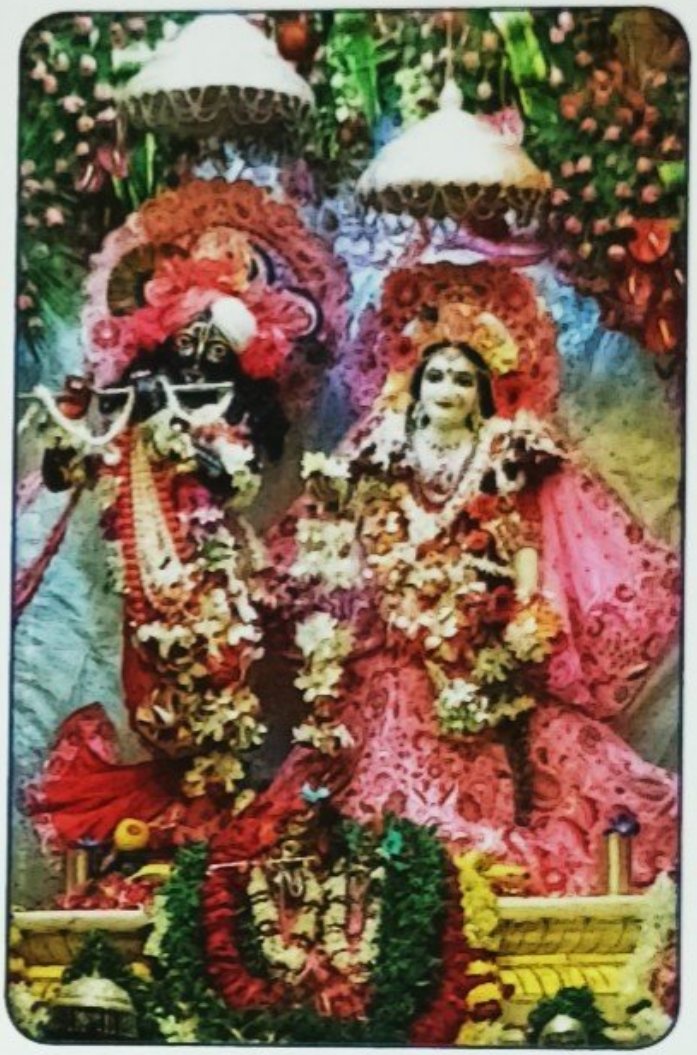

इस्कॉन मन्दिर में श्री श्रीराधा-श्यामसुंदर

वृन्दावन परिक्रमा

१. कृष्ण-बलराम मंदिर

वृन्दावन की परिक्रमा श्री श्रीकृष्ण-बलराम मंदिर से आरम्भ होती है। इस मंदिर की स्थापना अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (इस्कॉन) के संस्थापक आचार्य कृष्णकृपाश्रीमूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद ने १९७५ में की थी। यह मंदिर वृन्दावन के प्रमुख भक्तिवेदान्त स्वामी मार्ग के आरम्भ पर ही स्थित है। मंदिर में श्री श्रीगौर-निताइ, कृष्ण-बलराम एवं राधा-श्यामसुन्दर, ललिता एवं विशाखा देवी के विग्रह पूजित हैं। यह मंदिर श्रीविग्रह सेवा के उच्च मापदण्डों एवं अपनी स्वच्छता के लिए विख्यात् है। अंतर्राष्ट्रीय भक्त समूह एवं अखण्ड कीर्तन के कारण इसे वृन्दावन के सर्वाधिक लोकप्रिय मंदिरों में से एक माना जाता है। इस मंदिर ने वृन्दावन को पूरे विश्व में ख्याति प्रदान की है।

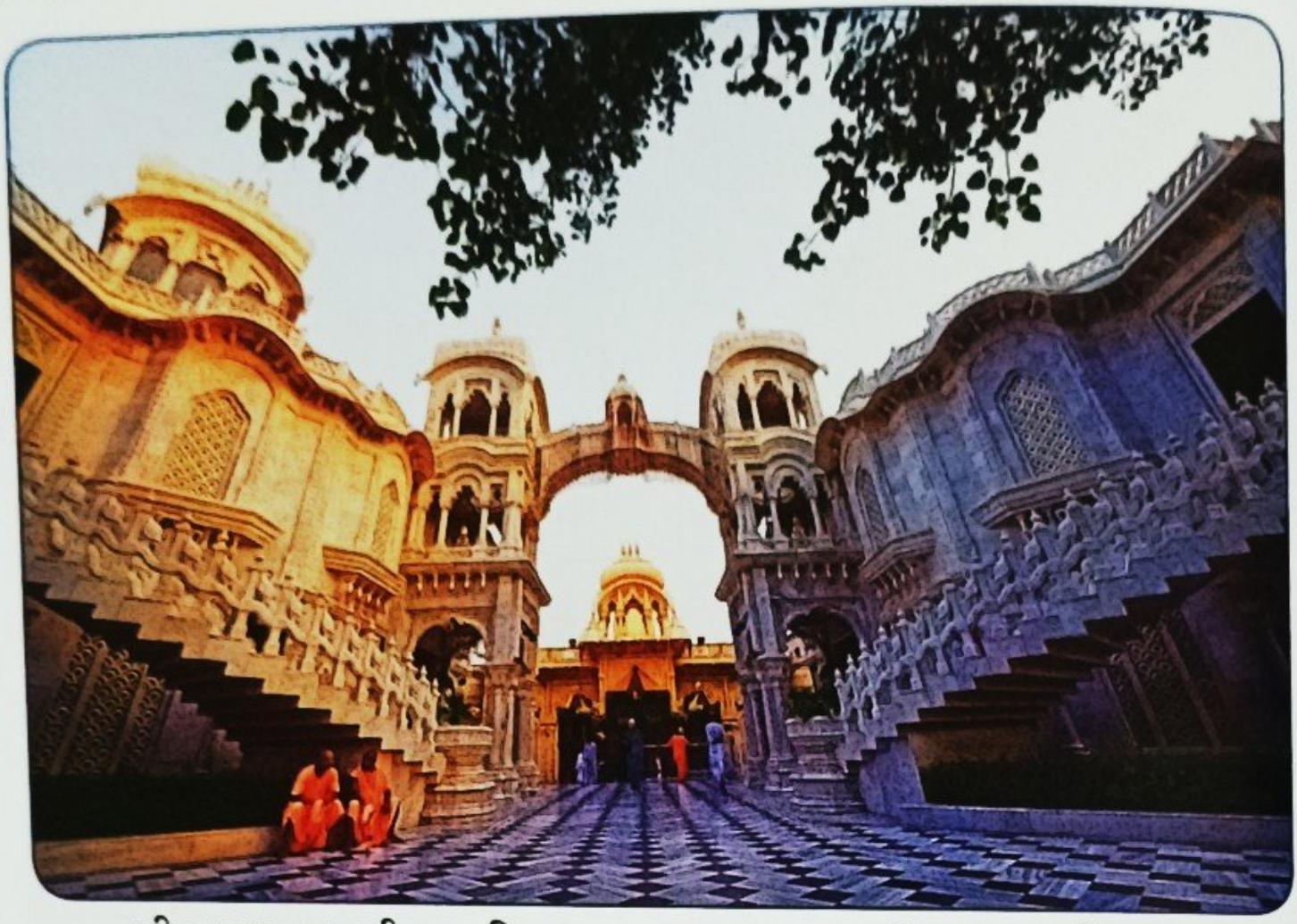

श्रील प्रभुपाद की समाधि तथा कृष्ण-बलराम मन्दिर का प्रवेश द्वार

कृष्ण-बलराम मंदिर की समय-सूची

प्रातः ४:१० समाधि आरती
४:३० मंगल आरती
५:०० तुलसी आरती
७:१५ शृंगार आरती एवं गुरु पूजा
८:०० श्रीमद्भागवतम् कक्षा (हिन्दी एवं अंग्रेजी में)
८:३० धूप आरती
अपराह्न १२:०० राजभोग आरती
दोपहर १२:४५ मंदिर बन्द
४:०० पुष्प आरती (गर्मियों में ४:३०)
सन्ध्या ६:३० सन्ध्या आरती (गर्मियों में ७:००)
७:३० भगवद्गीता कक्षा (गर्मियों में ८:००)
८:०० शयन आरती (गर्मियों में ८:३०)
८:१५ मंदिर बन्द (गर्मियों में ८:४५)

मंदिर प्राँगण में देखने योग्य अनेक महत्वपूर्ण स्थान हैं -

मंदिर में अखण्ड कीर्तन

विग्रहों के दर्शन करते समय आपका मंदिर में हो रहे हरिनाम संकीर्तन में स्वागत है। श्रील प्रभुपाद के निर्देशों का पालन करते हुए कृष्ण-बलराम मंदिर में चौबीस घण्टे हरे कृष्ण महामंत्र का कीर्तन होता है - हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

श्रील प्रभुपाद समाधि

कृष्णकृपाश्रीमूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद ने १४ नवम्बर १९७७ को इस संसार से प्रयाण किया। उनकी दिव्य देह को कृष्ण-बलराम मंदिर के सम्मुख समाधि में स्थान दिया गया। नक्काशी किये गये सफेद संगमरमर से बने इस समाधि मंदिर के निर्माण कार्य में विश्वव्यापी श्रील प्रभुपाद के शिष्यों ने योगदान दिया। प्रातः ४:१० बजे यहाँ गुर्वाष्टक प्रार्थना होती है और फिर दिनभर रात्रि ८:३० तक अनेक आरती होती हैं। मंदिर में ऊपर बने आहते में १०८ कमल के फूल बने हैं जिनपर चलकर यात्री श्रील प्रभुपाद की परिक्रमा करते हुए हरे कृष्ण महामंत्र की एक माला जप कर सकते हैं।

भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट संग्रहालय

श्रील प्रभुपाद समाधि के ठीक सामने है भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट संग्रहालय। अपने गुरु महाराज के आदेशानुसार श्रील प्रभुपाद ने पाश्चात्य देशों में भगवान् श्रीकृष्ण के संदेश का प्रचार करने के लिए अंग्रेजी भाषा में वैदिक ग्रंथों का अनुवाद एवं लेखन आरम्भ किया। १९७२ में उन्होंने अपनी रचनाओं एवं प्रवचनों की रिकार्डिंग, वार्तालापों आदि को प्रकाशित करने के लिए भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट की स्थापना की। ज्ञान का वह अथाह भण्डार भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट संग्रहालय में उपलब्ध है। इस इमारत की पहली मंजिल पर श्रील प्रभुपाद के जीवन पर आधारित संग्रहालय भी है।

मंदिर परिक्रमा पथ

हरिभक्तिसुधोदय में कहा गया है - "भौतिक जीवन के कारण बद्ध जीवात्मा बारम्बार

जन्म-मृत्यु के चक्र में भ्रमण करता है। मंदिर में श्रीमूर्तियों की तीन परिक्रमा करने से यह चक्र रोका जा सकता है।"

स्वागत केन्द्र

यहाँ यात्रियों को यात्रा सम्बन्धी सहायता प्रदान की जाती है, जैसे हवाई जहाज या ट्रेन की टिकट बुक करना, टैक्सी बुक करना, विदेशी मुद्रा का विनिमय करना अथवा व्रज यात्रा की व्यवस्था करना। यहाँ WiFi एवं फोन सुविधा के साथ इंटरनेट केन्द्र भी है।

अनुपम भेंट दुकान

इस दुकान में श्रील प्रभुपाद की समस्त भाषाओं में तथा बच्चों के लिए पुस्तकें मिलती हैं। यह प्रातः ७:३० से दोपहर १:०० बजे तक तथा संध्या ४:३० से ८:३० तक खुला रहता है।

भीष्म कार्यालय

अनुपम भेंट दुकान के ऊपर भीष्म कार्यालय स्थित है। यह मंदिर का आजीवन सदस्यता, दान एवं पत्राव्यवहार कार्यालय है। नियमित रूप से मंदिर के सम्पर्क में रहने के इच्छुक यात्रियों का भीष्म कार्यालय में स्वागत है। यह प्रातः १०:०० से संध्या ५:०० तक खुला रहता है।

VRINDAVAN. TV

VRINDAVAN.TV पर आप इस्कॉन वृन्दावन के विग्रहों के प्रतिदिन दर्शन कर सकते हैं। साथ ही आप प्रतिदिन मंदिर में होने वाली हिन्दी एवं अंग्रेजी की श्रीमद्भागवतम् कक्षाएँ भी सुन सकते हैं तथा प्रमुख उत्सवों में भाग ले सकते हैं। इसके द्वारा टाटा स्काई सैटेलाइट पर लाइव दर्शन चैनल दिखाया जाता है जिसे भारत में लाखों लोग देखते हैं।

श्रील प्रभुपाद का घर

मंदिर और कृष्ण-बलराम अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह के बीच श्रील प्रभुपाद का निवास स्थित है। १९७३ से १९७७ के बीच वे जब भी वृन्दावन आये, यहीं रहे। १४ नवम्बर १९७७ को इन्हें पवित्र कक्षों में उन्होंने समाधि में प्रवेश किया। इस घर में श्रील प्रभुपाद की आरम्भिक रचनाओं एवं उनके अनेक व्यक्तिगत वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है। श्रील प्रभुपाद ने श्रीमद्भागवतम्, ईशोपनिषद्, भगवद्गीता, चैतन्य-चरितामृत, भक्तिरसामृतसिन्धु

श्रीकृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद का घर

इत्यादि ग्रंथों का संस्कृत एवं बंगाली भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद किया। श्रील प्रभुपाद के कक्ष के निकट पुस्तकालय में अस्सी भाषाओं से अधिक में इन पुस्तकों को रखा गया है। प्रत्येक संध्या इस पुस्तकालय में भगवद्गीता पर कक्षा होती है।

श्रीकृष्ण-बलराम अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह

यात्रियों का कृष्ण-बलराम अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह में निवास के लिए स्वागत हैं। यहाँ निवास करने से आप सरलतापूर्वक मंदिर के सारे कार्यक्रमों में भाग ले सकते हैं। अतिथि गृह में एक उपहार की दुकान, गोविन्दा भोजनालय तथा बेकरी भी है।

नामहट्ट केन्द्र

नामहट्ट विभाग कृष्ण-बलराम मंदिर के बाहर उत्सवों का आयोजन करता है, जैसे लोगों के घरों में कार्यक्रम, हरिनाम संकीर्तन, रथयात्राएँ, नये प्रचार केन्द्रों को आरम्भ करना, गृहस्थ भक्तों के लिए कार्यक्रम, ग्रामीण भागों में प्रचार, स्कूल एवं कॉलेजों में प्रचार, मेडिकल कैम्प, फूड फॉर लाइफ कार्यक्रम इत्यादि।

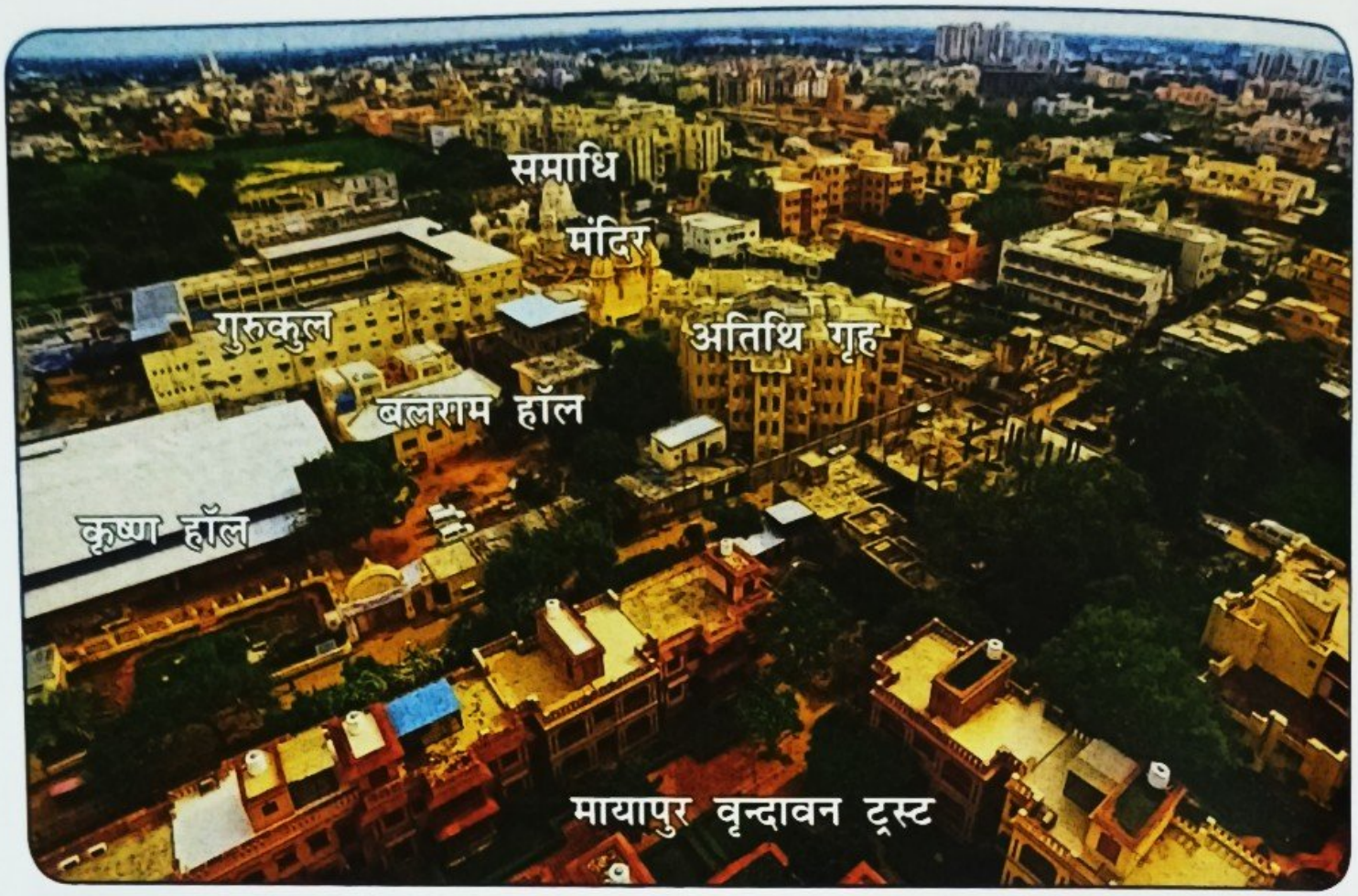

भक्तिवेदान्त गुरुकुल एवं अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय

जिस स्थान पर बालक गुरु के आश्रय में रहते हुए शिक्षार्जन करें वह गुरुकुल कहलाता है। १-१२ कक्षा तक के छात्रों के लिए बने भक्तिवेदान्त गुरुकुल एवं अंतर्राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना श्रील प्रभुपाद ने इसलिए की जिससे बच्चों को शैक्षणिक ज्ञान के साथ कृष्णभक्ति का ज्ञान भी प्रदान किया जा सके।

मायापुर वृन्दावन ट्रस्ट एवं भक्तिवेदान्त आश्रम

आपातकालीन समय में मायापुर एवं वृन्दावन में स्थित इस्कॉन मंदिरों की सुरक्षा के लिए श्रील प्रभुपाद ने मायापुर-वृन्दावन ट्रस्ट की स्थापना की थी। २.५ एकड़ में फैले इस क्षेत्र में अतिथि गृह, भोजनालय, योगा हॉल, अनेक उद्यान तथा निवास एवं किराये हेतु निजी अपार्टमेंट हैं। यह स्थान बिल्कुल मंदिर के पीछे है।

बलराम सांस्कृतिक कक्ष

बलराम कक्ष में प्रतिदिन कक्षाएँ तथा नाटक, भागवत कथा, सैमिनार आदि कार्यक्रम होते हैं। बलराम कक्ष मंदिर से लगे भूमिखण्ड पर मंदिर के प्रशासकीय कार्यालयों और एकाऊन्ट कार्यालय के बीच स्थित है।

कृष्ण कक्ष

कृष्णकक्ष मंदिर का प्रसाद वितरण केन्द्र है। इस विशाल क्षेत्र में एक साथ १,००० लोग बैठकर प्रसाद ले सकते हैं। विशेष अवसरों पर यहाँ कथा एवं नाटिकाओं का आयोजन भी किया जाता है। यह भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट कार्यालय के सामने बलराम कक्ष से लगकर स्थित है।

BLISS विभाग

कृषि में आत्मनिर्भरता, गोरक्षा एवं अन्य ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए Bhaktivedānta Learning Institute for Self-sufficiency (BLISS) में अनेक कार्यक्रम हैं। उनकी दुकान में जैविक वस्तुओं तथा भक्तिवेदान्त स्वामी गोशाला में गोमाता विभाग द्वारा शुद्ध देसी गायों द्वारा बनायी गयी औषधियाँ मिलती हैं।

भक्तिवेदान्त स्वामी गोशाला एवं उद्यान

भक्तिवेदान्त स्वामी गोशाला में ४०० से अधिक गाएँ, बैल एवं बछड़े रहते हैं। गायों के दूध से प्रतिदिन मिठाइयाँ बनाकर मंदिर में भगवान् को भोग लगायी जाती हैं। आप प्रातः एवं संध्या समय गोशाला में आकर गोदोहन देख सकते हैं। गोशाला वृन्दावन परिक्रमा पथ से लगकर कृष्ण-बलराम मंदिर से कुछ मिनटों की दूरी पर है। वहाँ आपको मंदिर के उद्यान दिखेंगे जहाँ श्रीविग्रहों की मालाओं के लिए फूल उगाये जाते हैं।

वृन्दावन इन्स्टीट्यूट फॉर हाइर एजुकेशन (VIHE)

यहाँ वैष्णव दर्शन में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए भक्ति-शास्त्री, भक्ति-वैभव, भक्तिवेदान्त एवं भक्ति-सार्वभौम जैसे पाठ्यक्रम पढ़ाये जाते हैं।

गोमाता ब्लिस् आयुर्वेदिक ट्रस्ट

गोमाता ब्लिस् कृषि एवं गोशालाओं की स्थापना करके तथा गायों द्वारा प्राप्त उत्पादों द्वारा गोरक्षा को बढ़ावा देती है। इनकी फार्मेसी में लाइसेंस प्राप्त आयुर्वेदिक औषधियाँ और देसी गाएँ के घी, गोबर इत्यादि से प्राप्त खाद्य मिलते हैं।

इस्कॉन मंदिर का दर्शन लेने के बाद अब हम वृन्दावन परिक्रमा की ओर बढ़ते हैं। मंदिर से बाहर निकलकर भक्तिवेदान्त स्वामी मार्ग पर दायें मुड़ें और पहले चौराहे पर पहुँचे। यहाँ से वृन्दावन की परिक्रमा आरम्भ होती है। इस चौराहे पर एक पुलिस चौकी है और यहीं से हम वृन्दावन की परिक्रमा आरम्भ करेंगे।

२. रमणरेती

रमण का अर्थ है "रमणीय" या "आनन्दप्रद"। रमणरेती का अर्थ हुआ आनन्दप्रदान करने वाली रेत। श्रील प्रभुपाद रमणरेती को "चमचमाती रेत" कहा करते थे। यहीं भगवान् ने एक ग्वाले के रूप में अपनी लीलाओं का आनन्द लिया। वृन्दावन में रमणरेती का विशेष महत्व है। एक समय था जब यहाँ की रेत अत्यन्त कोमल थी और यहाँ मोर तथा गाएँ विचरण किया करते थे। कृष्ण-बलराम अपने मित्रों के साथ यमुना के रास्ते यहाँ गाएँ चराने आया करते थे।भक्तगण यहाँ की धूल लेकर अपने सिर पर लगाते हैं। वृन्दावन की धूल भी श्रीकृष्ण ही है। श्रील प्रभुपाद रमणरेती को वृन्दावन का सर्वश्रेष्ठ स्थान मानते थे इसलिए उन्होंने यहाँ कृष्ण-बलराम मंदिर की स्थापना की। जब से नगरपालिका ने परिक्रमा मार्ग को वाहनों के लिए पक्का बना दिया है तब से यहाँ व्यस्त यातायात रहने लगा है।

३. कृष्ण-बलराम वृक्ष

एक समय यहाँ दो वृक्ष हुआ करते थे। एक काले रंग का शमी या चोकर वृक्ष और दूसरा उसके साथ लगकर निकला सफेद रंग का पीपल वृक्ष। इसलिए इनका नाम कृष्ण-बलराम वृक्ष पड़ा। परन्तु अब पीपल वृक्ष नहीं रहा। परिक्रमा के दौरान भक्त इस वृक्ष की परिक्रमा करते हैं। वृन्दावन के वृक्षों को कल्पवृक्ष कहा जाता है, अर्थात् वे हमारी सारी इच्छाएँ पूरी करते हैं। किन्तु हम इन वृक्षों के पास जाकर कुछ भी माँग नहीं कर सकते, पहले हमें भक्त बनना होगा। तब ये वृक्ष कृष्ण-सेवा की हमारी सारी इच्छाएँ पूरी करेंगे। कृष्ण-बलराम वृक्ष एक चौराहे पर है। वहाँ से बायें मुड़ने पर सोनरख गाँव है जहाँ सौभरि मुनि के यमुना के नीचे बैठकर तप किया था। वहाँ से दायें मुड़कर सौ मीटर चलने पर एक बायीं गली आती है जो हमें भक्तिवेदान्त गोशाला एवं उद्यानों, गोमाता उत्पादों तथा *वृन्दावन इन्स्टिट्यूट ऑफ हाइर ऐजुकेशन* की ओर ले जाती है।

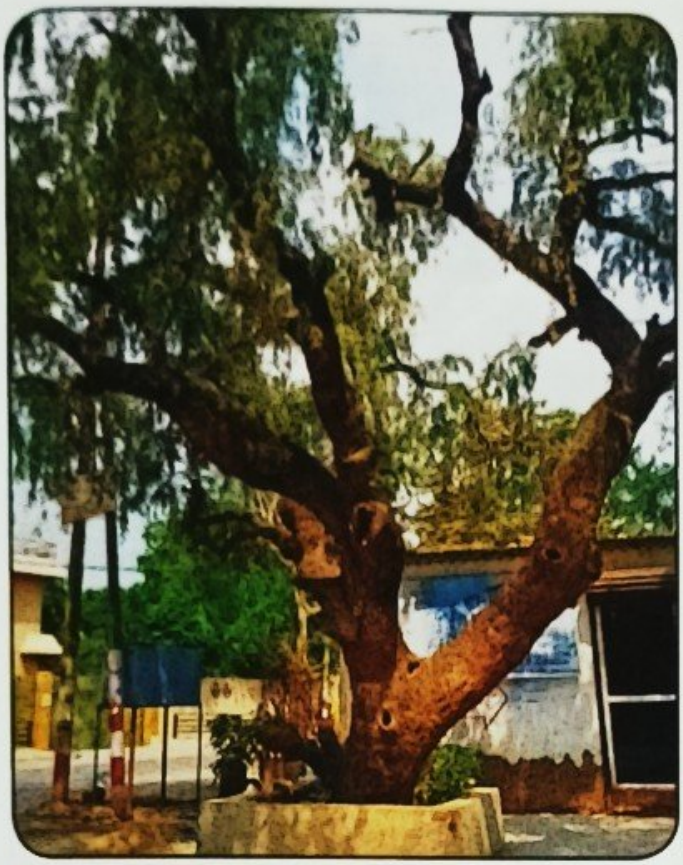

कृष्ण-बलराम पेड़

भक्तिवेदान्त हॉसपीस

४. भक्तिवेदान्त हॉसपीस

परिक्रमा मार्ग पर सीधे जाने से हम पहुँचते हैं भक्तिवेदान्त हॉसपीस एवं हैल्थ केयर हॉस्पीटल पर। यह मार्ग के दायीं ओर स्थित है। भक्तिवेदान्त हॉसपीस विशेष रूप से असाध्य रोगों से पीड़ित रोगियों के लिए एक दानार्थ स्वास्थ्य केन्द्र है। यहाँ के कर्मचारी को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे वे सम्मानपूर्वक एवं भक्तिमय वातावरण का निर्माण कर ऐसे रोगियों को मृत्यु के लिए तैयार करें। यहाँ एक बाह्य-रोगी विभाग (ओपीडी), आँखों का अस्पताल, दँत चिकित्सा केन्द्र, तथा कैंसर, हृदय रोग चिकित्सा आदि के केन्द्र भी है।

हॉसपीस से आगे बढ़ते हैं तो हम पहुँचते हैं यमुना के पुराने मार्ग पर। एक समय यमुना इस मार्ग से होकर बहती थी। इसलिए इस मार्ग पर आप अनेक घाट देख सकते हैं, यद्यपि आज यमुना यहाँ से बहुत दूर चली गयी है। कुछ वर्ष पहले पुराने मार्ग को पक्का बना दिया गया है और अब वही परिक्रमा मार्ग है। परिक्रमा मार्ग पर चलते समय आप पायेंगे कि यमुना कभी आपके बहुत निकट आ जाती है और कभी बहुत दूर।

वृन्दावन के यमुना घाट

आदि वराह पुराण में कहा गया है - "हे देवी, मथुरा मण्डल में यमुना गंगा से सौ गुना अधिक पवित्र है। इसमें कोई संशय नहीं। यमुना में ऐसे अनेक गुप्त स्थल हैं जो मुझे अतिशय प्रिय हैं। उनमें स्नान करने वाले व्यक्ति का मेरे धाम में गुणगान होता है। यमुनाजल में स्नान करने वाला व्यक्ति शुद्ध एवं आत्मनियंत्रित बन जाता है। वह भगवान् अच्युत की आराधना कर परमगति प्राप्त करता है।"

मत्स्य पुराण में कहा गया है - "यमुना में प्रवेश करके उसका जल पीने वाले व्यक्ति के सात पीढ़ी पूर्वजों का उद्धार हो जाता है। यमुना में शरीर छोड़ने वाला परमगति प्राप्त करता है।" हालाँकि, यमुना जल पीने से पहले हमें इस जल की वर्तमान स्थिति को जानना आवश्यक है। यमुना का उद्गम होता है यमुनोत्रि से। अनेक घाटियों एवं गाँवों से बहती हुई वह नीचे आती है। महाभारत में इसका वर्णन प्राप्त होता है। परन्तु अपने स्रोत से मात्र बीस मील आगे वह अत्यन्त व्यस्त औद्योगिक क्षेत्र से गुजरती है और वहाँ का सारा प्रदूषित जल इसे अपने भीतर समेटना पड़ता है। दिल्ली पहुँचने तक इसका जल अत्यन्त विषैला हो चुका होता है और रही-सही कसर दिल्ली के उद्योग एवं महानगर का कचरा पूरी करता है। यमुना की पूरी लम्बाई का केवल दो प्रतिशत हिस्सा दिल्ली से गुजरता है, परन्तु दिल्ली उसके प्रदूषित जल में ७० प्रतिशत का योगदान देती है! अनेक बाँध यमुना के जल को रोकते एवं उसे अनेक शाखाओं में विभाजित करते हैं। अधिकांश नदी वर्षभर सूखी रहती है और दिल्ली पहुँचने तक नदी का अधिकांश जल गटर का पानी रह जाता है। इससे यमुना की पवित्रता एवं उसका आध्यात्मिक महत्व कम नहीं होता, परन्तु हमें इतना स्मरण रखना होगा कि अब उसके पवित्र जल में वृन्दावन पहुँचने तक भारी मात्रा में विषैले तत्त्व एवं गटर का पानी मिला होता है। यमुना जल में पाये जाने वाले रोग-संवर्धक जीवाणुओं की संख्या सामान्य से २५,००० गुणा अधिक है।

पद्म पुराण के पाताल खण्ड में कहा गया है - "उपनिषदों में जिसे ब्रह्म कहा गया है, सच्चिदानन्द अमृत की वह बाढ़ यमुना ही है, जो त्रिलोकी को पावन करने के लिए नदी के रूप लेकर आयी है। यमुना के स्पर्श से पापी व्यक्ति पापमुक्त होकर पुण्यवान एवं साधु बन

वराह-घाट पर श्रीकृष्ण ने गोपियों को अपना वराह रूप प्रकट किया।

जाता है। पूर्व पापफलों से मुक्त होकर वह मुक्ति प्राप्त करता है। चाहे कोई यमुना में उचित रूप से स्नान करे या अनुचित रूप से वह इसका पावन फल प्राप्त करता है। यमुना में शरीर त्यागने वाला व्यक्ति भगवान् हरि का धाम प्राप्त करता है। मथुरा से होकर बहने वाली यमुना में मरने वाला व्यक्ति भगवान् हरि के समान दिव्य देह प्राप्त करता है। वृन्दावन में यमुना पर बने घाट एवं अन्य तीर्थस्थलों का विवरण निम्नलिखित है -

५. वराह घाट श्रीवृन्दावन के दक्षिण-पश्चिमी कोने पर यमुना के पुराने तट पर स्थित है। वराह घाट पर श्रीकृष्ण ने अपने गोपियों की प्रसन्नता के लिए भगवान् वराह का रूप प्रकट किया था। सत्ययुग में हिरण्याक्ष ने धरती का अंधाधुंध खनन करके उसका सन्तुलन बिगाड़ दिया। धरती अपनी धुरी से डगमगा गयी और ब्रह्माण्ड के तल में जा गिरी। चूँकि धरती एक अपवित्र स्थान पर गिर गयी थी इसलिए भगवान् ने एक विशालकाय वराह का रूप लिया और अपने नथुनों पर धरती माता को उठा लिया। धरती को उसकी स्थिति में स्थापित करने के बाद उन्होंने हिरण्याक्ष का वध किया।

मदन टेर

६. वराह मंदिर भक्तिवेदान्त हॉसपीस से लगकर स्थित है। हाल ही में इसकी मरम्मत की गयी है और अब यहाँ लाल पत्थर का सुन्दर मंदिर, आश्रम तथा आँगन है। मंदिर में भगवान् वराह, सीता-राम-लक्ष्मण-हनुमान एवं राधा-कृष्ण के सुन्दर विग्रह हैं।

७. गौतम ऋषि आश्रम वराह घाट के दूसरी ओर स्थित है। ब्रह्माजी द्वारा मन से उत्पन्न किये गये सात पुत्रों में से एक थे गौतम ऋषि। भगवान् राम के समय उन्होंने वैदिक ज्ञान की न्याय शाखा का प्रतिपादन किया। श्रील प्रभुपाद का वंश इन्हीं शक्तिशाली ऋषि की परम्परा में आता है। एक समय गौतम ऋषि ने इन्द्रदेव को उनके शरीर पर एक हजार आँखें होने का शाप दिया। बृहद्भागवतामृत में वृन्दावन इन्द्रदेव का गुणगान करते हैं क्योंकि इन्द्रदेव इतनी सारी आँखों से श्रीकृष्ण की सुन्दरता का दर्शन कर सकते हैं।

८. मदन टेर सूखे यमुना पथ पर है। वराह घाट से आगे चलकर परिक्रमा पथ दायें मुड़ जाता है। इसी स्थान पर श्रीकृष्ण गोपियों के संग का आनन्द लेते थे। एक दिन

भक्तिवेदान्त गौशाला ४०० गायों, बैलों तथा बछड़ों का घर है।

कामदेव वहाँ आया और उसने श्रीकृष्ण के चित्त में काम उत्पन्न करने के लिए अपने जगप्रसिद्ध बाण बाहर निकाले। परन्तु श्रीकृष्ण को उन बाणों से हताहत करने के स्थान पर वह स्वयं श्रीकृष्ण की सुन्दरता से अभिभूत हो गया और मूर्छा खाकर वहीं गिर पड़ा। चूँकि उस स्थान पर कामदेव या मदन श्रीकृष्ण के सौन्दर्य से भ्रमित हो गया था उस स्थान का नाम मदन टेर पड़ा। तब से श्रीकृष्ण का एक नाम हुआ मदनमोहन, अर्थात् मदन को मोहने वाले श्रीकृष्ण। इस समय यहाँ एक छोटे मंदिर के पीछे अत्यन्त सुन्दर वन है।

९. गो घाट - इस घाट पर श्रीकृष्ण के पिता नन्द महाराज ने गायों का दान दिया था। इस समय यहाँ कोई घाट नहीं है, केवल एक हनुमान मंदिर है। मदन टेर और गो घाट के बीच अनेक पुराने बुर्ज, दीवारें एवं उद्यान हैं जहाँ से एक समय यमुना प्रवाहित होती थी।

श्रीकृष्ण ने कालिया सर्प को इसी झील में वश में किया था।
मूल कदम्ब वृक्ष अभी भी यहाँ पर है।

१०. भक्तिवेदान्त स्वामी गोशाला परिक्रमा मार्ग पर गो घाट क्षेत्र में ही है। यहाँ ४०० गाएँ, बैल एवं बछड़े हैं। इन पशुओं की यहाँ आजीवन देखभाल होती है। यहाँ फूलों के बगीचे, फूलों की नर्सरी, गोमाता उत्पाद दुकान, VIHE तथा श्रीविग्रहों का वेशभूषा सिलाई केन्द्र भी है। गोशाला का प्रवेश परिक्रमा मार्ग से भी है और जो भक्त वहाँ आकर गायों को चारा खिलाना या अन्य सेवा करना चाहते हैं, वे आ सकते हैं।

११. कालिय घाट (कालिय ह्रद) - एक विशाल विषैले नाग ने यमुना की एक झील में आश्रय लिया था। उसके विष के प्रभाव से वह पूरा क्षेत्र दूषित हो गया। जो भी पशु, पक्षी या मनुष्य उस झील का पानी पीता, या उस झील के ऊपर से जो भी पक्षी उड़ता वह तुरन्त मर जाता। एक दिन वन में गाएँ चराते समय श्रीकृष्ण की गायों एवं मित्रों को बहुत प्यास लगी और उस झील का जल पीते ही वे सब मर गये। श्रीकृष्ण ने अपनी दृष्टि से उन सबको जीवित किया और तट पर खड़े एक विशाल कदम्ब वृक्ष

कालिया घाट के पीछे प्रबोधानन्द सरस्वती की समाधि तथा भजन-कुटीर है।

पर चढ़ गये। नदी में छलाँग लगाकर उन्होंने कालिय को पराजित किया। श्रीकृष्ण को कालिय के फणों पर नृत्य करते देख व्रजवासियों को अत्यन्त आनन्द हुआ और बाद में श्रीकृष्ण ने उस नाग का अपनी विशेष कृपा दी। श्रीकृष्ण ने कालिय को वहाँ से चले जाने का आदेश दिया और वह सपरिवार रमणक द्वीप (फीजी) चला गया। उस स्थान पर वह कदम्ब वृक्ष आज भी है जो भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों के स्पर्श से अमर हो गया है। हाल ही में इस घाट का मरम्मत कार्य किया गया है, यद्यपि इस स्थान से अब यमुना नहीं बहती है।

१२. प्रबोधानन्द सरस्वती समाधि और भजन कुटीर कालिय घाट पर कदम्ब वृक्ष के पीछे है। वे गोपालभट्ट गोस्वामी के चाचा थे और श्रीचैतन्य महाप्रभु के महान् भक्त थे। उनके द्वारा लिखी कुछ पुस्तकें हैं, संगीत माधव, नवद्वीप शतक, चैतन्य चन्द्रामृत, राधारस सुधानिधि और वृन्दावन महिमामृत। गोलोक वृन्दावन में वे अष्टसखियों में से एक तुंगविद्या गोपी के रूप में श्रीराधारानी की सेवा करती हैं।

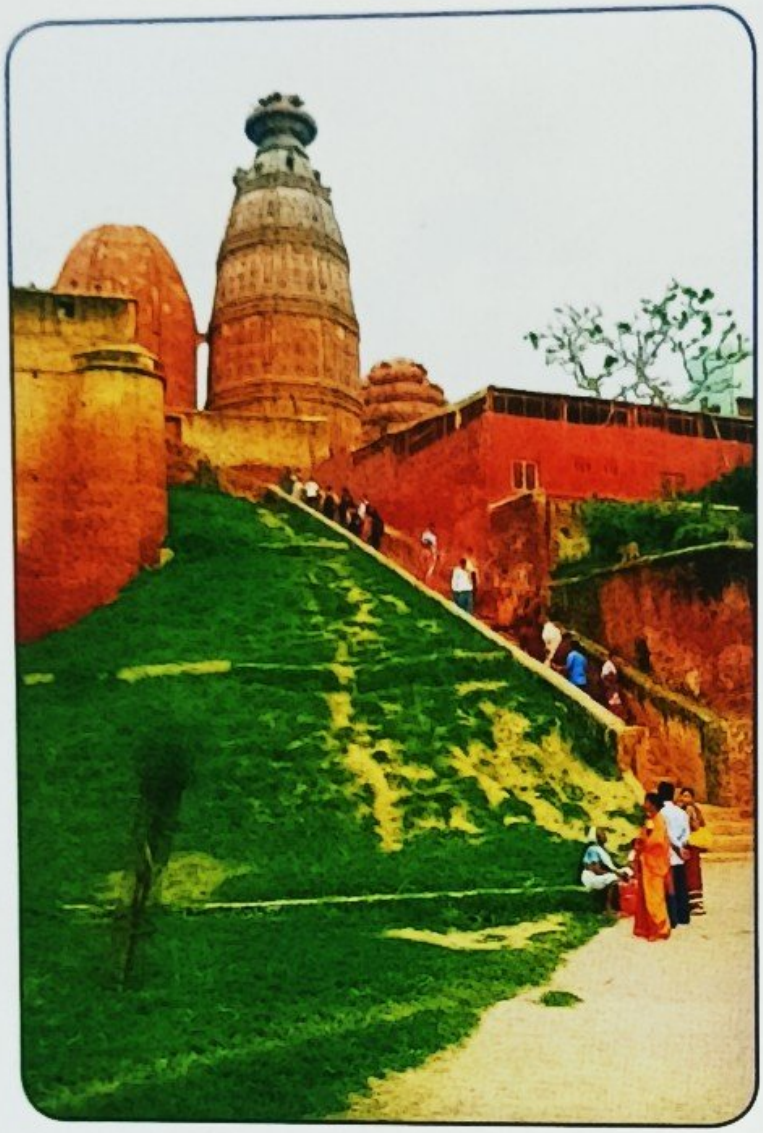

मूल श्रीमदनमोहन मन्दिर द्वादशादित्य-तीर्थ पहाड़ी पर बनाया गया था।

१३. गोपाल घाट - इस घाट पर नन्द महाराज एवं यशोदा मैया बैठे थे। कालिय को परास्त करने के बाद श्रीकृष्ण यमुना तट पर आये और नन्द महाराज एवं यशोदा मैया यहीं श्रीकृष्ण को अपनी गोद में लेकर बैठे थे। द्रवित हृदयों एवं अश्रूपूरित नेत्रों से वे श्रीकृष्ण के प्रत्येक अंग को जाँच रहे थे। इसी घाट पर श्रीनन्द महाराज ने श्रीकृष्ण के कल्याणार्थ ब्राह्मणों को अनेक गाएँ दान में दी थीं।

१४. द्वादशादित्य तीर्थ - पुराणों के अनुसार यह तीर्थ मनुष्य की समस्त कामनाएँ पूरी करता है। घण्टों यमुना में रहकर कालिय से युद्ध करने के बाद श्रीकृष्ण को ठण्ड लगने लगी। वे इस पहाड़ी पर चढ़े और उन्हें गर्मी प्रदान करने के लिए एक-साथ बारह सूर्य वहाँ प्रकट होकर उनकी स्तुति करने लगे। बारह को संस्कृत में द्वादश कहते हैं। उनकी गर्मी से भगवान् को पसीना आने लगा और उस पसीने से पहाड़ी की तलहटी में एक सरोवर का निर्माण हुआ। व्रजविलासस्तव में वर्णन है - "एक दिन अपने गोप मित्रों, गोपियों तथा सुरभि गायों के साथ परम ऐश्वर्यशाली, कुलीन तथा उदार श्रीकृष्ण को ठण्ड लगने लगी। उसी समय आकाश में बारह सूरज एकसाथ प्रकट हुए और भक्तिभाव से अपने तीव्र तेज द्वारा भगवान् को गरमाहट प्रदान की। मैं सदा उस पवित्र स्थान का आश्रय लेता हूँ जो द्वादशादित्य-तीर्थ के नाम से विख्यात् है।" कुछ समय पूर्व इस पहाड़ी पर सूर्यदेव का एक मंदिर था परन्तु बाद में उसे नष्ट कर दिया गया। मूल मदनमोहन मंदिर इसी पहाड़ी पर स्थित है।

श्रीमदनमोहन मन्दिर

१५. प्रस्कन्दन घाट - बारह सूर्यों की गर्मी से भगवान् की ठण्डी देह गरम हो गयी और उन्हें पसीना आने लगा। वह पसीना यमुना नदी में प्रविष्ट हुआ और इसलिए वह स्थान प्रस्कन्दन तीर्थ कहलाया। व्रजविलास स्तव वर्णन करती है - "इस महान् तीर्थ का उद्गम बारह सूर्यों की अत्यधिक गर्मी के कारण निकले भगवान् गोविन्द के पसीने से हुआ है। मैं प्रस्कन्दन क्षेत्र को नमन करता हूँ जो भगवान् के सुकोमल शरीर से निकले सुगन्धित जल से भरा है।

१६. सूरज घाट - भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन प्राप्त करने के लिए सूर्यदेव ने इस स्थान पर तपस्या की थी। यह घाट द्वादशादित्य टीले के नीचे स्थित है।

१७. मदनमोहन मंदिर द्वादशादित्य टीले के ऊपर स्थित है। यह वृन्दावन का पहला विशाल मंदिर है जिसका निर्माण १५८० में हुआ। बाद में औरंगजेब ने इसे बहुत क्षति पहुँचायी और अब यह भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा संरक्षित है। श्रीसनातन गोस्वामी

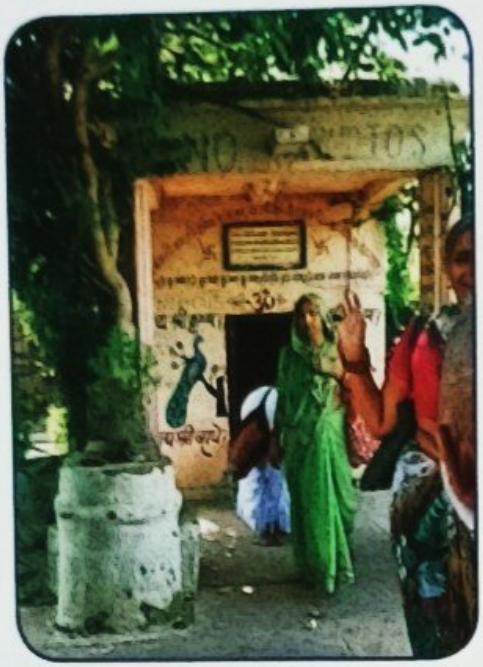

श्रीसनानत गोस्वामी की भजन-कुटीर (बाएँ) तथा समाधि (दाहिने) है।

द्वादशादित्य टीले पर रहते हुए मदनगोपाल विग्रह की सेवा करते थे। वे व्रजवासियों से आटा माँगकर लाते और उसकी बाटी बनाकर भगवान् को भोग लगाते। एक दिन मदनगोपाल ने सनातन गोस्वामी से निवेदन किया कि वे उन्हें बाटी के साथ थोड़ा नमक भी दें। सनातन गोस्वामी ने खेद व्यक्त किया कि उनके पास नमक नहीं है। मदनगोपाल ने ऐसी व्यवस्था की कि एक नमक के व्यापारी की नौका यमुना में फँस गयी। बालक का रूप लेकर मदनगोपाल ने व्यापारी से कहा कि सनातन गोस्वामी नौका को मुक्त करने में सहायता कर सकते हैं। भगवान् की योजना भाँपकर सनातन गोस्वामी ने उस व्यापारी की सहायता की और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए आगरा के उस व्यापारी श्रीरामदास कपूर ने लाल पत्थर में मदनगोपाल या मदनमोहन के लिए एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया। मदनमोहन के मूल विग्रह १६७० में पहले जयपुर तथा बाद में करौली स्थानान्तरित किये गये।

१८. सनातन गोस्वामी की भजन कुटीर मदनमोहन मंदिर के पीछे द्वादशादित्य टीले पर स्थित है। मंदिर निर्माण से पूर्व सनातन गोस्वामी यहीं एक वृक्ष के नीचे मदनगोपाल या मदनमोहन की सेवा करते थे।

१९. सनातन गोस्वामी की समाधि पहाड़ी के नीचे है। उनकी समाधि के निकट ही श्रीचैतन्य महाप्रभु के दो निकट पार्षद श्रीचन्द्रशेखर आचार्य एवं श्रीतपन मिश्र की समाधि

मदनमोहन का नया मन्दिर जहाँ अब प्रतिभू अर्चाविग्रह की पूजा होती है।

है। इन दोनों ने महाप्रभु की वाराणसी यात्रा के दौरान उनकी सेवा की थी। यहाँ एक ग्रंथ समाधि भी है।

२०. नव-मदनमोहन मंदिर - मुसलमानों द्वारा मूल मदनमोहन मंदिर को विध्वंस करने के बाद यहाँ नव-मदनमोहन मंदिर का निर्माण किया गया। यहाँ मदनमोहन की प्रतिभू मूर्तियों की पूजा होती है क्योंकि मंदिर के विध्वंस से पहले मूल विग्रहों को जयपुर स्थानान्तरित कर दिया गया था। मंदिर खण्डित होने के बाद वहाँ पूजा नहीं की जा सकती। बाद में मदनमोहन को करौली ले जाया गया।

२१. अद्वैत वट - जिस वृक्ष के नीचे अद्वैताचार्य रहा करते थे वह अद्वैत वट के नाम से विख्यात हो गया। अद्वैतवट के दर्शनमात्र से व्यक्ति के पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे भक्ति प्रेम की दुर्लभ भेंट प्राप्त होती है। यहीं अद्वैताचार्य मदनगोपाल की पूजा-सेवा किया करते थे। उन्होंने मदनगोपाल की सेवा मथुरा के श्रीचौबे को सौंपी और उस ब्राह्मण ने मदनगोपाल सनातन गोस्वामी को दिये। इस वृक्ष के पास राधा-कृष्ण का सुन्दर मंदिर है।

२२. अष्टसखी मंदिर - द्वादशादित्य टीला से लगकर पहाड़ी पर स्थित है। अष्ट सखियों के नाम इस प्रकार हैं - ललिता, विशाखा, चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, तुंगविद्या, रंगदेवी एवं सुदेवी।

अद्वैताचार्य इस वट वृक्ष के नीचे मदनमोहन की पूजा करते थे

अष्टसखी मन्दिर में श्री श्रीराधाकृष्ण और अष्ट सखियाँ

२३. बाँके बिहारी मंदिर परिक्रमा मार्ग से कुछ ही दूरी पर स्थित है। बाँके बिहारी के विग्रह निधिवन में स्वामी हरिदास के सम्मुख प्रकट हुए थे। स्वामी हरिदास श्रीचैतन्य महाप्रभु के समकालीन थे। पहले बाँके बिहारी की सेवा-पूजा निधिवन में ही होती थी परन्तु १८६२ में उनके लिए इस मंदिर का निर्माण किया गया। कहा जाता है कि वे राधा-कृष्ण के संयुक्त रूप हैं।

२४. युगल घाट - परिक्रमा मार्ग पर थोड़ा आगे जाने पर एक छोटा चौराहा आता है। उसकी बायीं ओर यमुना नदी पर युगल घाट है। एक समय यह स्नान के लिए अच्छा स्थान हुआ करता था, परन्तु अब नगरपालिका का गंदा पानी यहाँ बहता है। इस स्थान पर युगल राधा-कृष्ण स्नान किया करते थे इसलिए इसका नाम युगल घाट पड़ा। चौराहा राधा-वल्लभ चौक नाम से विख्यात है क्योंकि वहाँ से दायें राधा-वल्लभ मंदिर का मार्ग जाता है।

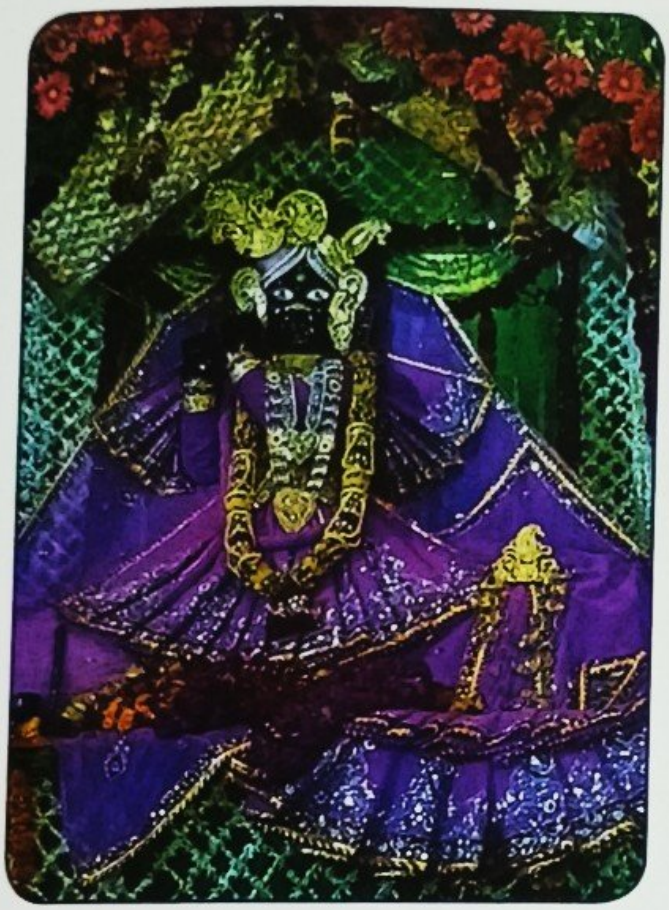

श्रीबाँके बिहारी

श्रीराधा-वल्लभजी

२५. राधा-वल्लभ मंदिर की स्थापना श्रीहित हरिवंश ने १५३५ में की थी। मूल मंदिर का निर्माण मुगल सम्राट् अकबर की अनुमति से हुआ था परन्तु १६७० में वृन्दावन के मंदिरों को ध्वस्त करने के लिए भेजी गयी औरंगजेब की सेनाओं ने इसे ध्वस्त कर दिया। इस समय श्री श्रीराधा-वल्लभजी बाँके बिहारी मंदिर के निकट एक नये मंदिर में सेवित हैं। दोनों मंदिर के बीच सड़क पर ही दाउजी का मंदिर है।

२६. नृसिंह मंदिर राधा-वल्लभ मंदिर के निकट है। तीन नेत्रों वाले शक्तिशाली नृसिंहदेव के साथ लक्ष्मीदेवी एवं प्रह्लाद महाराज के विग्रह भी हैं। कई बार वेदी पर भगवान् वराह भी प्रकट हो जाते हैं। भगवान् नृसिंह एवं वराहदेव ने असुर भाइयों हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु का वध करने हेतु अवतार लिया था।

भगवान् नृसिंहदेव लक्ष्मीदेवी तथा श्रीप्रह्लाद महाराज के साथ

२७. भट्टजी मंदिर की स्थापना रघुनाथभट्ट गोस्वामी के शिष्य श्रीगदाधर भट्ट गोस्वामी ने की थी। मंदिर में श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा रघुनाथभट्ट गोस्वामी को दी गयी श्रीमद्भागवतम् की प्रति भी रखी है। साथ ही वहाँ रघुनाथभट्ट गोस्वामी के व्यासासन एवं उनकी पादुकाओं के दर्शन भी किये जा सकते हैं।

२८. विहार घाट - विहार का अर्थ है आनन्दभरी लीलाएँ। इस घाट पर श्रीकृष्ण ने राधारानी के साथ आनन्द विहार किया था। पहले इस घाट से यमुना नदी प्रवाहित होती थी परन्तु अब यमुना का मार्ग बदल गया है। इस घाट पर युगलविहारजी का मंदिर भी है।

२९. भीम घाट - यह घाट पाण्डवों में से एक भीमसेन का स्नान करने का प्रिय घाट था। बारह वर्ष के वनवास के दौरान पाण्डवों ने कुछ समय व्रज में बिताया। यद्यपि उन्होंने अपना अधिकांश समय काम्यवन में व्यतीत किया, कभी-कभी वे वृन्दावन भी आया करते थे।

जब यमुना नदी घाटों के साथ बहती थी उस दौरान बाढ़ के समय परिक्रमा-पथ

३०. अन्ध-घाट - इस घाट के निकट ही वह स्थान है जहाँ श्रीकृष्ण और गोपियाँ एक दूसरे की आँखें बन्द करके आँख-मिचौनी का खेल खेलते थे। एक गोपी दूसरी गोपी की आँखें अपने हाथों से बन्द करती जबकि श्रीकृष्ण तथा अन्य गोपियाँ यमुना के तट पर जंगल में छिप जाती थीं। यह गोपी शीघ्र ही श्रीकृष्ण तथा अन्य गोपियों को पहचान लेती। प्रत्येक गोपी की गोपी समूह को ढूँढ़ने की बारी होती। जब कृष्ण की बारी आती तो गोपियाँ इस तरह छिपती कि कृष्ण किसी भी गोपी को ढूँढ़ नहीं पाते। तब वे अपनी पराजय स्वीकार कर लेते और गोपियाँ जंगल से बाहर आ जाती और मधुरता से उन पर हँसती। चूँकि आँख-मिचौनी का खेल यहाँ आँखें बन्द करके खेला जाता, इसलिए यह स्थान अन्धा (अंधों का स्थान) या अन्ध-घाट कहलाता है। वहाँ इस घाट के कोई पूर्वावशेष नहीं है, यद्यपि यह क्षेत्र भीम घाट तथा इमली तला के मध्य में है।

३१. इमली तला घाट - यह तीर्थस्थान यमुना के घाट पर स्थित है और यहाँ भगवान् श्रीकृष्ण के समय का एक इमली वृक्ष स्थित है। राधा-कृष्ण इस वृक्ष के नीचे मिला

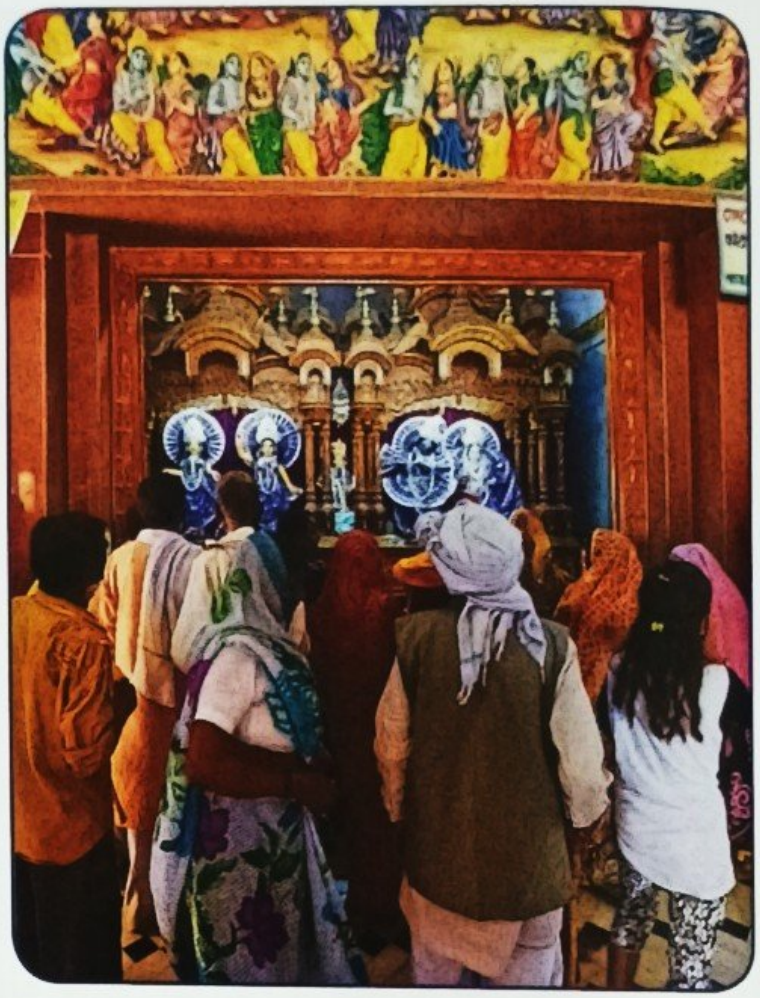

श्री श्रीराधाकृष्ण और बाद में श्रीचैतन्य महाप्रभु इमली तला पर बैठते थे

करते थे। कई बार श्रीकृष्ण राधारानी के स्मरण में इतने तल्लीन हो जाते कि उनका रंग श्यामल से स्वर्णिम हो जाता और इसी प्रकार श्रीकृष्ण के स्मरण में राधारानी का रंग स्वर्णिम से श्यामल हो जाता। श्रीचैतन्य महाप्रभु अपनी वृन्दावन यात्रा के दौरान प्रतिदिन यमुना पर आते और इस वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान किया करते। श्रील सनातन गोस्वामी ने यहाँ श्री-श्रीगौरनिताइ की पूजा-सेवा स्थापित की। श्रीचैतन्य महाप्रभु श्रीमती राधारानी के भाव में श्रीकृष्ण ही हैं और श्रीकृष्ण के प्रति राधारानी के प्रेम का अनुभव करने के लिए इस रूप में अवतरित हुए। कलह और दम्भ के कलियुग में उन्होंने हरिनाम संकीर्तन - हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे - द्वारा मुक्त रूप से भगवद्प्रेम वितरित करने के लिए अवतार लिया। इमली तला विशेष रूप से श्रीचैतन्य महाप्रभु के अनुयायी गौडीय वैष्णवों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तेंतुली ताल नामक इमली का वृक्ष अत्यन्त प्राचीन था और श्रीकृष्ण की लीलाओं के समय से यहाँ था। श्रीचैतन्य महाप्रभु इस प्राचीन इमली वृक्ष के नीचे बैठकर हरिनाम जप करते। अपनी पूर्व लीलाओं का स्मरण

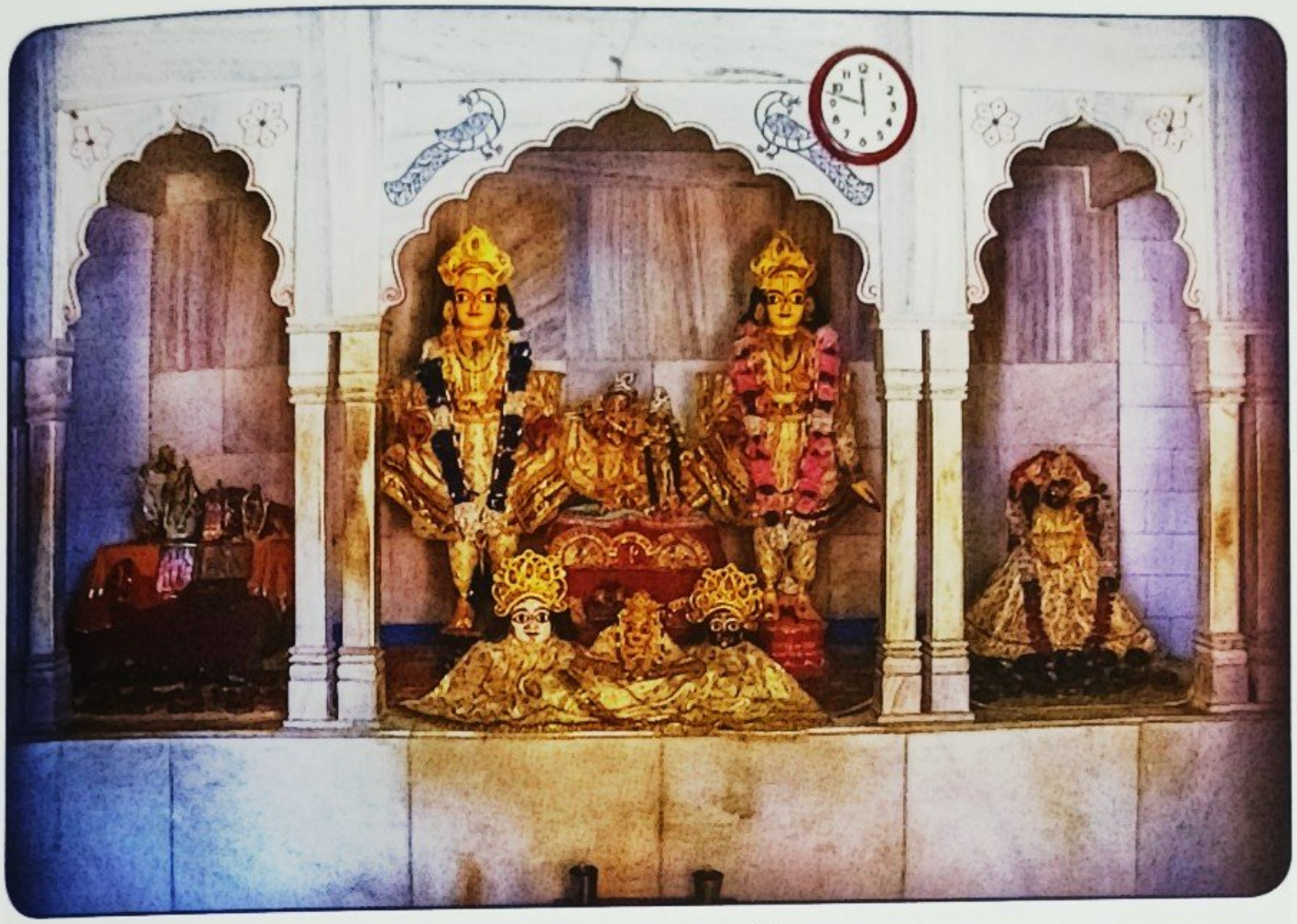

शृंगार-वट पर अर्चाविग्रह

करके श्रीचैतन्य महाप्रभु यहाँ बैठते और असीम आनन्द का अनुभव करते। इस स्थान को गौरांग घाट भी कहते हैं।

३२. शृंगार वट घाट - यहाँ एक वटवृक्ष स्थित है जिसके नीचे श्रीकृष्ण राधारानी का शृंगार किया करते थे। मंदिर प्राँगण में इस लीला पर बना एक चित्र लगा है। श्रीकृष्ण के ग्वालमित्रों भी यमुना में स्नान करते हुए इस स्थान पर श्रीकृष्ण का शृंगार किया करते थे। अपनी वृन्दावन यात्रा के दौरान नित्यानन्द प्रभु ने इस स्थान पर निवास किया और इसलिए कई बार इसे नित्यानन्द वट भी कहा जाता है। इसी स्थान पर श्रीकृष्ण सुबल एवं अन्य ग्वालमित्रों की प्रसन्नातार्थ विविध प्रकार से अपना शृंगार किया करते थे। कुछ समय पूर्व यहाँ एक अत्यन्त घना कुँज हुआ करता था।

३३. झाडू मण्डल गोविन्द घाट क्षेत्र में आता है। इस स्थान से जुड़ी अनेक कथाएँ हैं। यहाँ एक ऊखल रखी है जिसके ऊपर श्रीकृष्ण के चरणचिह्न अंकित हैं। एक समय

झाड़ू मंडल पर कृष्ण के पदचिह्नों से अंकित चक्की

एक बूढ़ी विधवा यहाँ रहा करती थी जो भोर होने से पहले ऊखल में अनाज पीसा करती। उसकी आवाज से भक्तों को कष्ट होता, इसलिए एक दिन श्रीकृष्ण वहाँ आये और ऊखल पर अपना पैर रखकर उसे रोकने के लिए कहा। कहा जाता है कि झाड़ू मण्डल ही वह स्थान है जहाँ श्यामानन्द पण्डित को श्रीमती राधारानी से तिलक प्राप्त हुआ था। इस स्थान पर एक अत्यन्त प्राचीन जामुन वृक्ष खड़ा है।

३४. गोविन्द घाट - रासलीला में अदृश्य होने के बाद इसी स्थान पर श्रीकृष्ण गोपियों के सम्मुख पुनः प्रकट हुए और उन्हें दिव्य आनन्द में सराबोर कर दिया। गोपियों ने प्रेमपूर्वक श्रीकृष्ण को इस स्थान पर विराजित किया और देर समय तक उनके साथ चर्चा करती रहीं। इसी स्थान पर श्रीकृष्ण ने अपना महारास आरम्भ किया। करोड़ों गोपियों से घिरे श्रीकृष्ण ने अपनी रासलीला का भरपूर आनन्द लिया। रासलीला की वह आनन्दभरी रात्रि

रास-नृत्य

एक कल्प जितनी बड़ी हो गयी। नारियों में शिरोमणि गोपियों के संग में सबका मन हरने वाले श्रीकृष्ण ने दक्षतापूर्वक रासनृत्य का आनन्द लिया। श्रीमद्भागवतम् (१०.३३.२-९) में रासनृत्य का वर्णन मिलता है। यमुनातट पर श्रीगोविन्द ने नारियों में सर्वश्रेष्ठ श्रद्धालु गोपियों के साथ रासनृत्य आरम्भ किया और गोपियों ने प्रसन्नतापूर्वक एक-दूसरे का हाथ पकड़कर एक विशाल घेरा बना लिया। तब भगवान् श्रीकृष्ण ने अपना विस्तार किया और प्रत्येक गोपी के साथ घेरे में सम्मिलित हो गये। जब योगीराज श्रीकृष्ण ने अपनी भुजाएँ गोपियों के गलों में डाली तो प्रत्येक गोपी ने यही सोचा कि श्रीकृष्ण केवल उसके साथ खड़े हैं। रासलीला को देखकर देवतागण और उनकी पत्नियाँ उत्सुकतावश भावविभोर हो उठे और इस प्रकार आकाश सैकड़ों दिव्य विमानों से भर गया। जब श्रीराधा ने श्रीकृष्ण को नृत्य करते हुए देखा तो वे वहाँ से चली गयीं। राधारानी को वहाँ से अदृश्य देखकर

श्री श्रीराधा-दामोदर मन्दिर के अर्चाविग्रह

श्रीकृष्ण भी रासमण्डल छोड़कर राधारानी की खोज करने लगे। खोजते-खोजते श्रीकृष्ण इस स्थान पर आये और राधारानी के साथ मिलकर लीलाएँ की। इसलिए सब लोग इस स्थान को गोविन्द घाट कहते हैं। इस स्थान को देखने मात्र से व्यक्ति की सारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

३५. श्री श्रीराधा-दामोदर मंदिर का निर्माण श्रील जीव गोस्वामी ने १५४२ में किया था। श्री श्रीराधा-दामोदर के विग्रह उन्हें श्रील रूप गोस्वामी से प्राप्त हुए। मंदिर परिसर में श्रील रूप गोस्वामी के समाधि मंदिर के साथ श्रील जीव गोस्वामी, श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी एवं श्रील भूगर्भ गोस्वामी की समाधि तथा श्री श्रीमद् ए.सी.भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद की भजन कुटीर है। वेदी पर श्रील कृष्णदास कविराज द्वारा सेवित श्री श्रीराधा-वृन्दावनचन्द्र, ललितादेवी के साथ राधा-दामोदर, श्रील जयदेव गोस्वामी के राधा-माधव तथा भूगर्भ गोस्वामी के श्रीराधा-छैलचिकन भी हैं। यहाँ वह शिला भी है जिसपर अपने चरणचिह्न अंकित करके श्रीकृष्ण ने सनातन गोस्वामी को दी थी।

३६. लोटन कुँज - राधा-दामोदर मंदिर के निकट ही है। लोटन का अर्थ है धूल में लोटना। एक दिन श्रीकृष्ण से विरह का अनुभव करते हुए श्रीराधारानी इस स्थान पर लोटने लगीं। सहसा श्रीकृष्ण प्रकट हो गये और इस कुँज में दोनों का मिलन हुआ। अब यहाँ श्रीनिताइ-गौर के विग्रहों की पूजा-सेवा की जाती है।

श्रीमती पौर्णमासी मन्दिर

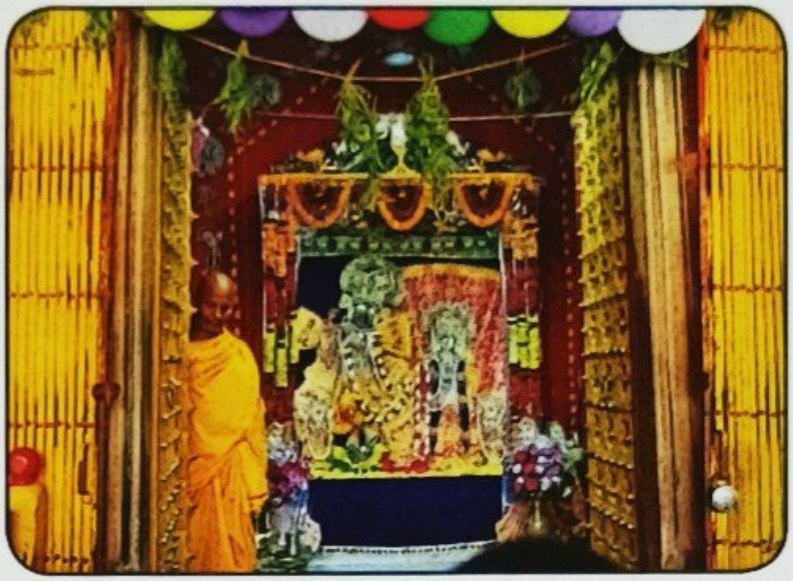

श्री श्रीराधा-श्यामसुन्दर मन्दिर

३७. सेवा कुँज में श्रीराधा-कृष्ण अपनी रासलीला करते थे। कई बार राधा-कृष्ण पूरी रात गोपियों के साथ नृत्य एवं लीलाएँ करने में यहाँ बिता देते। राधा-कृष्ण की लीलाओं से जुड़ा यहाँ रंगमहल नामक एक मंदिर है। आज सेवा कुँज के चारों ओर ऊँची दीवार बना दी गयी है, जबकि पहले वृन्दावन के चारों ओर परिक्रमा मार्ग के भीतर का सारा क्षेत्र मूल सेवा कुँज था। सेवा कुँज में श्रीकृष्ण ने राधारानी की अंतरंग सेवा की और जब रासलीला में नृत्य करके राधारानी थक गयीं तो श्रीकृष्ण ने यहीं उनके चरणों को दबाया। यहाँ ललिता कुण्ड भी है जिसका निर्माण श्रीकृष्ण ने अपनी बाँसुरी से किया।

३८. पौर्णमासी मंदिर सेवा कुँज से कुछ मीटर दूरी पर है। पौर्णमासी योगमाया हैं। वे श्रीकृष्ण की प्रमुख शक्ति हैं जो वृन्दावन में राधा-कृष्ण की लीलाओं की व्यवस्था करती हैं। पौर्णमासी श्रीनारदमुनि की शिष्या हैं और सान्दिपनी मुनि की माता एवं मधुमंगल तथा नन्दिमुखी की दादी हैं।

३९. सीतानाथ मंदिर सेवा कुँज की पश्चिमी दिशा में हैं। यह सीतादेवी के पति श्रीअद्वैताचार्य का मंदिर है, इसलिए वे श्रीसीतानाथ के नाम से भी जाने जाते हैं। यहाँ श्रीअद्वैताचार्य के वंशज श्रीसीतानाथ एवं श्रीमदनगोपाल की सेवा-पूजा करते हैं।

४०. राधा-श्यामसुन्दर मंदिर वह स्थान है जहाँ श्यामसुन्दर के छोटे विग्रह श्रीबलदेव विद्याभूषण द्वारा स्थापित बड़े विग्रहों के साथ पूजित हैं।

शालग्राम मन्दिर

मुरारि गुप्त के गौर-निताइ विग्रह

४१. श्यामानन्द समाधि और तिलक स्थान वह स्थान है जहाँ श्यामानन्द पण्डित को श्रीमती राधारानी से तिलक चिह्न के साथ श्रीश्यामसुन्दर के विग्रह प्राप्त हुए। अब इन विग्रहों की सेवा राधा-श्यामसुन्दर मंदिर में की जाती है। यहीं उनकी पुष्प समाधि भी है।

४२. शालग्राम मंदिर राधा-श्यामसुन्दर मंदिर के सामने लोई बाजार की दिशा में स्थित है। यहाँ श्री श्रीसीता-राम-लक्ष्मण के साथ अनेक शालग्राम शिलाओं की पूजा की जाती है।

४३. मुरारि गुप्त के गौर-निताइ विग्रहों को प्रेमपूर्वक "पिशिमा के विग्रह" भी कहा जाता है क्योंकि वृन्दावन में कुछ समय पूर्व चन्द्राससी नामक एक भक्तिन उनकी सेवा किया करती थीं। मूल रूप से मुरारि गुप्त मायापुर में राम-लक्ष्मण के भाव में इनकी सेवा किया करते थे।

४४. बनखण्डेश्वर महादेव मंदिर - वृन्दावन में अपने निवास के दौरान सनातन गोस्वामी प्रतिदिन पैदल चलकर गोपीश्वर महादेव के दर्शन करने जाया करते थे। वृद्धावस्था में उनके लिए यह कठिन होने लगा। तब भगवान् शिव उनके समक्ष प्रकट हुए और कहा कि वे निकट ही बनखण्डेश्वर महादेव के रूप में विराजित हैं और उनका दर्शन करने के लिए सनातन गोस्वामी को इतनी दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। यह मंदिर लोई बाजार के अंत पर तिराहा पर स्थित है।

बनखण्डी महादेव

मीराबाई मन्दिर

४५. किशोर वन सेवा कुँज के साथ एक कुँज है, परन्तु इसका प्रवेश द्वार लोई बाजार से हटकर बनी एक छोटी गली में है। कहा जाता है कि श्रील व्यासदेव ने इसी स्थान पर श्रीराधा-युगलकिशोर के विग्रह प्रकट किये थे।

४६. मीराबाई मंदिर वह स्थान है जहाँ मीराबाई अपनी वृन्दावन यात्रा के दौरान रही थीं। इस मंदिर में श्री श्रीराधा-मनोहर के विग्रहों की पूजा की जाती है और साथ ही करताल बजाते हुए मीराबाई की भी एक मूर्ति है। उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण पर अनेक गीत लिखे जो अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। वे छह गोस्वामियों की समकालीन थीं और उन्होंने श्रीचैतन्य महाप्रभु का श्रीकृष्ण के रूप में गुणगान करते हुए एक गीत भी लिखा है।

४७. चीर घाट या छयन घाट वह स्थान है जहाँ केशि का वध करने के बाद श्रीकृष्ण ने विश्राम किया था। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने भी इस स्थान पर विश्राम किया था। यहाँ एक कदम्ब वृक्ष है जो चीर कदम्ब कहलाता है। एक दिन रासलीला करने के बाद राधा-कृष्ण अपनी सखियों के साथ यहाँ आये और स्नान किया। अपने वस्त्र एवं आभूषण एक नीम वृक्ष के नीचे रखकर उन्होंने केवल अंतर्वस्त्र पहनकर यमुना के जल में प्रवेश किया। रासलीला में नृत्य करने से वे सब थक गये थे और यमुना के शीतल जल का स्पर्श करते ही उनकी सारी थकान दूर हो गयी और उन्होंने स्फूर्ति का अनुभव किया। जलक्रीड़ा करते समय

शाहजी मन्दिर

षड्भुज महाप्रभु मन्दिर

वे सब यमुना में लगे असंख्य कमलफूलों के बीच खेलने लगे। तब गोपियों से छिपकर श्रीकृष्ण तट पर आये और गोपियों के वस्त्र छिपाकर पुनः यमुना में लौट गये। जलक्रीड़ा के पश्चात् जब गोपियाँ तट पर आयीं तो अपने वस्त्रों को न देखकर चिन्तित हो गयीं। उस अद्भुत दृश्य को देखकर श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ कुछ विनोद करके उनके वस्त्र लौटा दिये।

४८. शाहजी मंदिर का निर्माण १८७६ में श्री श्रीराधारमण के लिए हुआ था परन्तु राधारमण अपना मूल मंदिर छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुए। शाहजी मंदिर में अनेक उद्यान हैं, अनेक कक्ष हैं और संगमरमर के सुन्दर स्तम्भ हैं। इसमें एक कक्ष वर्ष में वसन्त पंचमी के अवसर पर केवल दो दिन के लिए खोला जाता है जिससे वहाँ के विग्रह श्री श्रीछोटा-राधारमण कमरे में लगे झाड़फनूसों का आनन्द ले सकें।

४९. षड्भुज महाप्रभु मंदिर - भगवान् ने अपना यह षड्भुज रूप रामानन्द राय और सार्वभौम भट्टाचार्य को दिखाया था। श्रीचैतन्य महाप्रभु के भक्त इस रूप की पूजा करते हैं। इनके दो हाथों में श्रीचैतन्य महाप्रभु का संन्यास दण्ड एवं जलपात्र है, दो हाथों में श्रीराम के धनुष-बाण हैं और दो हाथों से वे बाँसुरी बजा रहे हैं। गौडीय वैष्णव परम्परा में आये श्रीजगन्नाथदास बाबाजी महाराज के इन विग्रह की सेवा करते थे।

श्री श्रीराधा-गोकुलानन्द मन्दिर की वेदी

५०. भ्रमर घाट या भौंरा घाट - एक दिन जब राधा-कृष्ण इस घाट पर बैठे थे तो उनके अंगों से आ रही मधुर सुगन्ध से आकर्षित होकर भौंरों का एक झुण्ड आकर उनके ऊपर मण्डराने लगा। इसी स्थान पर सूरदास बिल्वमंगल ठाकुर ने अपना भजन किया था।

५१. श्री श्रीराधा गोकुलानन्द मंदिर वृन्दावन के सात प्रमुख मंदिरों में से एक है। इस मंदिर में श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर द्वारा सेवित श्रीगोकुलानन्द के विग्रह; श्रील नरोत्तमदास ठाकुर द्वारा सेवित श्रीचैतन्य महाप्रभु के प्रतिभू विग्रह; श्रील लोकनाथ गोस्वामी द्वारा सेवित राधाविनोद के प्रतिभू विग्रह; श्रील बलदेव विद्याभूषण के राधा-विजयगोविन्द विग्रह तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा श्रील रघुनाथदास गोस्वामी को दी गयी गोवर्धन शिला है। मंदिर के बायीं ओर प्राँगण में लोकनाथ गोस्वामी की समाधि एवं भजनकुटीर, श्रील नरोत्तमदास ठाकुर की पुष्प समाधि एवं उनकी कुछ निजी वस्तुएँ, गंगानारायण चक्रवर्ती की समाधि तथा विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर की समाधि है।

श्रीश्री राधा-रमणजी

५२. राधारमण मंदिर की सेवा-पूजा श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी करते थे। इससे पूर्व वे शालग्राम शिलाओं की पूजा करते थे जिनमें से एक शिला स्वयं श्री श्रीराधारमण के सुन्दर रूप में परिवर्तित हो गयी। राधारमणजी का रूप अत्यन्त सुन्दर है। उनके चरण श्रीमदनमोहन के समान हैं, मुखारविन्द श्रीगोविन्द के समान तथा विशाल वक्षस्थल श्रीगोपीनाथ के समान है। श्रीराधारमण के साथ श्रीमती राधारानी के विग्रह नहीं हैं, उनके स्थान पर राधारानी की उनके वस्त्रों एवं मुकुट के रूप में पूजा की जाती है।

५३. राधारमण प्राकट्य स्थली राधारमण मंदिर से बिल्कुल लगकर है। यहाँ गोपालभट्ट गोस्वामी की समाधि है। इसी स्थान पर राधारमण नृसिंह चतुर्दशी की रात उसी प्रकार एक शालग्राम शिला से प्रकट हो गये थे जिस प्रकार नृसिंहदेव स्तम्भ से प्रकट हुए थे। शालग्राम शिला स्वेच्छा से राधारमण विग्रह बन गयी जिनके छोटे-छोटे सुन्दर दाँत तथा उँगलियों के नाखून भी हैं। उनके शरीर पर नक्काशी के कोई चिह्न दिखायी नहीं देते और शालग्राम शिला के अवशेष अभी भी उनके चरणकमलों के पास देखे जा सकते हैं।

निधिवन के बहुत से कल्पवृक्षों में से एक वृक्ष

५४. गोपालभट्ट गोस्वामी समाधि राधारमण मंदिर के बराबर में है। गोपालभट्ट गोस्वामी का जन्म श्रीरंगम् के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। जब श्रीचैतन्य महाप्रभु चातुर्मास्य के दौरान उनके घर में रहे तो बालक गोपाल ने उनकी सेवा की। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने उन्हें दीक्षा दी और कहा कि वे अपने माता-पिता के वैकुण्ठगमन के पश्चात् वृन्दावन आ जायें। वृन्दावन में गोपालभट्ट गोस्वामी ने श्री श्रीराधारमण की सेवा की और भक्ति से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थ लिखे।

५५. निधिवन में राधा-कृष्ण ने गोपियों के साथ अनेक अंतरंग लीलाएँ की हैं। इस कुँज में बने एक कक्ष में एक बिस्तर है जिसे प्रतिदिन सायं समय सजाया जाता है। मान्यता है कि यहाँ श्रीकृष्ण अपनी प्रिया श्रीराधिका के साथ यहाँ लीला करने आते हैं। सूरज छिपने के बाद यहाँ किसी को भीतर प्रवेश की अनुमति नहीं है। इसी कुँज में स्वामी हरिदास की समाधि है। यहीं बाँके बिहारीजी स्वामी हरिदास के सम्मुख प्रकट हुए थे।

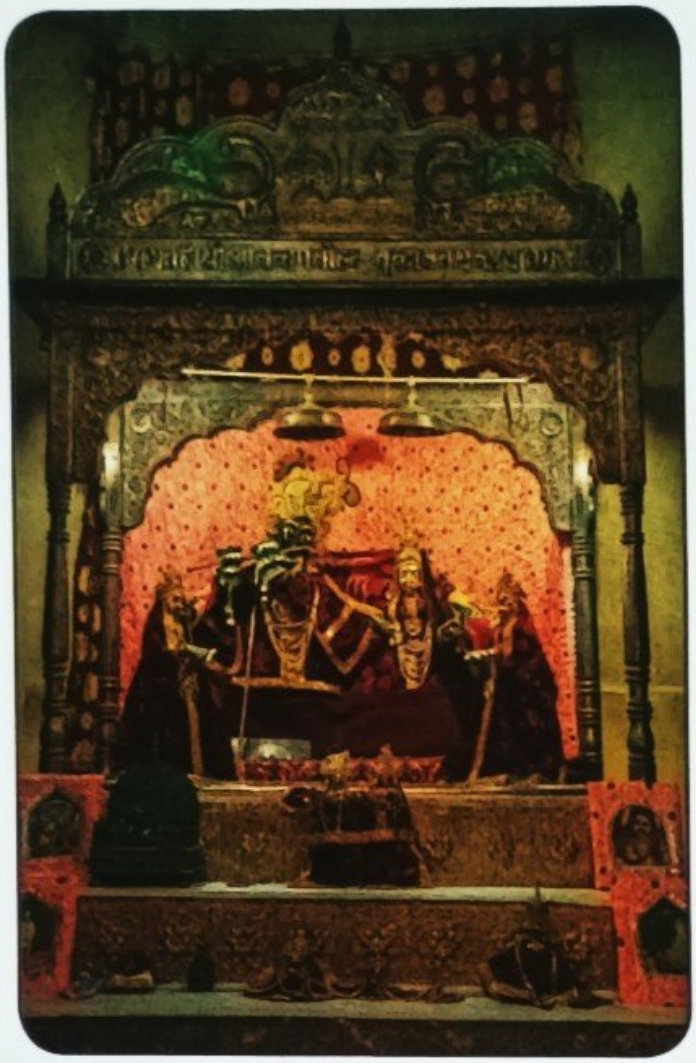

श्रीजी मन्दिर वृन्दावन टाऊन में

सोना गौरांग मन्दिर

५६. श्रीजी मंदिर बरसाना के श्रीजी मंदिर से जुड़ा है। एक ही ब्राह्मण इन दोनों मंदिर में पूजा करता है। यह व्रज में निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रमुख मंदिर है। वृन्दावन का श्रीजी मंदिर लोई बाजार के निकट रेतिया बाजार में स्थित है। यह मंदिर अत्यन्त सुन्दर है और यहाँ श्री श्रीराधा-आनन्दमोहन की पूजा होती है।

५७. सोना गौरांग मंदिर राधा-गोपीनाथ मंदिर के निकट स्थित है। इन मूर्तियों का निर्माण जगन्नाथदास बाबाजी ने करवाया था जिससे सूर्यकुण्ड पर अपने निवास के दौरान वे इनकी पूजा कर सकें। ये मूर्तियाँ इतनी सुन्दर हैं कि एक बार एक चोर ने इन्हें सोने की समझकर चुराने का प्रयास किया। बाबाजी ने सोना गौरांग को एक गोस्वामी परिवार को सौंप दिया जिससे ब्राह्मण परिवार में उनकी सुरक्षित पूजा हो सके।

श्रीगदाधर पंडित की दन्त समाधि

श्रीवंशी गोपाल मन्दिर

५८. गदाधर दन्त समाधि वंशी गोपाल मंदिर के निकट है। गदाधर पण्डित अवस्था में श्रीगौरहरि से एक वर्ष छोटे थे। गदाधर को गौरहरि से इतना प्रेम था कि वे एक क्षण के लिए भी उनका संग नहीं छोड़ पाते। गौरगणोद्देश दीपिता में कवि कर्णपूर लिखते हैं कि गदाधर पण्डित व्रज में वृषभानु की पुत्री श्रीमती राधारानी हैं। चैतन्य चरितामृत के अनुसार - "गदाधर पण्डित के दिव्य प्रेम एवं गुणों का वर्णन कोई नहीं कर सकता। इसलिए श्रीचैतन्य महाप्रभु का एक नाम है गदाधर प्राणनाथ। गदाधर पण्डित पर महाप्रभु की कितनी कृपा रहती इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। साथ ही लोग श्रीचैतन्य महाप्रभु को गदाईर गौर भी कहते, अर्थात् गदाधर पण्डित के श्रीगौरांग महाप्रभु।"

५९. वंशी गोपाल मंदिर राधा गोकुलानन्द मंदिर की सड़क पर थोड़ा आगे केशी घाट

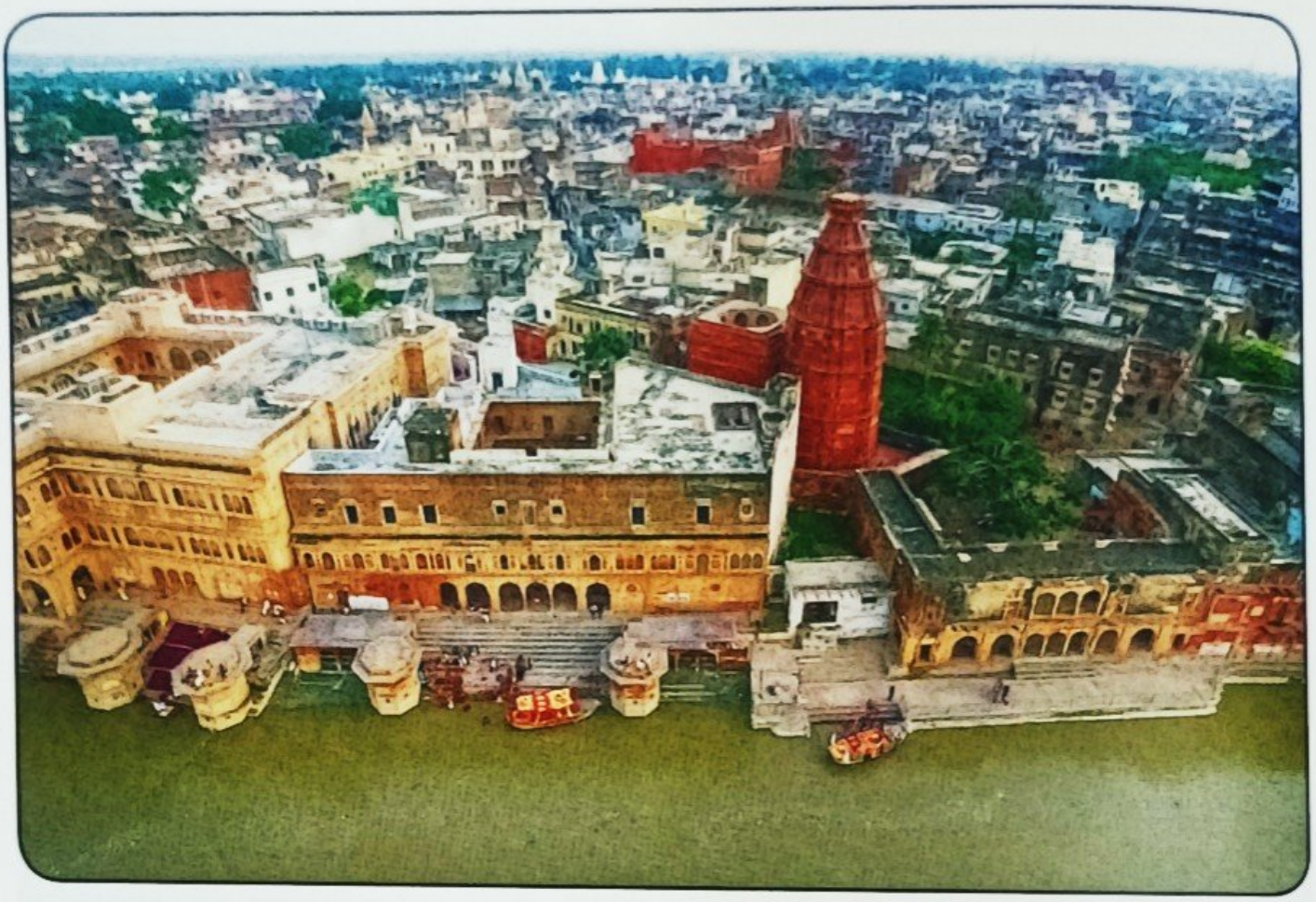

युगल किशोर मन्दिर के साथ केशीघाट

की ओर है। श्रील प्रभुपाद १९५६ से १९६२ तक यहाँ रहे और बाद में राधा-दामोदर मंदिर में चले गये।

६०. युगल किशोर मंदिर - सम्राट् अकबर १५७० में वृन्दावन आये थे और अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने गौडीय वैष्णवों को चार मंदिरों के निर्माण की अनुमति दी। इनमें से युगलकिशोर मंदिर एक है। अन्य तीन हैं, मदनमोहन मंदिर, गोविन्दजी मंदिर तथा गोपीनाथ मंदिर। तुरन्त मंदिर निर्माणकार्य आरम्भ हुआ और १६२७ में युगलकिशोर मंदिर पूरा हो गया। लाल पत्थर से बना युगलकिशोर मंदिर वृन्दावन का सबसे प्राचीन एवं सर्वाधिक सुन्दर मंदिर है। इस समय यह ASI संरक्षित इमारत है और मंदिर में कोई पूजा नहीं होती। कई बार इसे केशीघाट मंदिर भी कहते हैं क्योंकि यह घाट के निकट स्थित है।

६१. केशीघाट का निर्माण भरतपुर की लक्ष्मीरानी ने किया था। यह युगलकिशोर मंदिर के निकट है और वृन्दावन का सर्वाधिक सुन्दर स्नान घाट है। यहाँ यमुना में स्नान करने एवं यमुना आरती देखने के लिए विशाल संख्या में लोग आते हैं। कंस ने श्रीकृष्ण

यात्री केशीघाट पर यमुना के पवित्र जल में स्नान करने के लिए उमड़ पड़ते हैं

को मारने के लिए अनेक असुर भेजे और उनमें से सबसे अंतिम था केशी। यह घोड़े का रूप लेकर आया और इसी स्थान पर श्रीकृष्ण ने उसका वध किया था। एक अन्य कारण से भी इस घाट का नाम केशी घाट पड़ा। सती के मृत्यु के पश्चात् जब शिवजी उनकी मृत देह को लेकर पूरे ब्रह्माण्ड में ले जा रहे थे तो इसी स्थान पर सती के केश गिरे थे। निकट ही कात्यायनी मंदिर है जहाँ यात्री कात्यायनी देवी की पूजा करते हैं। इसलिए केशीघाट श्रीकृष्ण एवं शिवजी दोनों के भक्तों द्वारा पूजनीय है। आदि वराह पुराण में कहा गया है - "जिस स्थान पर केशी का वध हुआ वह केशीतीर्थ गंगा से सौ गुना अधिक पवित्र है। केशीतीर्थ में पिण्डदान करने से गया में पिण्ड करने का फल प्राप्त होता है।" व्रजविलास स्तव में कहा गया है - "अपने हिनहिनाने से मदमत्त केशी ने तीनों लोकों को हिला दिया और अपने घूमते लाल नेत्रों से पूरे ब्रह्माण्ड को प्रज्ज्वलित कर दिया। कृष्ण ने उसका वध इतना सरलतापूर्वक किया मानो घास के दो टुकड़े किये हों और जो स्थान केशीतीर्थ के नाम से जाना जाता है वहाँ रक्त से सने अपने हाथ धोये। मैं इस पवित्र स्थान की पूजा करता हूँ।"

श्री श्रीराधा-गोपीनाथ

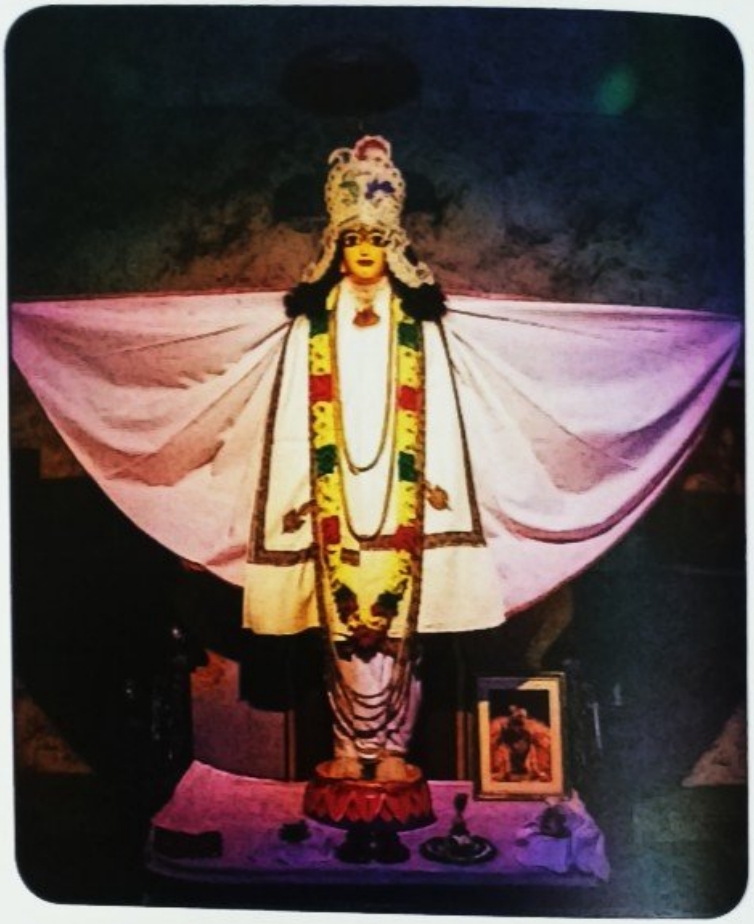

अमीय-निमाइ गौर

६२. श्री श्रीराधा-गोपीनाथ मंदिर - गोपीनाथ के विग्रह परमानन्द भट्टाचार्य को वंशीवट से प्राप्त हुए जिन्होंने आगे चलकर मधुपण्डित को उनकी सेवा सौंप दी। वेदी पर श्रीमती राधारानी एवं उनकी बहन अनंग मंजरी के विग्रह हैं। मंदिर के साथ ही मधुपण्डित की समाधि है। मूल रूप से गोपीनाथ की स्थापना श्रीकृष्ण के प्रपौत्र वज्रनाभ ने की थी। १६७० में जब औरंगजेब ने वृन्दावन पर आक्रमण किया तो मूल विग्रह को जयपुर ले जाया गया। कहा जाता है कि गोपीनाथ के कंधे से लेकर कमर तक का भाग बिल्कुल श्रीकृष्ण से मिलता है।

६३. अमिय निमाइ गौर मंदिर में पूरे वृन्दावन की सबसे विशाल श्रीचैतन्य महाप्रभु की मूर्ति है। लगभग सात फुट ऊँची। मूल रूप से राधारामण के एक सेवक श्रीमधुसूदन गोस्वामी कोलकाता में इनकी पूजा करते थे। बाद में वे कोलकाता पुलिस के आदेशानुसार वे उन्हें वृन्दावन ले आये जहाँ उनके पुत्र उनकी पूजा करने लगे। १९५६ में गोपीनाथ बाजार के इस मंदिर में उनकी अधिकृत स्थापना की गयी और तबसे आजतक वे वहीं पूजित हैं।

बिल्वामंगल ठाकुर की समाधि

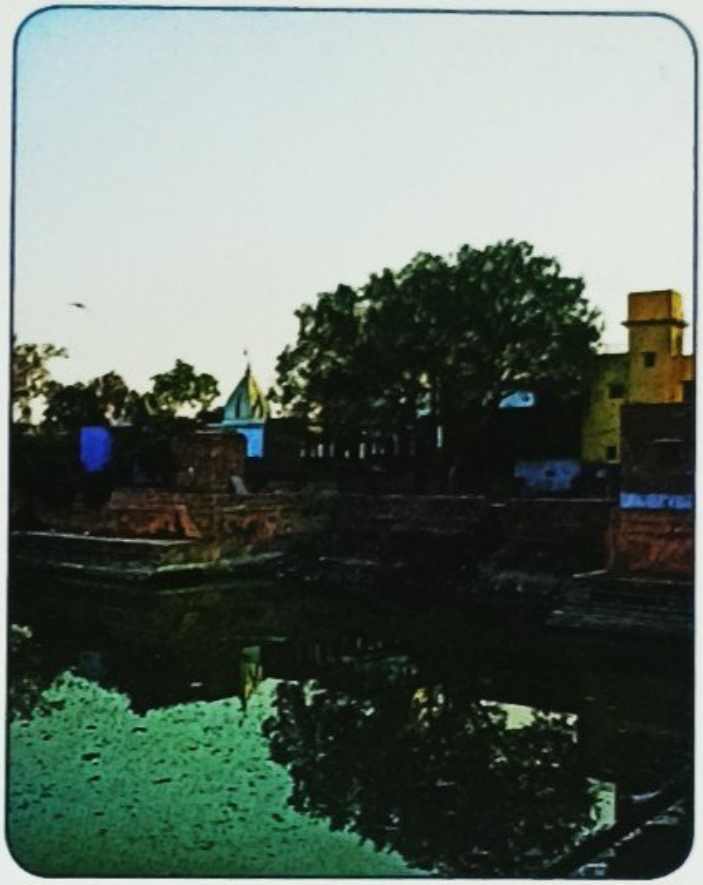

गोविन्द-कुण्ड

६४. बिल्वमंगल ठाकुर समाधि गोपीनाथ बाजार में अमिय निमाई मंदिर से ठीक पहले है। लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व बिल्वमंगल ठाकुर वृन्दावन आये और अपना अधिकांश समय ब्रह्मकुण्ड पर व्यतीत किया। उन्होंने विख्यात् पुस्तक कृष्ण-कर्णामृत की रचना की। यह पहली अधिकृत पुस्तक थी जिसमें श्रीमती राधारानी की परम स्थिति को उजागर किया गया था। श्रीचैतन्य महाप्रभु सदैव इस पुस्तक की प्रशंसा करते। चूँकि बिल्वमंगल ठाकुर नेत्रहीन थे इसलिए श्रीकृष्ण स्वयं उनके लिए प्रसाद लाते और विश्राम करने के लिए उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाते।

६५. गोविन्द कुण्ड वृन्दावन का सर्वाधिक विशाल कुण्ड है। गाएँ चराने के बाद दोपहर में श्रीकृष्ण यहीं विश्राम किया करते। उनके मित्र उनके लिए फूलों की कोमल सुख शय्या सजाते और उनके चरण दबाते। उस समय यह पूरा क्षेत्र घना वन था। व्रज फाउन्डेशन ने इस कुण्ड को साफ करने तथा पूरे क्षेत्र को विकसित करने का कार्य आरम्भ किया है।

गोविन्दजी मन्दिर

६६. गोविन्ददेवजी मंदिर मूल रूप से सात-मंजिला इमारत थी जिसकी वेदी संगमरमर, सोने एवं चाँदी से बनी थी। गोविन्ददेव के विग्रह की स्थापना श्रील रूप गोस्वामी ने की। वास्तुकला की दृष्टि से यह उत्तरी भारत के सबसे सुन्दर मंदिरों में से एक है। मंदिर की भीतरी छत पर एक पत्थर में तराशा गया अनेक टन वजनी कमल का फूल उल्टा लगाया गया है। १५९० में जयपुर के राजा मानसिंह ने इसका निर्माण करवाया था। वे अकबर के सेनापति थे और श्रील रूप गोस्वामी से अत्यन्त प्रभावित थे। १६७० में औरंगजेब ने मंदिर को ध्वस्त करके उसे लूट लिया और मंदिर की ऊपरी पाँच मंजिलों को गिरा दिया। विध्वंस से पहले ही गोविन्दजी को गोपनीय रूप से जयपुर ले जाया गया जहाँ आज भी उनकी पूजा होती है।

६७. नव राधा-गोविन्द मंदिर - औरंगजेब के सैनिकों द्वारा मूल राधा-गोविन्द मंदिर भंग करने के बाद मंदिर में भगवान् की पूजा सम्भव नहीं हो सकी। इसलिए मूल मंदिर के

श्रीरंगनाथजी मन्दिर

चौंसठ-समाधि का बगीचा

पीछे नव राधा-गोविन्दर मंदिर का निर्माण किया गया। यहाँ राधा-गोविन्द की प्रतिभू मूर्तियाँ हैं। प्रतिभू मूर्तियों को मूल मूर्तियों के समान ही माना जाता है।

६८. रंगनाथजी मंदिर - गोविन्दजी मंदिर के ठीक सामने दक्षिण भारतीय शैली में बना रंगजी मंदिर है। इसकी ऊँचाई तीस मीटर है और इसके तीन गोपुरम् (द्वार) हैं। यह वृन्दावन के सर्वाधिक विशाल मंदिरों में से एक है और इसका निर्माण १८५१ में हुआ। चैत्र (मार्च-अप्रैल) में यहाँ दस दिवसीय रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। मंदिर के प्रवेश पर बने एक संग्रहालय में श्रीकृष्ण की लीलाओं को दर्शाती मूर्तियों की प्रदर्शनी है जो बिजली से चलती हैं।

६९. चौंसठ समाधि उद्यान - राधा-गोविन्द मंदिर के निकट ही एक उद्यान है जिसमें श्रीचैतन्य महाप्रभु के चौंसठ निकट पार्षदों की नाम एवं पुष्प समाधियाँ हैं। अधिकांश समाधियाँ नाम समाधि हैं। यहाँ वेणु-कूप नामक एक कुआँ हैं। कहा जाता है कि एक

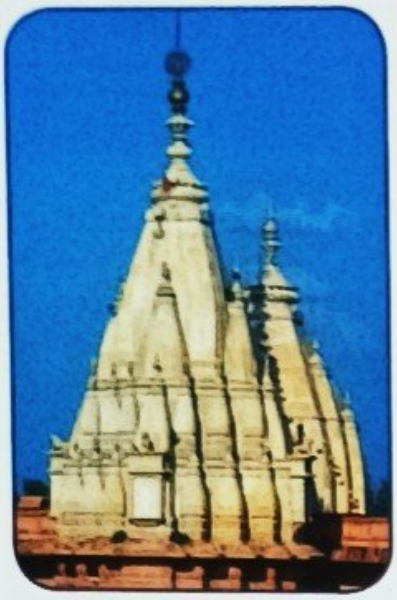

लाला बाबू मन्दिर

गोपाल गुरु गोस्वामी का राधा-कान्त मन्दिर

बार श्रीकृष्ण ने अपनी बाँसुरी बजायी और स्वत: इस कुएँ का निर्माण हो गया। कहा जाता है कि यह कुआँ पाताल-लोक से यहाँ आया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी जैसे विशेष अवसरों पर गोविन्दजी को इस कुएँ के जल से स्नान करवाया जाता है।

७०. लाल बाबू मंदिर को कृष्ण-चन्द्रमा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। लाल बाबू कोलकाता के एक धनी जमींदार थे। अपना सर्वस्व त्यागकर वे वृन्दावन में बाबाजी बन गये। श्रील प्रभुपाद भक्तिरसामृतसिन्धु में उनके बारे में लिखते हैं कि वे नम्रता के मूर्तिमान प्रतीक थे क्योंकि वे द्वार-द्वार जाकर भिक्षा माँगते और यहाँ तक कि अपने पुराने शत्रुओं से भी भिक्षा माँगते। यह मंदिर उत्कृष्ट वास्तुकला का सुन्दर नमूना है।

७१. राधा-गोपाल मंदिर का निर्माण महाराष्ट्र के विख्यात् सिंधिया परिवार द्वारा १८६० में हुआ। यह बड़ा मंदिर लाला बाबू मंदिर तथा गोपेश्वर मंदिर के मध्य स्थित है।

७२. राधाकान्त मंदिर। गोपाल गुरु गोस्वामी वक्रेश्वर पण्डित के शिष्य तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु के निकट पार्षद थे। जब वे छोटे थे तो एक समय श्रीचैतन्य महाप्रभु ने उन्हें गुरु कहकर पुकारा था, तबसे सब उन्हें गोपाल गुरु कहने लगे। गोपाल गुरु की मूल मूर्ति की पूजा जगन्नाथ पुरी में होती है और यहाँ वृन्दावन में उनकी प्रतिभू मूर्ति की पूजा होती है। उनके देहत्याग के पश्चात् जिस स्थान पर उनके शिष्य ध्यानचन्द्र गोस्वामी ने उनसे बात की उस स्थान पर उनकी समाधि है।

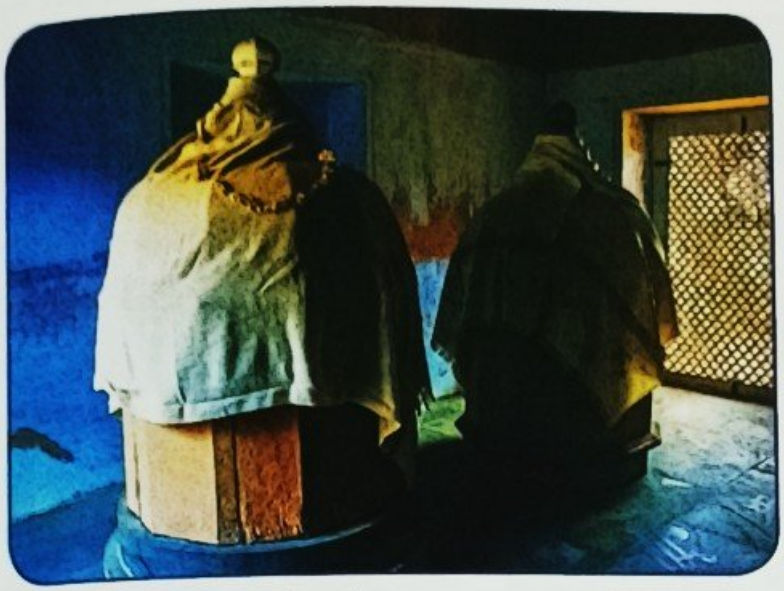

श्रीनिवासाचार्य और रामचन्द्र कविराज की समाधि

राधा-श्यामराय मन्दिर

७३. श्रीनिवास आचार्य की समाधि - उनके सर्वप्रमुख शिष्य रामचन्द्र कविराज तथा उनकी पुत्री हेमलता इन तीनों की समाधि उस मंदिर में स्थित है जहाँ श्रीनिवास के विग्रह झूला ठाकुर की पूजा होती है। भक्ति रत्नाकर में श्रीनिवास आचार्य की महान् सेवाओं का वर्णन आता है। छह गोस्वामियों के पश्चात् वे गौडीय वैष्णव सम्प्रदाय के प्रमुख थे। वे गोपालभट्ट गोस्वामी के शिष्य थे। नरोत्तमदास ठाकुर एवं श्यामानन्द पण्डित उनके घनिष्ठ मित्र थे।

७४. राधा-श्यामराय मंदिर - इन विग्रहों की पूजा श्रीचैतन्य महाप्रभु के निकट पार्षद श्रीगौरीदास पण्डित करते थे। यद्यपि उन्होंने अपना अधिकांश जीवन बंगाल में बिताया, तथापि उनकी समाधि वृन्दावन के श्यामराय मंदिर में है।

७५. काँच मंदिर (युगलकिशोर मंदिर) भीतर से अत्यन्त सुन्दर बेल्जियन रंग-बिरंगे काँचों से सजा है। १५वीं शताब्दी में श्रीहरिराम व्यास को किशोरी कुंज से ये विग्रह मिले। यहाँ पालने में बाल कृष्ण के विग्रह भी हैं और राधानाम तट है जहाँ भक्त राधारानी के नाम लिखकर उनके कृपा की याचना करते हैं।

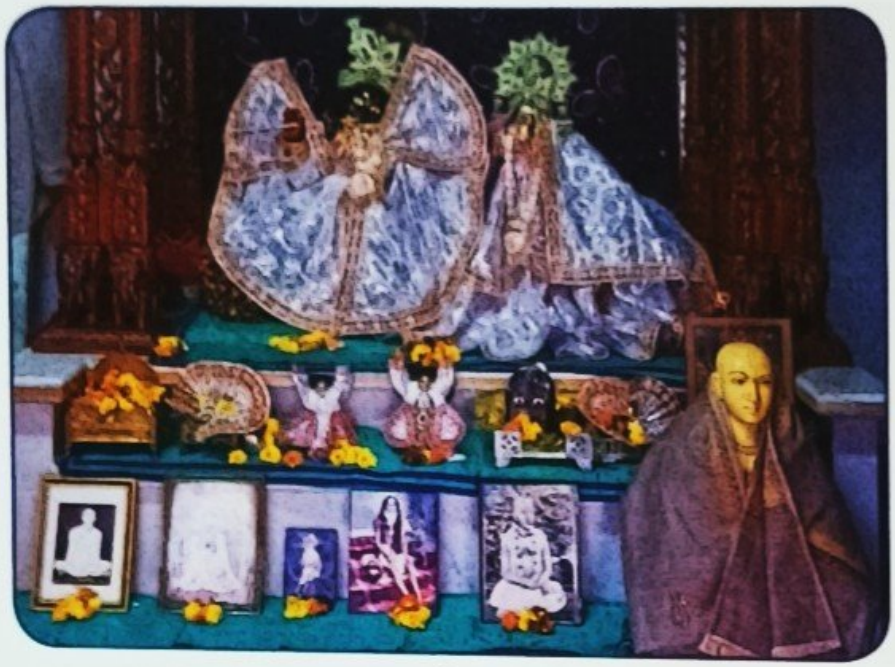

राधा-व्रजमोहन मंदिर

टेकरी-रानी मन्दिर

७६. ज्ञान गुदड़ी एक खुला उद्यान है। यहीं श्रीउद्धव ने कुछ व्रजवासियों को श्रीकृष्ण का संदेश सुनाया था। इसी स्थान पर उद्धव ने विदुरजी को श्रीकृष्ण के अंतिम निर्देश सुनाये। जब यमुना में बाढ़ आती है तो कहा जाता है कि प्रयागराज एक काले घोड़े के रूप में यहाँ स्नान करने आते हैं। यहाँ स्नान करने से वे अपने जल में छोड़े गये समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं और सफेद घोड़ा बनकर जल से बाहर आते हैं।

७७. राधा-व्रजमोहन मंदिर उन छह विग्रहों में से एक हैं जिनकी स्थापना श्रीचैतन्य महाप्रभु के तिरोभाव के तीस वर्ष पश्चात् खेतुरी में मनाये गये पहले गौर-पूर्णिमा महोत्सव में हुई थी। नरोत्तमदास ठाकुर इनकी पूजा किया करते। रामचन्द्र कविराज राधा व्रजमोहन को लगभग ४०० वर्ष पूर्व वृन्दावन लाये और तबसे आजतक उनकी उसी स्थान पर पूजा हो रही है।

७८. टेकरी रानी मंदिर का निर्माण बिहार स्थित टेकरी की रानी ने १८७० में करवाया था। वे वृन्दावन की यात्रा पर आयीं थी और यहाँ डाकुओं ने उनके दल पर हमला कर दिया। रानी ने भागकर यमुना पार कर ली। यमुना के पश्चिमी तट पर वे जिस स्थान से बाहर निकली वहाँ उन्होंने इस सुन्दर मंदिर का निर्माण किया।

टट्टीया स्थान

सुदामा कुटीर

७९. टट्टीया स्थान - व्रजभाषा में बाँस को टट्टीया कहा जाता है। एक समय यहाँ बाँस का सुन्दर वन था। यह स्थान दिव्य वृक्षों, लताओं तथा राधा-कृष्ण को प्रिय बन्दरों का स्थान है। भक्तगण श्रीमोहिनी बिहारीजी मंदिर में स्वामी हरिदास एवं उनके अनुयायियों द्वारा रचित भजन गाते हैं। संध्या समय मंदिर बन्द हो जाता है।

८०. धीर-समीर घाट - रासलीला के बाद श्रीकृष्ण ने यहाँ विश्राम किया था। धीर-समीर का अर्थ है मंद शीतल वायु। यमुना का यह घाट अत्यन्त सुन्दर है। विश्राम के बाद श्रीकृष्ण और गोपियों यमुना में तैरते और जलक्रीड़ाएँ करते।

८१. सुदामा कुटीर रामानन्दी सम्प्रदाय का मंदिर है और यहाँ सीता, राम, लक्ष्मण एवं हनुमान के विग्रह हैं। सुदामा नामक भक्त ने इसकी स्थापना की थी। यह मंदिर अपने अन्नदान कार्यक्रम के लिए विख्यात् है।

८२. तुलसी राम मंदिर में भगवान् राम के विशाल तथा राधा-कृष्ण के छोटे विग्रह हैं। रामचरितमानस के रचयिता यहाँ आये थे और यहाँ उन्हें भगवान् राम के दर्शन हुए। मंदिर में तुलसीदास के विग्रह भी हैं।

राधा बाग घाट

कात्यायनी मन्दिर

८३. राधा बाग घाट यमुना के तट पर श्रीवृन्दावन के उत्तरी-पूर्वी छोर पर स्थित है। यहाँ राधा बाग नामक एक उद्यान है। पूर्वी दिशा में एक सुन्दर यमुना के दो प्रवाहों के बीच एक सुन्दर रेतीला तट है। धीर-समीर और राधा बाग के बीच का स्थान श्रीरास पुलिन कहा जाता है। पुलिन अर्थात् नदी का रेतिला तट। यहाँ एक गोप कुआँ भी है।

८४. कात्यायनी देवी मंदिर - यह मंदिर कात्यायनी देवी, भगवान् शिव, श्री श्रीलक्ष्मी-नारायण, गणपति तथा सूर्यदेव की पंचोपासना को समर्पित है। जब शिवजी की पत्नी सती ने आत्मदाह किया तो शिवजी अत्यन्त व्यथित हो उठे। दु:खी हो वे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सती के मृत शरीर को उठाकर घूमने लगे। भगवान् विष्णु ने सती के शरीर को १०८ भागों में काट दिया और कहा जाता है कि वृन्दावन में इस स्थान पर उनका बाल गिरा। वर्तमान मंदिर की स्थापना १९२३ में हुई।

८५. रंगजी बाग एक सुन्दर बगीचा है। भगवान् रंगनाथ के प्रसन्नतार्थ बने इस बगीचे की देखरेख रंगजी मंदिर द्वारा की जाती है। यह आम जनता के लिए खुला है। आप वहाँ जाकर सुन्दर बगीचे में भ्रमण कर सकते हैं।

८६. पानी घाट वह स्थान है जहाँ गोपियों ने श्रीकृष्ण के परामर्श पर यमुना पार करके श्रीदुर्वासा मुनि को भोजन खिलाया। इसी स्थान पर वृन्दावन के वैष्णवों का अंतिम संस्कार किया जाता है। यह राधा बाग के दक्षिण में तथा श्रीवृन्दावन के पूर्व में है।

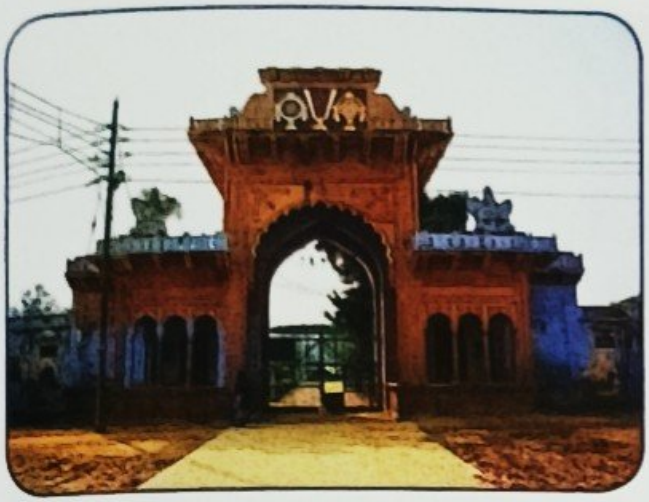

रंगजी उपवन

पानी घाट

८७. आदि बद्री घाट - पानी घाट के दक्षिण में तथा श्रीवृन्दावन के द.पू. छोर पर यमुना के पुराने तट पर आदि बद्री घाट स्थित है। इस घाट पर श्रीकृष्ण ने गोपियों को श्रीआदि बद्रीनाथ भगवान् के दर्शन करवाये थे।

८८. राजा घाट श्रीवृन्दावन के दक्षिणपूर्व कोने में आदि बद्री घाट के दक्षिण में स्थित है। इस घाट पर राधारानी को नदी पार करवाने के बहाने श्रीकृष्ण उनसे मिले थे। एक दिन राधारानी और उनकी सखियाँ दूध, दही, माखन आदि बेचने के लिए नदीतट पर पहुँची परन्तु वहाँ कोई नौका नहीं थी। तभी श्रीकृष्ण एक नाविक के वेश में नौका लेकर वहाँ पहुँचे। सखियों ने नदी पार करवाने के लिए कृष्ण को पहले एक आना, फिर दो आना और बाद में पंद्रह आना तक देने की बात कही। परन्तु कृष्ण ने कहा कि वे सोलह आना लेंगे। अन्ततः राधारानी और सखियाँ मान गयीं और नौका में बैठ गयीं। नदी के बीच कृष्ण राधारानी के हाथों से सारा माखन खाने लगे और जब उन्होंने अपना वास्तविक रूप प्रकट किया, वे दोनों दिव्य प्रेम सागर में निमग्न हो गये।

८९. जगन्नाथ घाट - यहाँ के सेवक बताते हैं कि मूल रूप से यहाँ स्थापित श्रीजगन्नाथ, बलदेव एवं सुभद्रा के विग्रहों की पूजा १८वीं सदी में जगन्नाथ पुरी के जगन्नाथ

चैतन्य विश्राम स्थली

गोरा दाऊजी मन्दिर

९५. गोरा दाऊजी अटलवन क्षेत्र में है। यहाँ बलराम की वेशभूषा में राधारानी के सुन्दर विग्रह हैं। राधारानी ने श्रीकृष्ण से मिलने के लिए बलराम का वेश बनाया था। दाऊजी का अर्थ है बड़ा भाई। इसलिए इस मंदिर में राधारानी को गोर दाऊजी कहा जाता है।

९६. अटल वन मथुरा के मार्ग पर वृन्दावन के दक्षिणी भाग में स्थित है। भातरोन में ब्राह्मण पत्नियों द्वारा अर्पित भोग खाने के बाद श्रीकृष्ण इसी स्थान पर आकर अपने मित्रों से मिले थे।

९७. जयपुर मंदिर का निर्माण १९१७ में जयपुर के राजा ने किया था। यहाँ राधा-माधव, आनन्द बिहारी तथा हंसगोपाल के विग्रह हैं। यहाँ चार कुमारों एवं निम्बार्काचार्य के विग्रह भी हैं। यह मंदिर वृन्दावन-मथुरा मार्ग पर है।

९८. दावानल कुण्ड अटलवन के उत्तरी-पूर्वी कोने में है। कालिय दमन के बाद व्रजवासियों ने इसी स्थान पर रात बितायी थी। अर्धरात्रि समय वन में चारों ओर से अग्नि उठ खड़ी हुई। व्रजवासियों ने कृष्ण-बलराम का आश्रय लिया और श्रीकृष्ण ने उनसे आँखें मूँदने के लिए कहा। तब उन्होंने अग्नि को पी लिया। दावानल अर्थात् जंगल की आग।

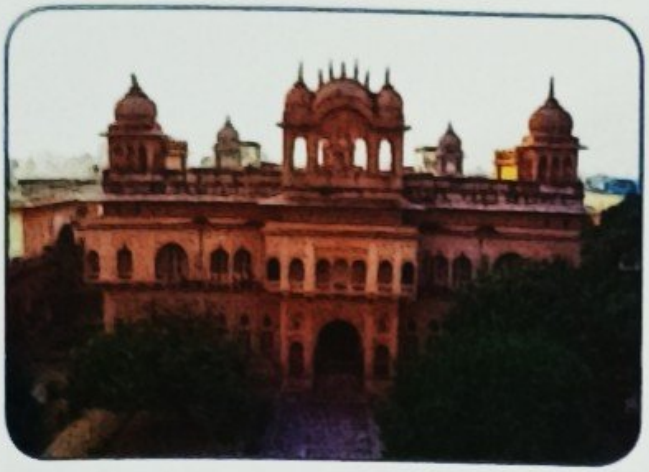

जयपुर मन्दिर

दावानल-कुण्ड

९९. विश्राम कुण्ड - श्रीकृष्ण द्वारा दावानल पान के बाद सब घर लौटना चाहते थे। परन्तु वे इतना थक चुके थे कि उन्होंने इसी कुण्ड के तट पर विश्राम करने का निश्चय किया। इस समय यह कुण्ड दावानल कुण्ड के निकट एक निजी आश्रम परिसर में है।

१००. राधेश्याम कुआँ इस्कॉन मंदिर से थोड़ी दूर परिक्रमा मार्ग पर ही है। इस कुएँ के सेवकों के अनुसार श्रीकृष्ण ने इसका निर्माण किया था। पूर्व समय में यह घना वन था और राधा-कृष्ण यहाँ लीलाएँ करते। एक समय राधारानी को प्यास लगी और उनकी प्यास बुझाने के लिए श्रीकृष्ण ने इस कुएँ का निर्माण कया।

१०१. वृन्दावन अनुसंधान केन्द्र की स्थापना १९६८ में पाण्डुलिपियों तथा प्राचीन वस्तुओं को संरक्षित रखने के लिए की गयी। यह केन्द्र इस्कॉन मंदिर के निकट चार एकड़ भूमि में स्थित है। यहाँ संस्कृत, हिन्दी, बंगाली, उड़िया, पंजाबी आदि भाषाओं की लगभग ३,००,००० पाण्डुलिपियाँ तथा २०० चित्र, छायाचित्र, सिक्के, प्रतिकृतियाँ आदि हैं। इस संग्रहालय में राजाओं द्वारा व्रज में मंदिर निर्माण हेतु दान दी गयी भूमि के राजसी कागजात हैं। प्रमुख रूप से इसका उद्देश्य भारतीय एवं विशेषत: व्रज की संस्कृति तथा ज्ञान का संरक्षण है।

वृन्दावन शोध संस्थान

भागवत निवास

१०२. भागवत निवास इस्कॉन मंदिर के निकट भक्तिवेदान्त स्वामी मार्ग पर स्थित है। भागवत निवास में केवल उन लोगों को रहने की अनुमति है जो भजन के प्रति गम्भीर हैं तथा कठोर जीवनशैली का पालन करते हुए माधुकरी द्वारा जीवन यापन करते हैं। यह सम्पत्ति यहाँ स्थित गोवर्धन शिला के नाम पर है। शिला का नाम है गिरीन्द्र विहारी। कुछ लोगों का मत है कि यह वही शिला है जो श्रीचैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथदास गोस्वामी को दी थी।

१०३. मोंगीर राजा मंदिर का निर्माण बिहारी स्थित मुंगीर क्षेत्र के राजपरिवार ने १९३२ में किया। मंदिर परिसर के भीतर अनेक अतिथिकक्ष, कदम्ब एवं तमाल वृक्षों के सुन्दर बगीचे तथा चाँदी के सिंहासन पर विराजमान श्री श्रीराधा-मोहनजी, ललिता, विशाखा, चित्रा तथा चम्पकलता के विग्रह हैं।

१०४. केयर फॉर काओस् अनाथ गायों को भोजन, आश्रय तथा देखभाल प्रदान करता है। वृन्दावन परिक्रमा मार्ग से थोड़ा हटकर किकि नगल गाँव में यह स्थित है। गोसेवा के इस कार्यक्रम से देश-विदेश के सैंकड़ो लोग जुड़े हैं। इनका कार्य वैदिक शास्त्रों के आधार पर जनता में गोसेवा के प्रति जागरुकता उत्पन्न करती है। हाल में इनके पास ५०० से अधिक छोड़ी गयी गाएँ, बैल, बूढ़ साँड तथा अनाथ बछड़े हैं।

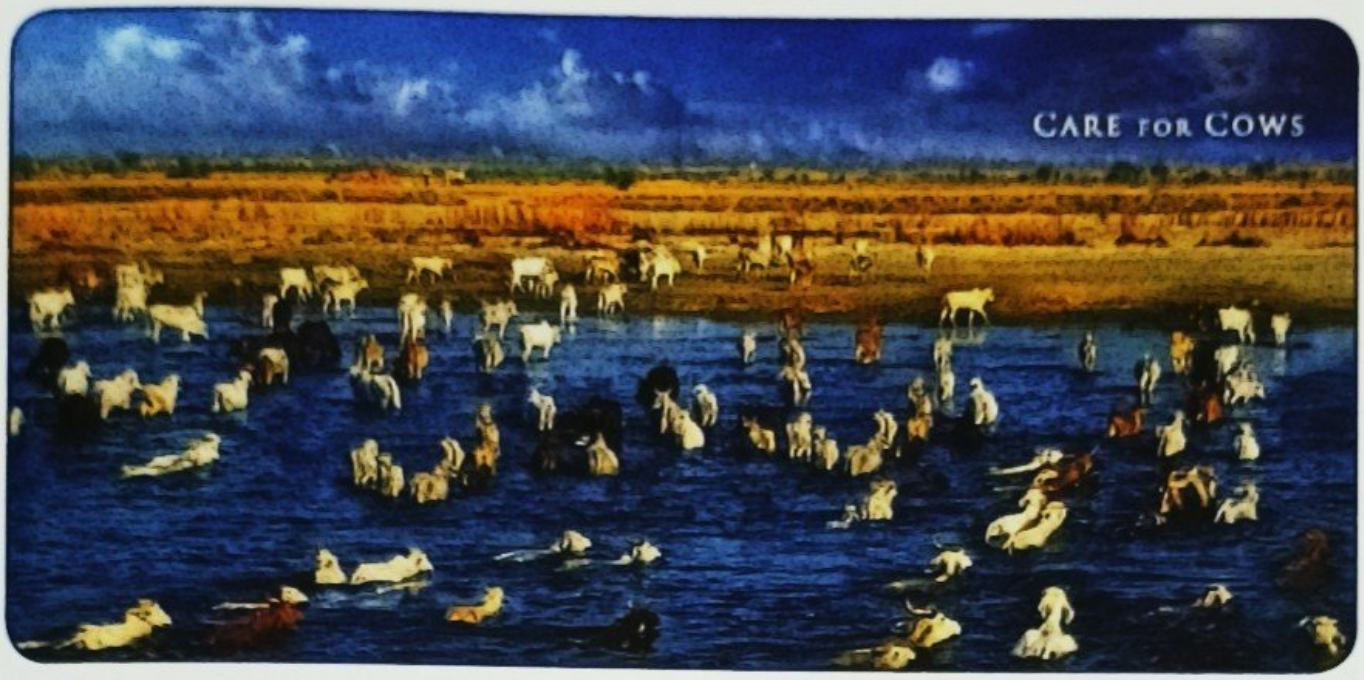

गायों की सुरक्षा

१०५. तारस मंदिर जयपुर मंदिर के पास है। मंदिर का निर्माण उत्तरी भारत में तारर के राजा वनमाली राय द्वारा किया गया। कहा जाता है कि उनकी पुत्री ने इस मंदिर में श्रीकृष्ण के विग्रह को अपने पति रूप में स्वीकार किया और उन दोनों का रीति अनुसार विवाह भी हुआ।

१०६. भातरोन बिहारी मंदिर यमुनातट पर स्थित है। जब ब्राह्मणों ने कृष्ण-बलराम और उनके मित्रों को भोजन देने से मना कर दिया उस समय ब्राह्मण-पत्नियों ने श्रीकृष्ण को भोजन दिया। श्रीमद्भागवतम् के दशम् स्कन्ध में इस लीला का वर्णन आता है।

१०७. अक्रूर घाट यमुना नदी के तट पर वृन्दावन और मथुरा के बीच मार्ग पर स्थित है। इसी स्थान पर संध्या करने के लिए अक्रूर ने यमुना में प्रवेश किया जबकि कृष्ण-बलराम रथ पर बैठकर उनकी प्रतीक्षा करते रहे। यहीं अक्रूर को नदी में श्रीविष्णु एवं शेषनाग के दर्शन हुए। इस स्थान का एक अन्य नाम है ब्रह्महृद क्योंकि इस स्थान पर स्नान करने वाले को भौतिक संसार से मुक्ति प्राप्त होती है।

अक्रूर घाट

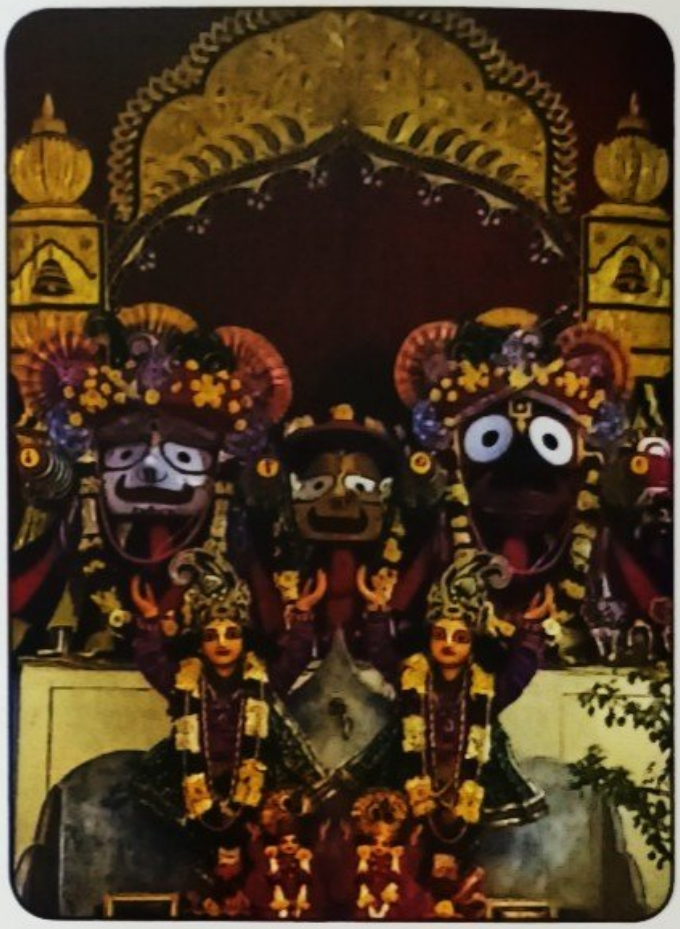

इस्कॉन जगन्नाथ मन्दिर

१०८. इस्कॉन जगन्नाथ मंदिर में भगवान् जगन्नाथ, बलदेव एवं सुभद्रादेवी के विग्रह हैं। जगन्नाथ रथयात्रा द्वारा भक्त भगवान् श्रीकृष्ण को वापस वृन्दावन लाते हैं। कहा जाता है, *वृन्दावनं परित्यज्य पदं एकं न गच्छति।* श्रीकृष्ण वृन्दावन से बाहर एक पग भी नहीं रखते। यद्यपि लीला की दृष्टि से श्रीकृष्ण पुन: वृन्दावन लौटते हैं परन्तु वास्तव में वे कभी वृन्दावन से बाहर गये ही नहीं क्योंकि व्रजवासी प्रत्येक क्षण उनका स्मरण करते थे। श्रीकृष्ण उनके मनों में वहाँ रहे। उनका एकमात्र कार्य श्रीकृष्ण का स्मरण तथा क्रन्दन था। इस प्रकार वे श्रीकृष्ण की उपस्थिति का अनुभव करते। विरह में श्रीकृष्ण की उपस्थिति कहीं अधिक तीव्र होती है। यही श्रीचैतन्य महाप्रभु की शिक्षा है - विरह में श्रीकृष्ण से प्रेम करना।

जब हम वृन्दावन परिक्रमा के दौरान मंदिरों एवं पवित्र स्थलों का दर्शन करते हैं तो हम श्रीकृष्ण का स्मरण करते हुए उनकी उपस्थिति का अनुभव कर सकते हैं। यह वृन्दावन परिक्रमा का विशेष लाभ है कि हम पवित्र धाम में स्वयं को सतत् श्रीकृष्ण-स्मरण में संलग्न कर सकते हैं।

वृन्दावन परिक्रमा के परिशिष्ट मानचित्र

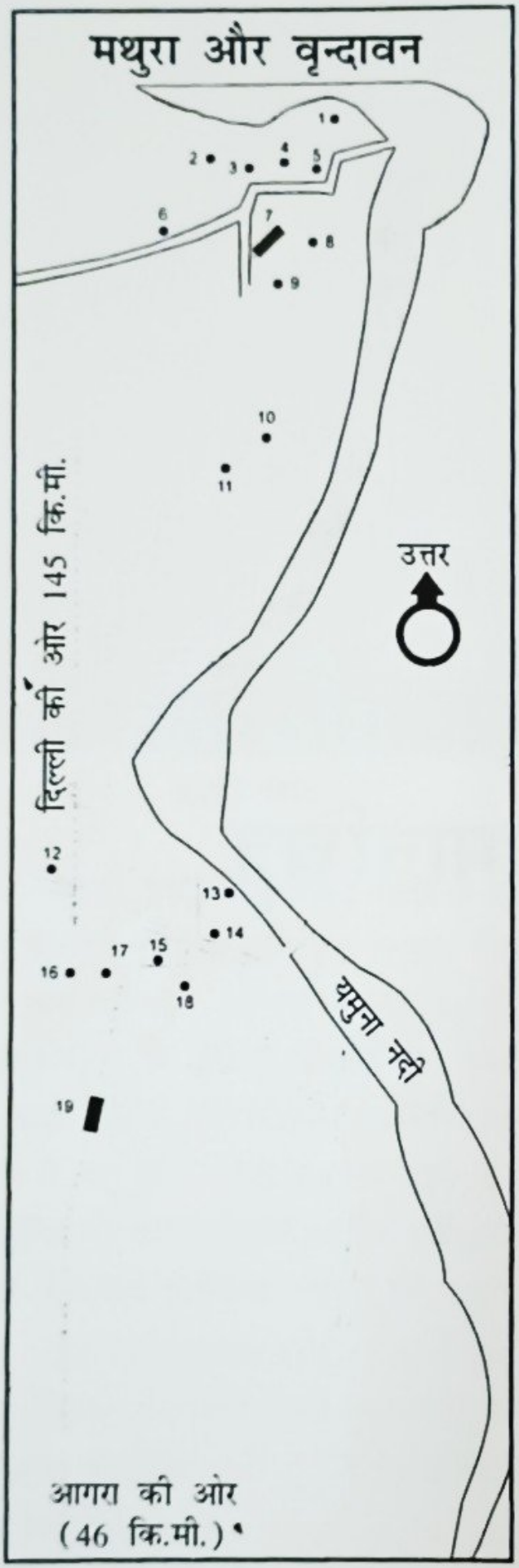

1. केशीघाट
2. मदनमोहन मन्दिर
3. बाँके बिहारी मन्दिर
4. लोई बाजार
5. गोविन्दजी मन्दिर
6. इस्कॉन कृष्ण बलराम मन्दिर
7. वृन्दावन रेलवे स्टेशन
8. बस-स्टैंड
9. मथुरा के लिए रिक्शा स्टैंड
10. भत्तरौंन
11. अक्रूर घाट
12. श्रीकृष्ण जन्मभूमि
13. विश्राम घाट
14. द्वारकाधीश मन्दिर
15. आरक्लौजीकल म्यूजिम
16. नेपाल होटल
17. नया बस अड्डा
18. पुराना बस अड्डा
19. मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन

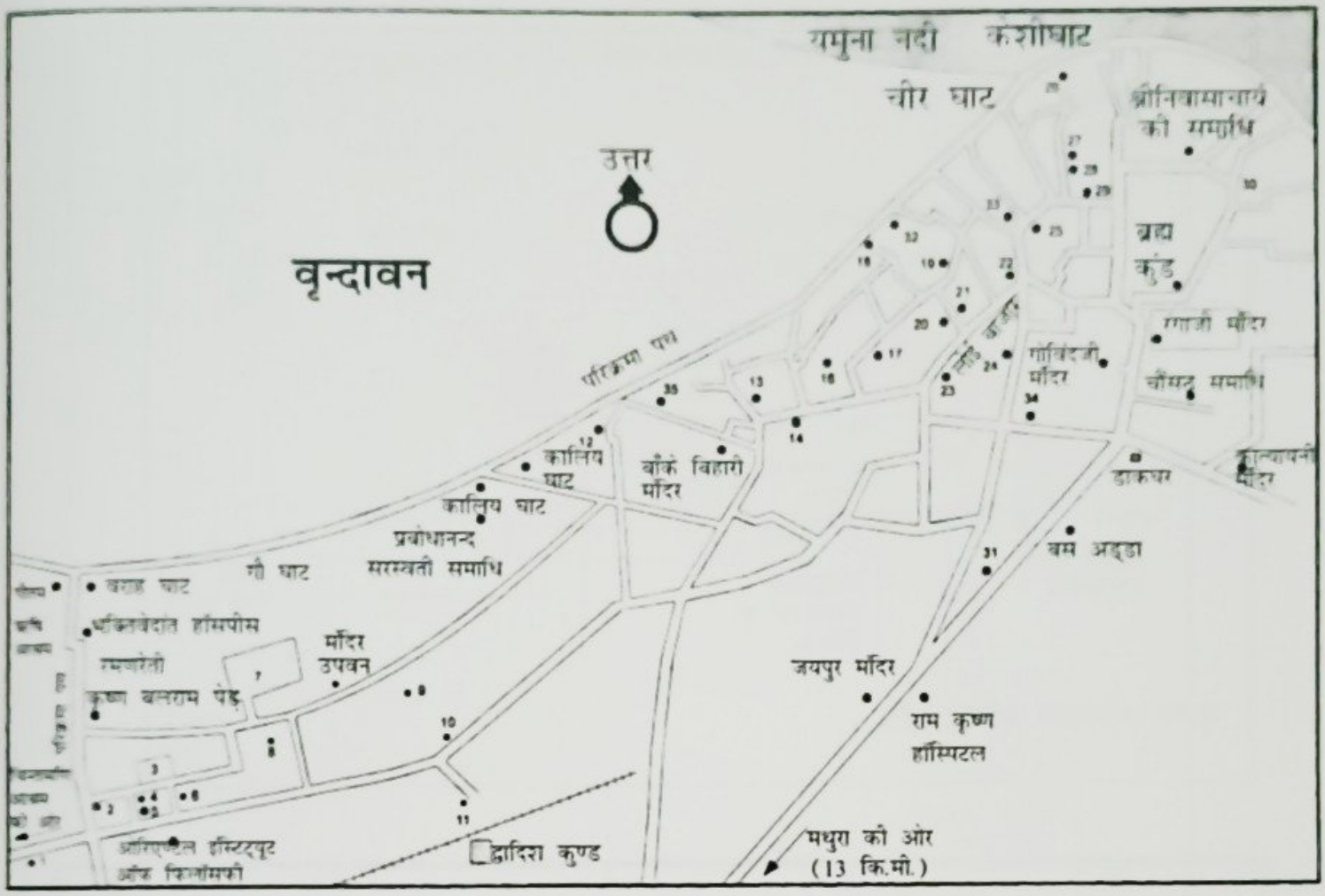

रहने के स्थान

1 चित्रकूट धाम आश्रम
2 अतिथि-गृह
3 एम वी टी
4 इस्कॉन का अतिथि गृह
6 शांति आश्रम
8 महेश्वरी आश्रम
9 कृष्ण निवास रोहतक वालों का
10 फोगला आश्रम
11 गोविन्द विहार

मन्दिर और पवित्र स्थान

5 कृष्ण बलराम मन्दिर
12 सनातन गोस्वामी की समाधि
13 राधा वल्लभ मन्दिर
17 सेवा कुंज
18 इमली तला
19 राधा-दामोदर मन्दिर
20 राधा-श्यामसुन्दर मन्दिर
21 श्यामानंदजी की समाधि
25 निधि वन
26 वंशीवट मन्दिर
27 राधा गोकुलानन्द मन्दिर
28 राधा रमण मन्दिर
29 राधा गोपीनाथ मन्दिर
30 गोपेश्वर मन्दिर
32 शृंगार वट
33 शाहजी मन्दिर
35 अद्वैतवट

अन्य

7 इस्कॉन की गौशाला
14 श्रीजी ज्यूलरस
16 श्यामा सखी
22 गंगा प्रसाद
23 हीरा ज्यूलरस
24 स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
31 मथुरा के लिए रिक्शा स्टैंड
32 शृंगार वट

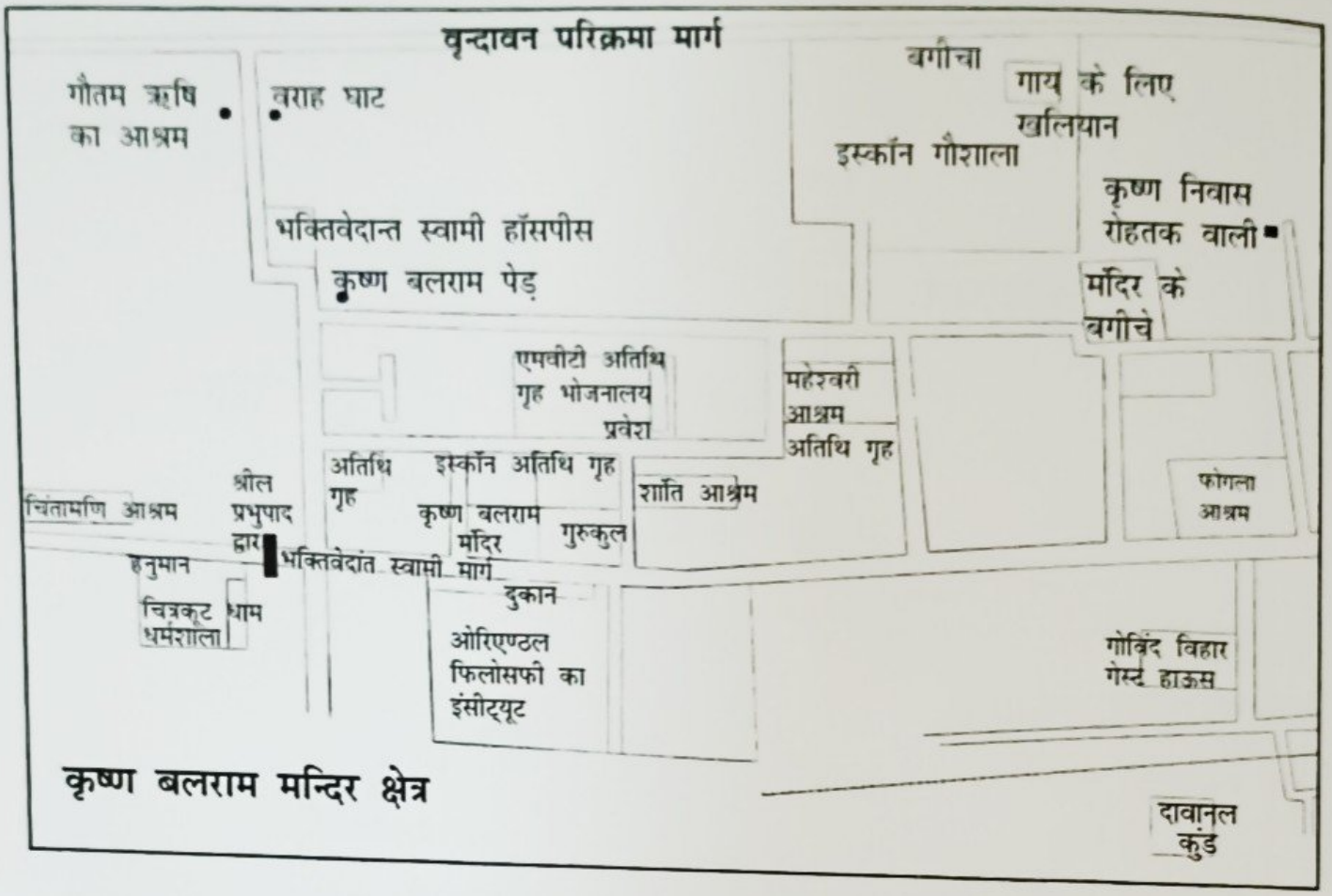
वृन्दावन परिक्रमा मार्ग
गौतम ऋषि का आश्रम
वराह घाट
बगीचा
गाय के लिए खलियान
इस्कॉन गौशाला
कृष्ण निवास रोहतक वाली
भक्तिवेदान्त स्वामी हॉसपीस
कृष्ण बलराम पेड़
मंदिर के बगीचे
एमवीटी अतिथि गृह भोजनालय प्रवेश
महेश्वरी आश्रम अतिथि गृह
अतिथि गृह
इस्कॉन अतिथि गृह
शांति आश्रम
फोगला आश्रम
चिंतामणि आश्रम
श्रील प्रभुपाद द्वार
कृष्ण बलराम मंदिर
गुरुकुल
हनुमान
भक्तिवेदांत स्वामी मार्ग
चित्रकूट धाम धर्मशाला
दुकान
ओरिएण्टल फिलोसफी का इंसीट्यूट
गोविंद विहार गेस्ट हाऊस
कृष्ण बलराम मन्दिर क्षेत्र
दावानल कुंड

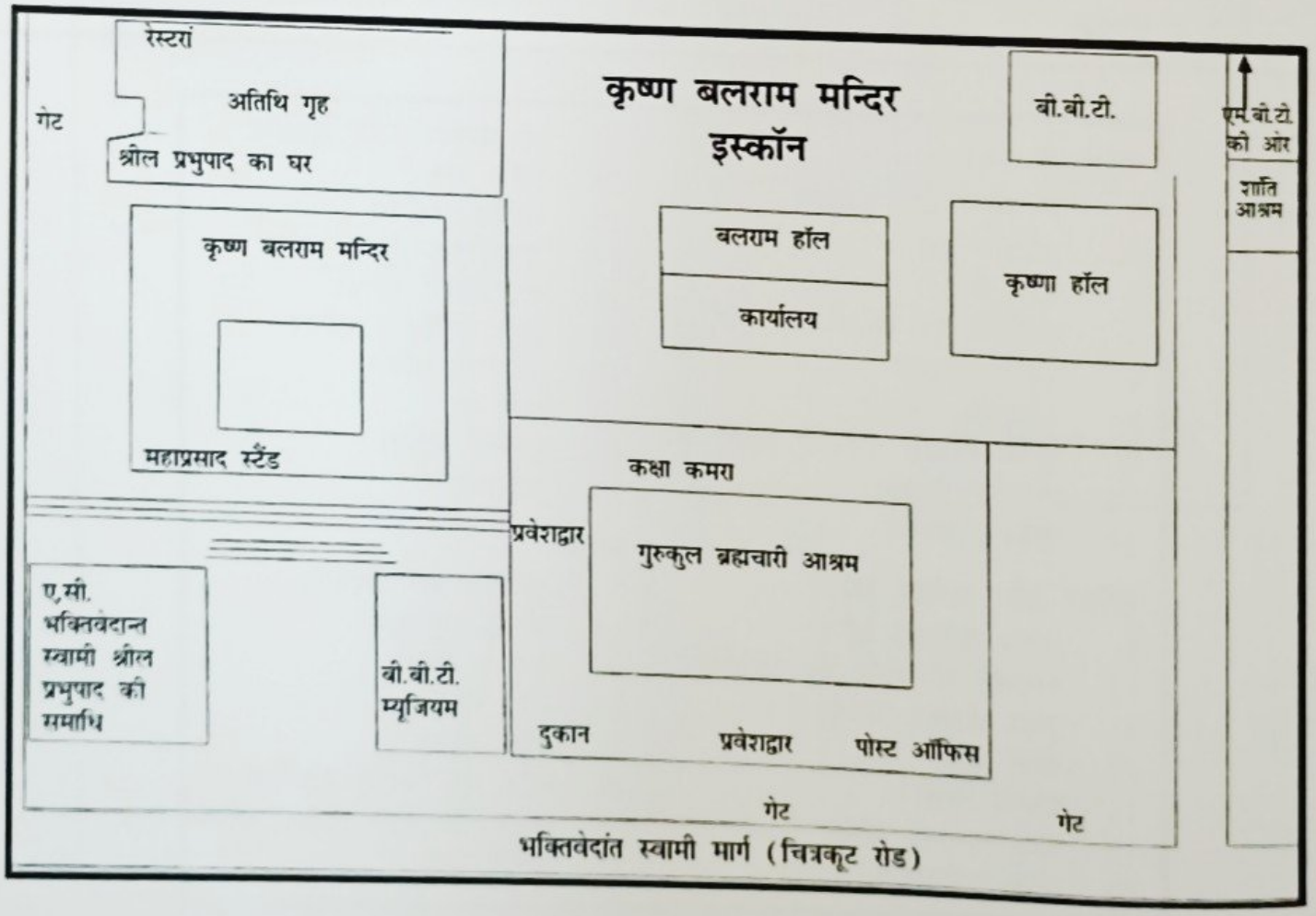
रेस्टरां
अतिथि गृह
गेट
श्रील प्रभुपाद का घर
कृष्ण बलराम मन्दिर इस्कॉन
बी.बी.टी.
एम.बी.टी. की ओर
शांति आश्रम
कृष्ण बलराम मन्दिर
बलराम हॉल
कार्यालय
कृष्णा हॉल
महाप्रसाद स्टैंड
कक्षा कमरा
प्रवेशद्वार
गुरुकुल ब्रह्मचारी आश्रम
ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी श्रील प्रभुपाद की समाधि
बी.बी.टी. म्यूजियम
दुकान
प्रवेशद्वार
पोस्ट ऑफिस
गेट
गेट
भक्तिवेदांत स्वामी मार्ग (चित्रकूट रोड)

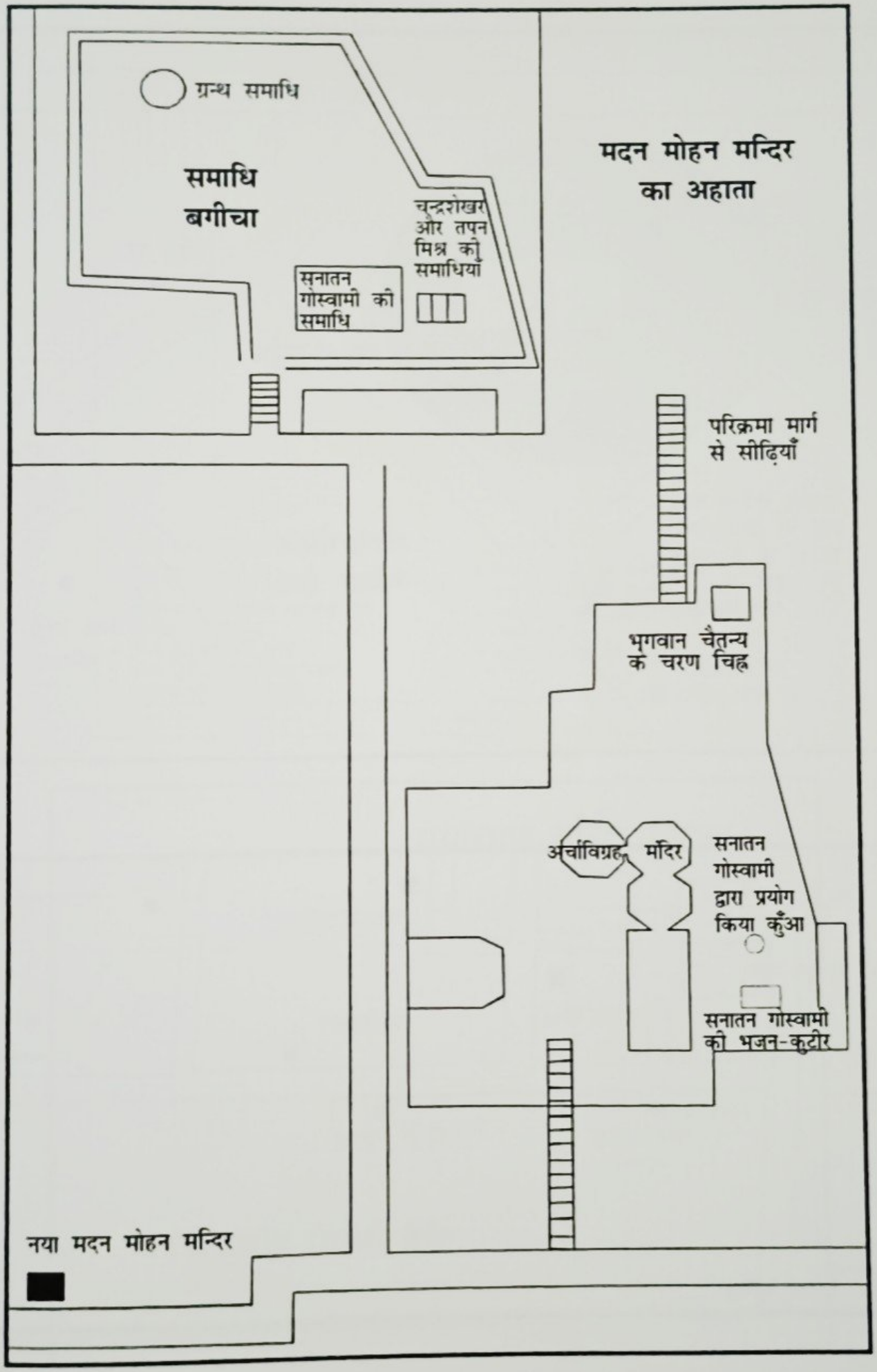
ग्रन्थ समाधि
समाधि बगीचा
चन्द्रशेखर और तपन मिश्र की समाधियाँ
सनातन गोस्वामी की समाधि
मदन मोहन मन्दिर का अहाता
परिक्रमा मार्ग से सीढ़ियाँ
भगवान चैतन्य के चरण चिह्न
अर्चाविग्रह मंदिर
सनातन गोस्वामी द्वारा प्रयोग किया कुँआ
सनातन गोस्वामी की भजन-कुटीर
नया मदन मोहन मन्दिर

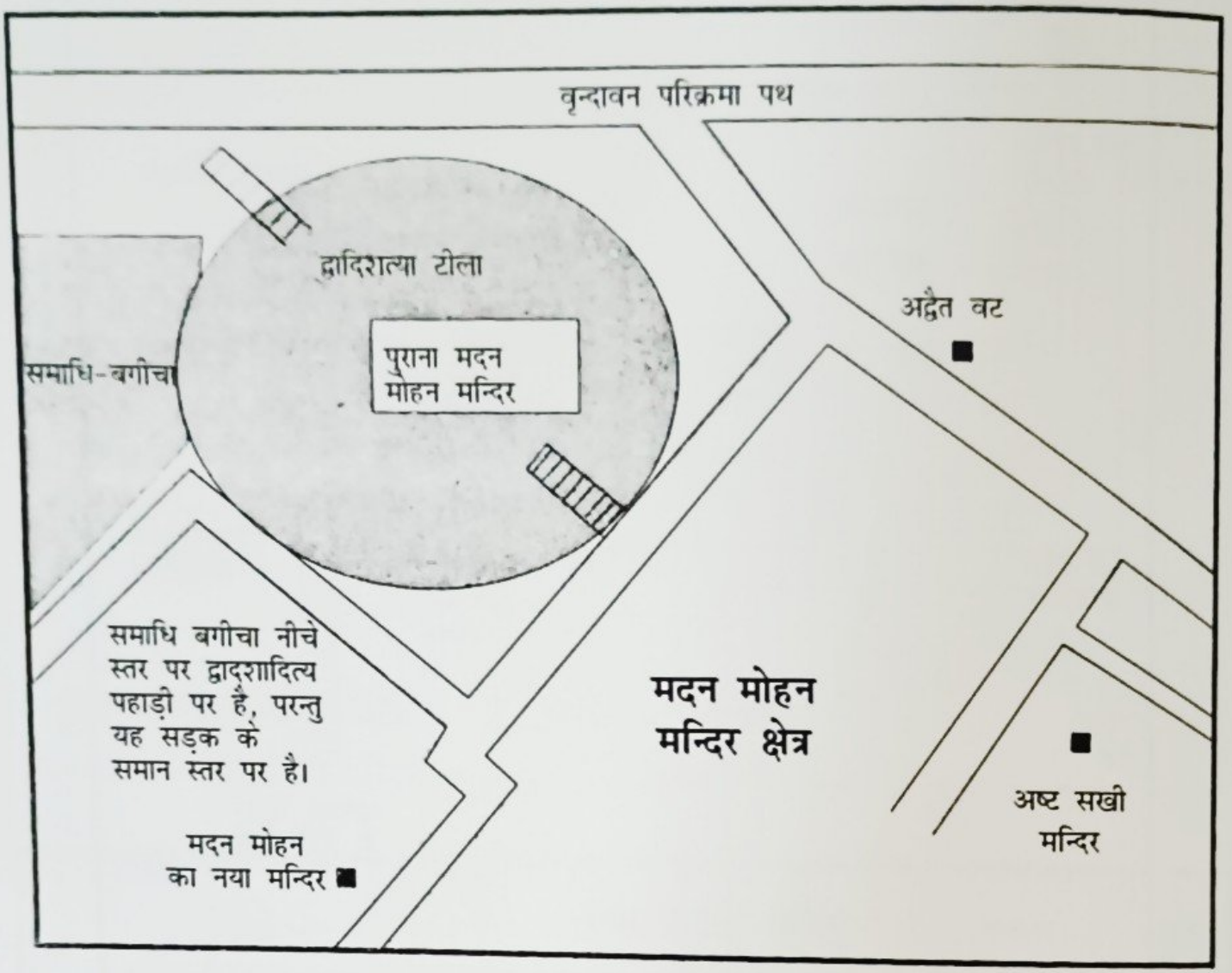
वृन्दावन परिक्रमा पथ
द्वादिशत्या टीला
पुराना मदन मोहन मन्दिर
समाधि-बगीचा
अद्वैत वट
समाधि बगीचा नीचे स्तर पर द्वादशादित्य पहाड़ी पर है, परन्तु यह सड़क के समान स्तर पर है।
मदन मोहन का नया मन्दिर
मदन मोहन मन्दिर क्षेत्र
अष्ट सखी मन्दिर

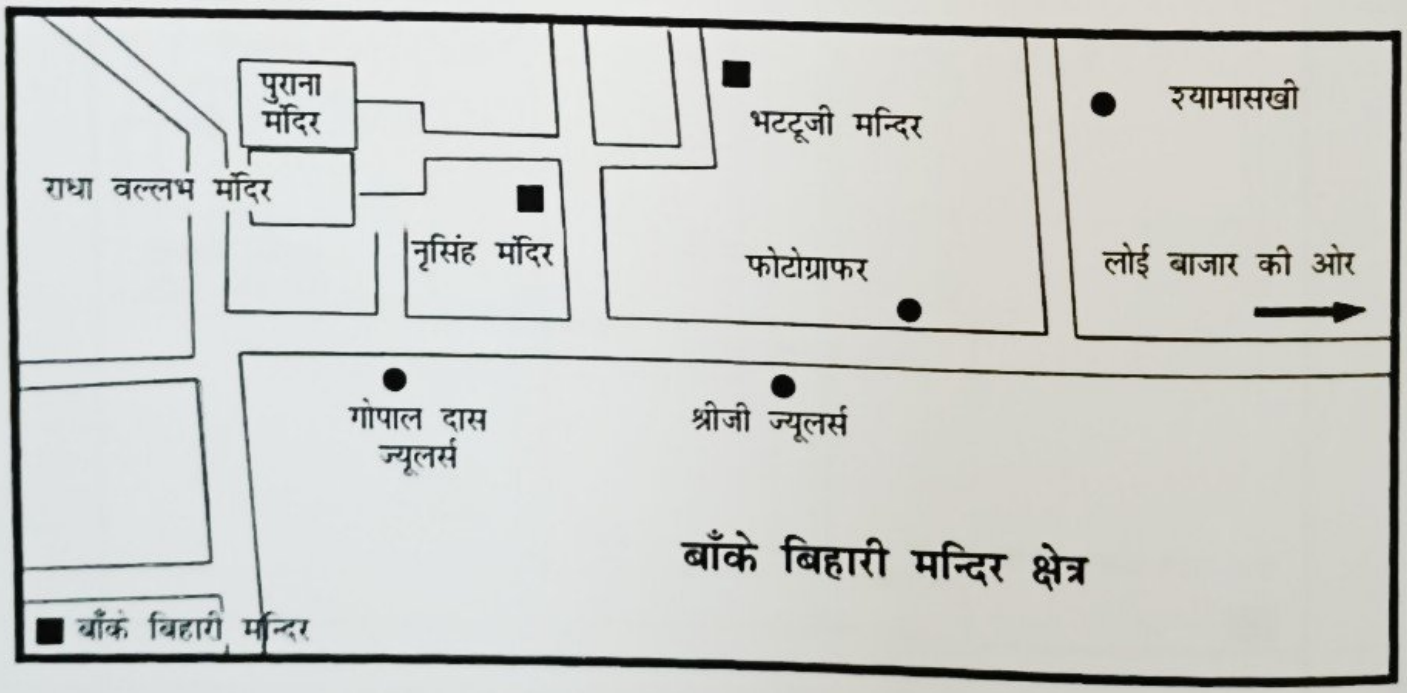
पुराना मंदिर
राधा वल्लभ मंदिर
नृसिंह मंदिर
भटटूजी मन्दिर
फोटोग्राफर
श्यामासखी
लोई बाजार की ओर
गोपाल दास ज्यूलर्स
श्रीजी ज्यूलर्स
बाँके बिहारी मन्दिर क्षेत्र
बाँके बिहारी मन्दिर

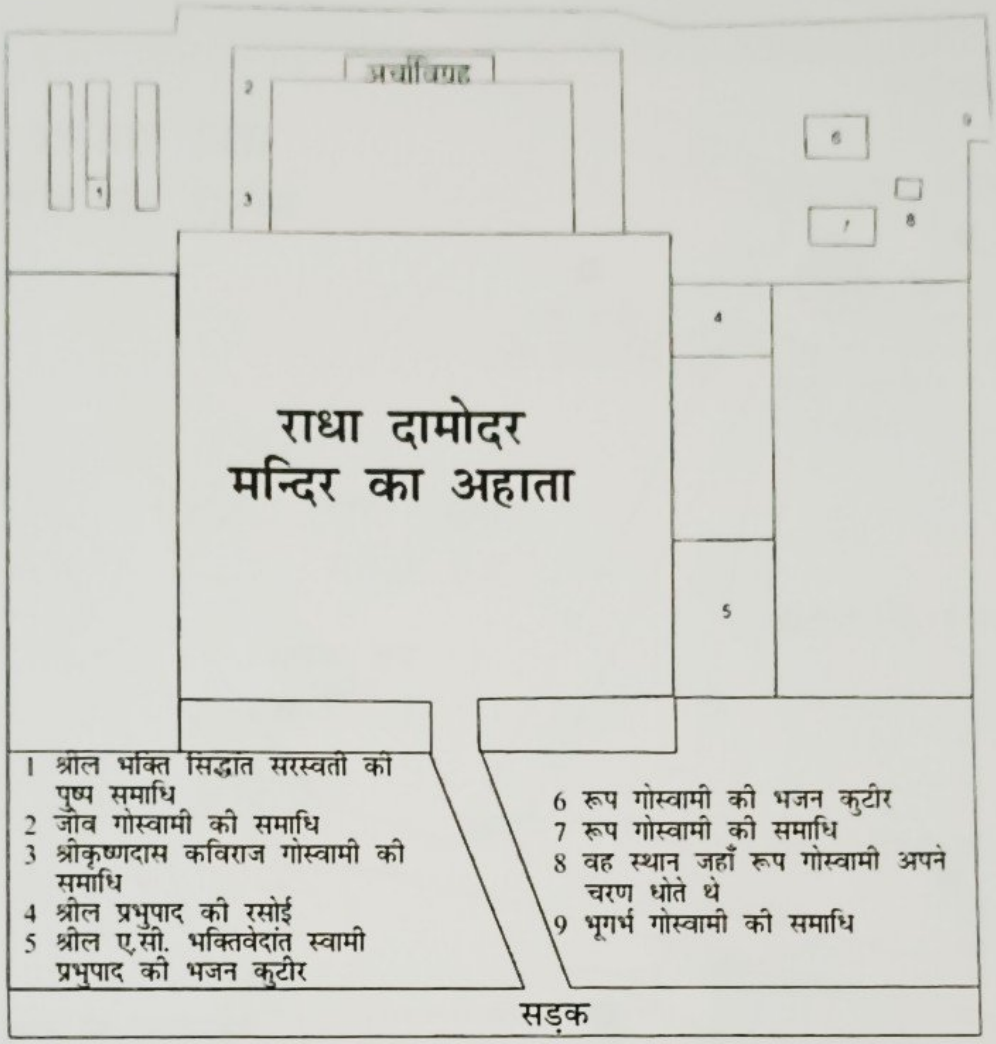
अर्चाविग्रह
राधा दामोदर
मन्दिर का अहाता
1 श्रील भक्ति सिद्धांत सरस्वती की पुष्प समाधि
2 जीव गोस्वामी की समाधि
3 श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी की समाधि
4 श्रील प्रभुपाद की रसोई
5 श्रील ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद की भजन कुटीर
6 रूप गोस्वामी की भजन कुटीर
7 रूप गोस्वामी की समाधि
8 वह स्थान जहाँ रूप गोस्वामी अपने चरण धोते थे
9 भूगर्भ गोस्वामी की समाधि
सड़क

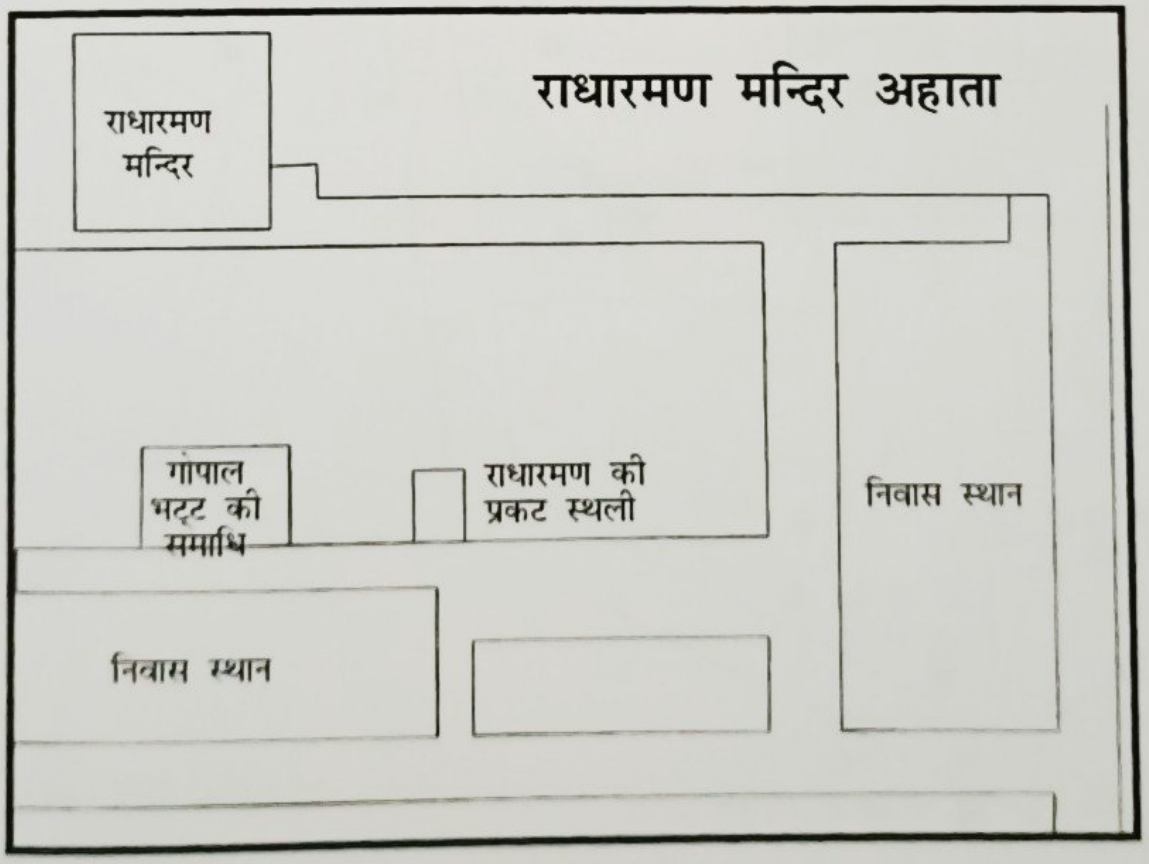
राधारमण मन्दिर अहाता
राधारमण मन्दिर
गोपाल भट्ट की समाधि
राधारमण की प्रकट स्थली
निवास स्थान
निवास स्थान

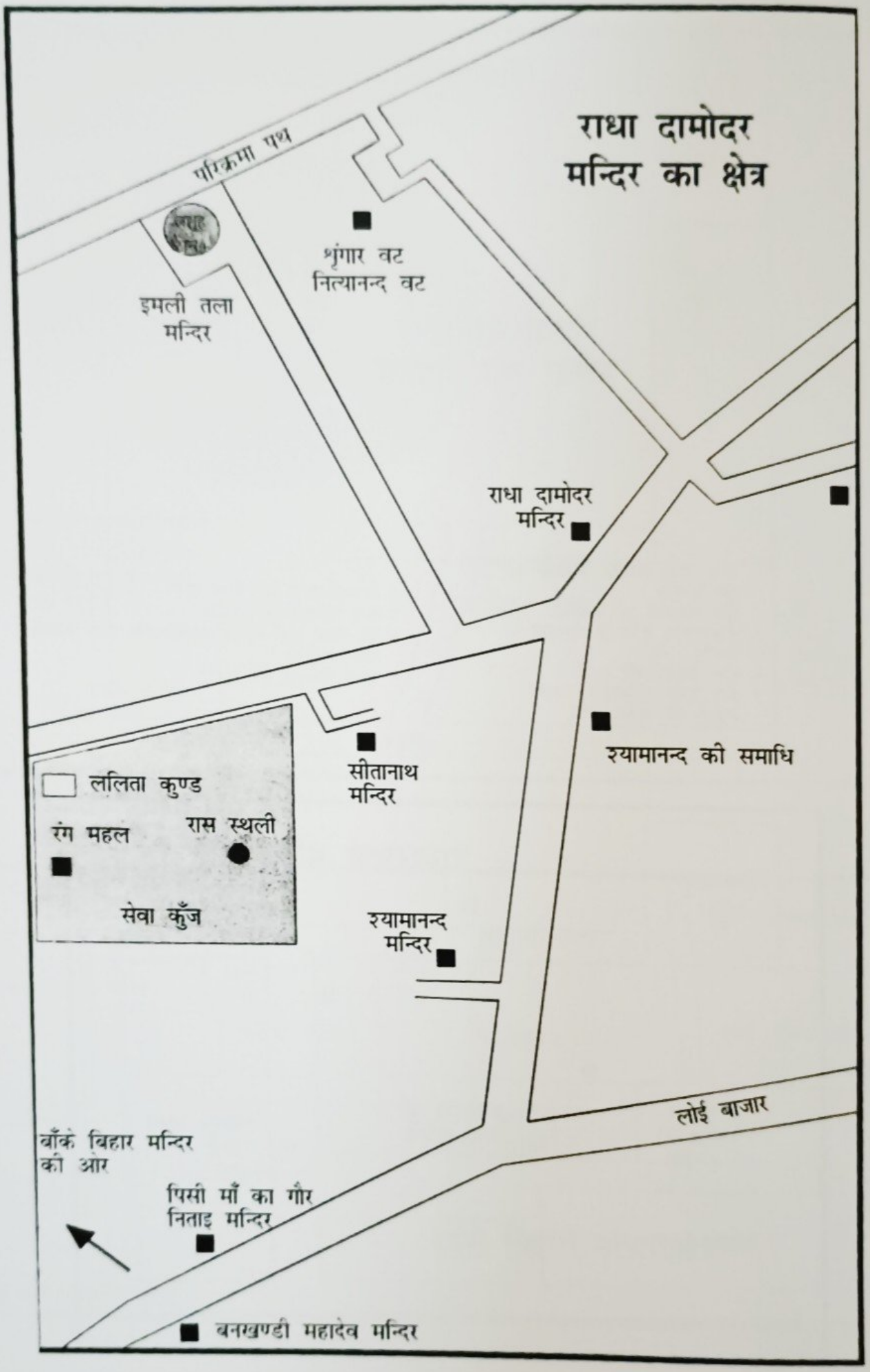
राधा दामोदर
मन्दिर का क्षेत्र
परिक्रमा पथ
शृंगार वट
नित्यानन्द वट
इमली तला
मन्दिर
राधा दामोदर
मन्दिर
श्यामानन्द की समाधि
सीतानाथ
मन्दिर
ललिता कुण्ड
रंग महल
रास स्थली
सेवा कुँज
श्यामानन्द
मन्दिर
लोई बाजार
बाँके बिहार मन्दिर
की ओर
पिसी माँ का गौर
निताइ मन्दिर
बनखण्डी महादेव मन्दिर

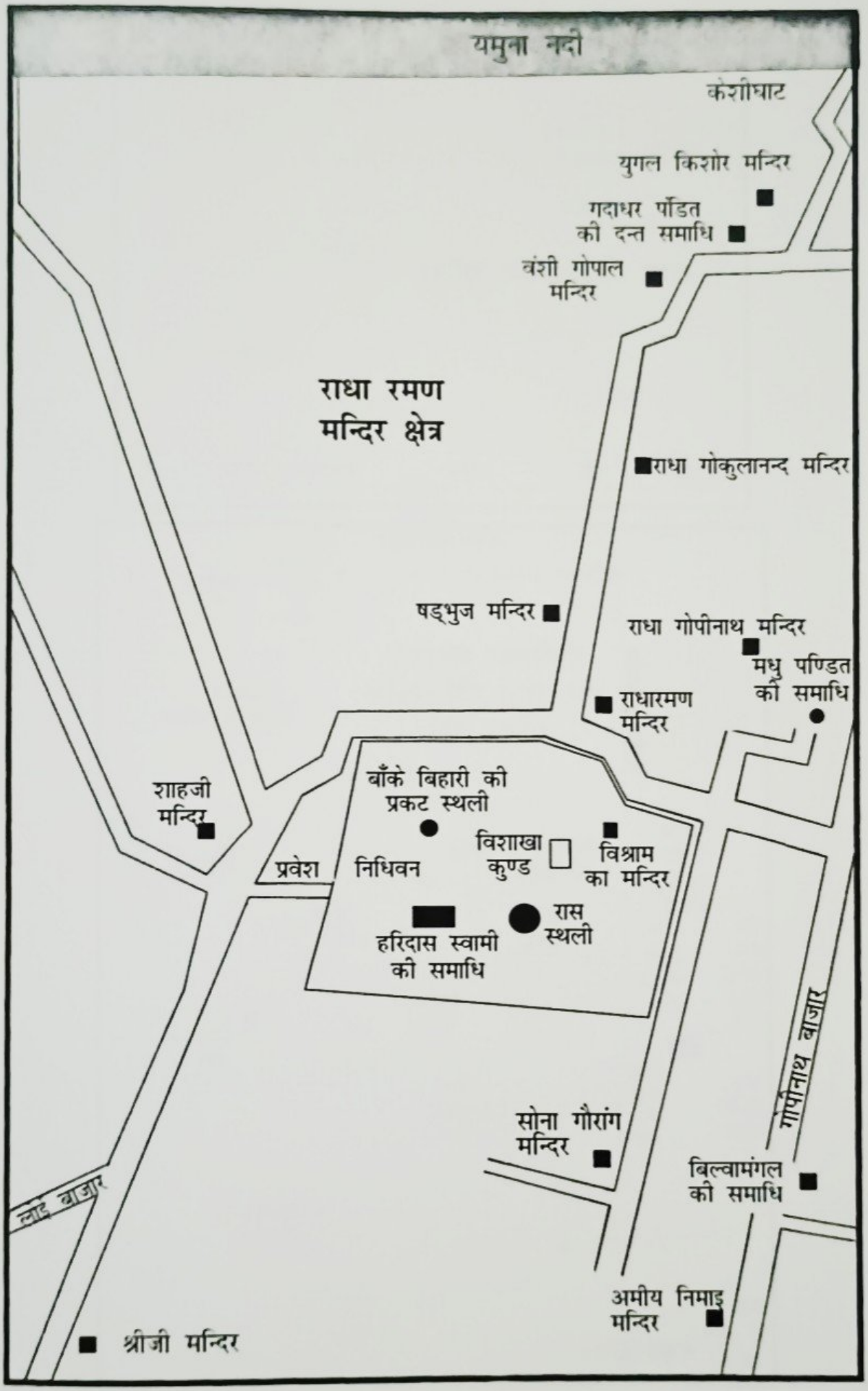
यमुना नदी
केशीघाट
युगल किशोर मन्दिर
गदाधर पंडित
की दन्त समाधि
वंशी गोपाल
मन्दिर
राधा रमण
मन्दिर क्षेत्र
राधा गोकुलानन्द मन्दिर
षड्भुज मन्दिर
राधा गोपीनाथ मन्दिर
मधु पण्डित
की समाधि
राधारमण
मन्दिर
शाहजी
मन्दिर
बाँके बिहारी की
प्रकट स्थली
विशाखा
कुण्ड
विश्राम
का मन्दिर
प्रवेश
निधिवन
रास
स्थली
हरिदास स्वामी
की समाधि
गोपीनाथ बाजार
सोना गौरांग
मन्दिर
बिल्वामंगल
की समाधि
लोई बाजार
अमीय निमाइ
मन्दिर
श्रीजी मन्दिर

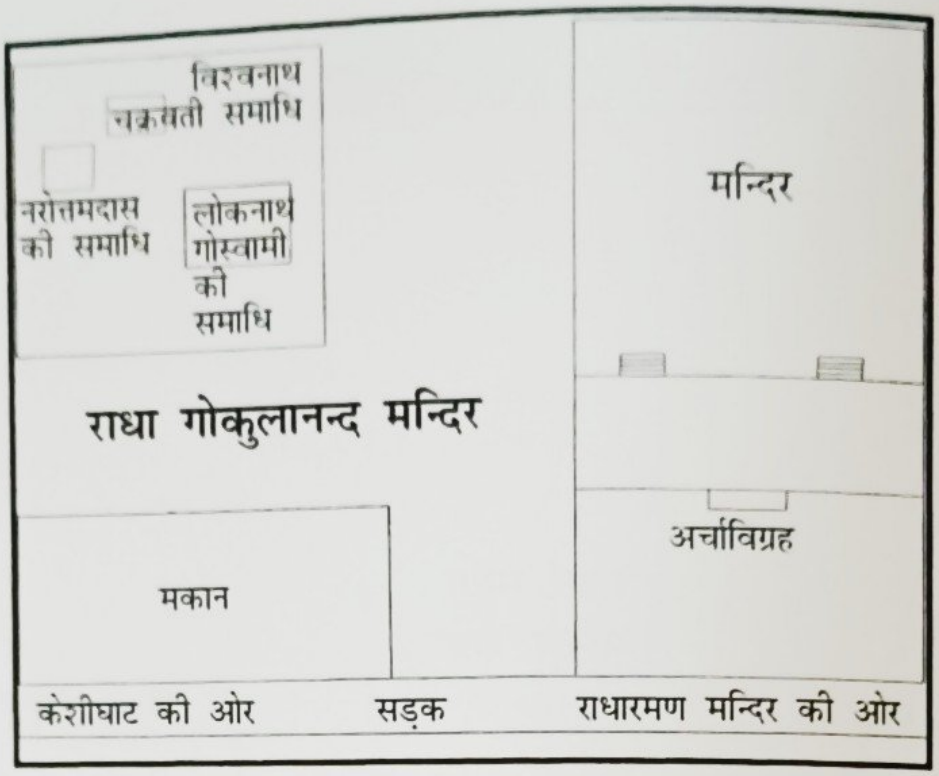
विश्वनाथ चक्रवर्ती समाधि
नरोत्तमदास की समाधि
लोकनाथ गोस्वामी की समाधि
मन्दिर
राधा गोकुलानन्द मन्दिर
अर्चाविग्रह
मकान
केशीघाट की ओर
सड़क
राधारमण मन्दिर की ओर

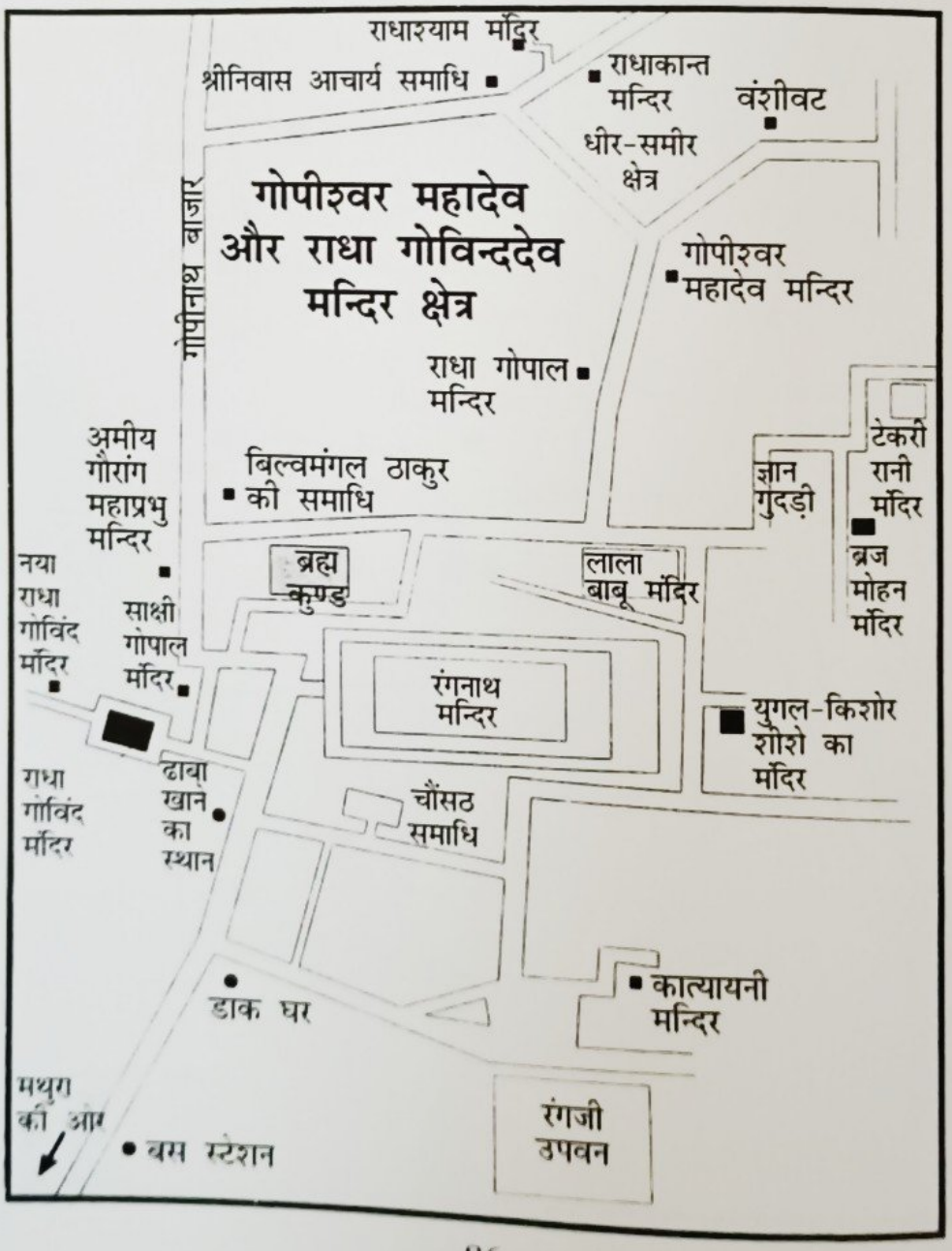
राधाश्याम मंदिर
श्रीनिवास आचार्य समाधि
राधाकान्त मन्दिर
वंशीवट
धीर-समीर क्षेत्र
गोपीश्वर महादेव और राधा गोविन्ददेव मन्दिर क्षेत्र
गोपीनाथ बाजार
गोपीश्वर महादेव मन्दिर
राधा गोपाल मन्दिर
अमीय गौरांग महाप्रभु मन्दिर
बिल्वमंगल ठाकुर की समाधि
ज्ञान गुदड़ी
टेकरी रानी मंदिर
ब्रज मोहन मंदिर
नया राधा गोविंद मंदिर
ब्रह्म कुण्ड
लाला बाबू मंदिर
साक्षी गोपाल मंदिर
रंगनाथ मन्दिर
युगल-किशोर शीशे का मंदिर
राधा गोविंद मंदिर
ढाबा खाने का स्थान
चौंसठ समाधि
डाक घर
कात्यायनी मन्दिर
मथुरा की ओर
बस स्टेशन
रंगजी उपवन

अन्तर्राष्ट्रीय श्रीकृष्णभावनामृत
संघ के संस्थापकाचार्य

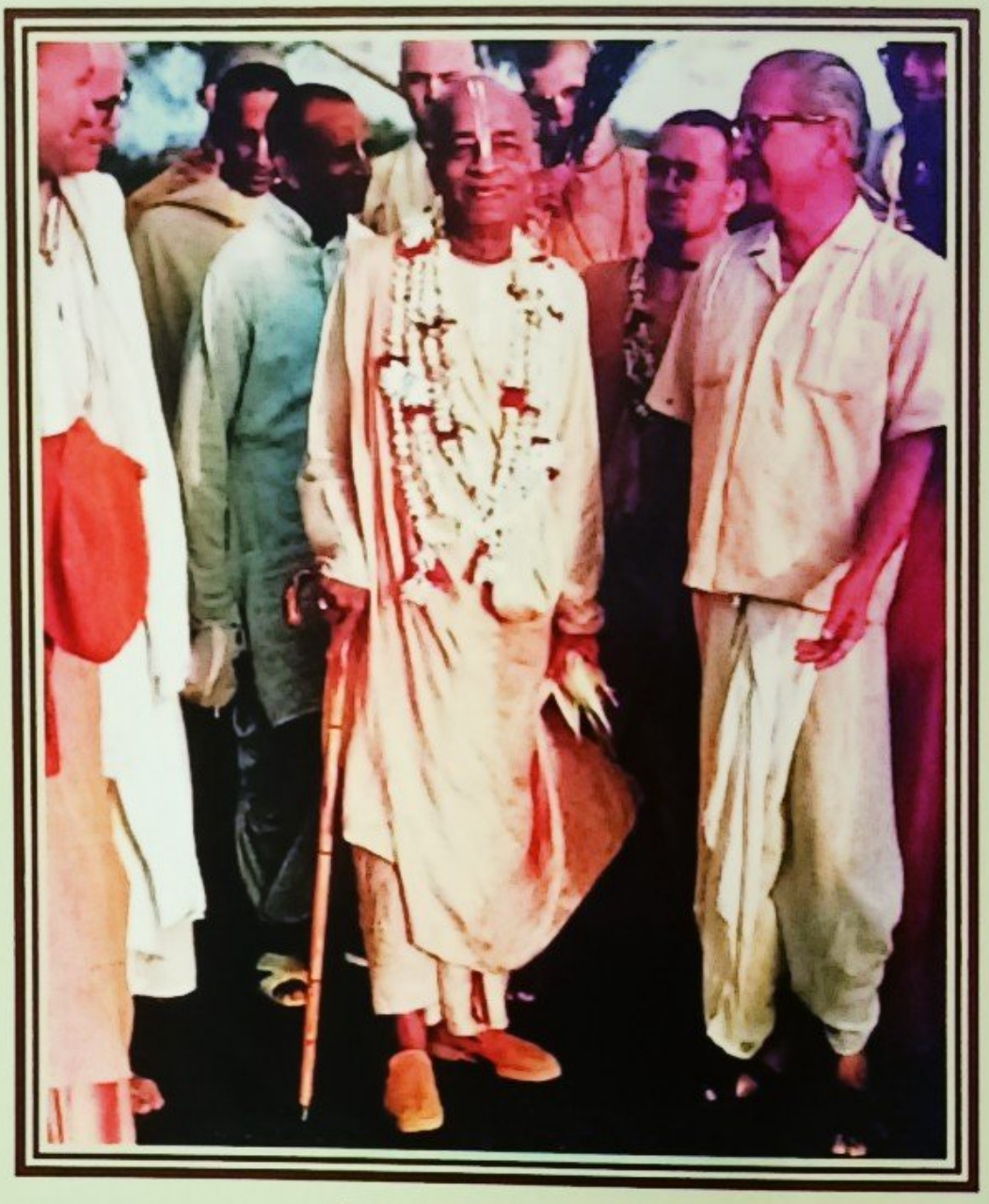

श्रीकृष्णकृपाश्रीमूर्ति
ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद

ISKCON VRINDAVAN
Z7 VRINDAVAN PARIKARMA H
9 7 8 9 3 8 4 4
MRP 100.00

ISBN 978-93-84452-64-3
9 789384 452643